होरी

प्रेम

'गोदान' का नाट्य रूपान्तर

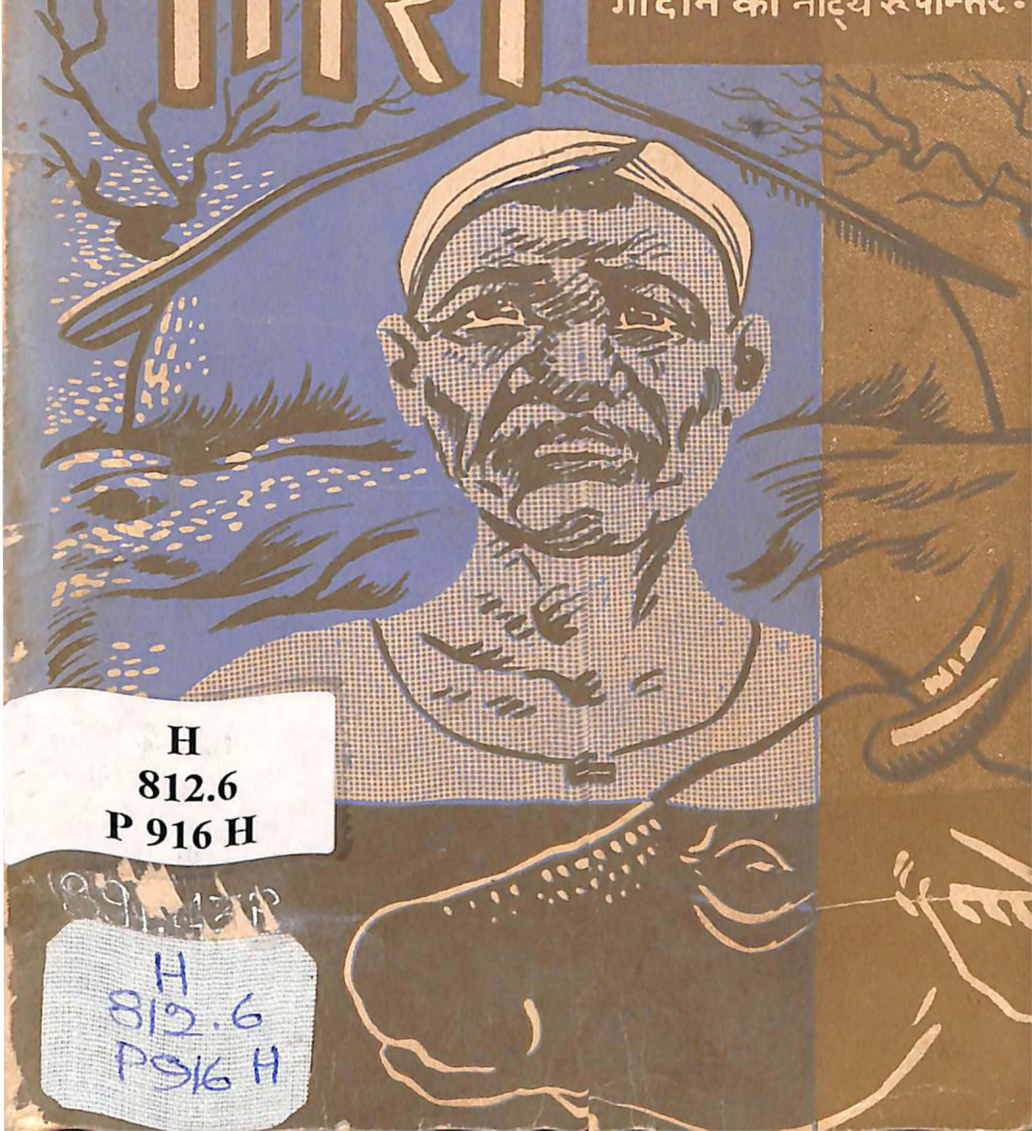

H
812.6
P 916 H

H
812.6
P916 H

प्रेमचंद

★

होरी

['गोदान' का नाट्य-रूपान्तर]

रूपान्तरकार

विष्णु प्रभाकर

हंस प्रकाशन

इ ला हा बा द

CATALOGUED

Library IIAS, Shimla
H 812.6 P 916 H
00039852

39852
21.6.72

H
812.6
P916 H

प्रकाशक : हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
मुद्रक : भार्गव प्रेस, इलाहाबाद
चतुर्थ संस्करण ३१०८, नवम्बर १९६१
सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य : रु० २.००

भूमिका

'होरी' नाटक नहीं है प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास का नाट्य-रूपान्तर है। इसीलिये उसकी सीमाएँ हैं। प्रेमचंद और गोदान के बारे में कुछ कहने का न यह समय है और न उतना स्थान ही है। इतना कहना पर्याप्त होगा कि गोदान जन-जीवन के साहित्यकार प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें उन्होंने अभावग्रस्त भारतीय किसान की जीवन-गाथा का चित्र उपस्थित किया है। देहात की वास्तविक दशा का खाका खींचा है। इसमें हमारे ग्रामीण-जीवन की आशा-निराशा, सरलता-कुटिलता, प्रेम-घृणा, गुण-दोष सभी का मनोहारी चित्रण हुआ है। उपन्यास में एक दूसरी धारा भी है। वह है नगर सभ्यता की धारा जो ग्रामीण-जीवन के विरोध में उभरी है। प्रस्तुत रूपान्तर में उसे बिल्कुल छोड़ देना पड़ा है। उसका कारण नाटक की सीमाएँ हैं। उपन्यास पढ़ा जाता है लेकिन नाटक खेला जाता है। यूँ पढ़ने को भी नाटक लिखे जाते हैं और हिन्दी के अधिकांश नाटक अभी ऐसे ही हैं पर नाटक दृश्य या श्रव्य काव्य है। उसकी कथा रंगमंच के लिये है और रंगमंच पर ऐसी अनेक बातें हैं जो नहीं होनी चाहिये या कहें नहीं हो सकतीं। इसके अतिरिक्त हिन्दी रंगमंच अभी शैशवावस्था में है। शिशु का योगदान कम नहीं है पर उसके सामर्थ्य की एक सीमा है। इन्हीं सब कारणों से गोदान की नगर सभ्यता 'होरी' में बिल्कुल ही नहीं आ पाई है। उसका न आना अखरा भी नहीं है क्योंकि अन्ततः प्रेमचंद का उद्देश्य होरी की सृष्टि करना ही था। 'होरी' में उनका वही अमर पात्र अपनी सम्पूर्ण दुर्बलताओं और विशेषताओं के साथ उपस्थित है। वह भारतीय किसान का प्रतिरूप है। वही भारतीय किसान है।

हमें विश्वास है कि स्वयं प्रेमचंद इस उपन्यास का रूपान्तर करते तो उसका रूप कुछ और ही होता। शायद होरी जीवित भी रहता। शरत बाबू ने अपने कई उपन्यासों का नाट्य-रूपान्तर करते समय इतनी स्वतंत्रता ली है। प्रेमचंद जी जीवित होते तो हम भी कुछ प्रयत्न करते परन्तु उनके पीछे उनकी कृति के साथ किसी भी तरह की स्वतंत्रता लेना उचित नहीं था। ऐसा किया भी नहीं है। उससे हमारा काम कुछ कठिन तो हुआ है पर हमें सन्तोष है कि हमने प्रेमचंद जी के होरी को प्रेमचंद जी का ही रहने दिया है, अपना नहीं बनाया है।

'गोदान' भारतीय किसान की जीवन-गाथा है। उसमें अनेक अंक हैं, अनगिनत दृश्य हैं परन्तु 'होरी' में उन्हें सिमटना पड़ा है। रंगमंच पर न उतना समय है और न उतनी स्वतंत्रता। आजकल तो दर्शक यही चाहते हैं कि एक बार परदा उठकर तभी गिरे जब नाटक का अन्त हो। बार-बार यवनिका-पात से रस भंग होता है। और दर्शक ही क्यों नाटक के प्रस्तुतकर्त्ता भी यही चाहते हैं। एक सेट हो और एक-दो दृश्य हों। जीवन के कुछ मार्मिक क्षणों की कहानी हो। आज के एटम-युग में क्षणों का मूल्य युगों में चुकाया जाता है। 'होरी' में यह सम्भव नहीं हो सका है। फिर भी उसके जीवन दर्शनों को अक्षुण्ण रखते हुए उसे जितना समेटा जा सकता था समेटा है। यवनिका-पात की मुसीबत से बचने के लिए प्रकाश और अन्धकार के सहारे दृश्य परिवर्तन किये हैं। सेट की समस्या को सुलझाने का भी पूरा प्रयत्न किया है। हम मानते हैं कि रंगमंच की दृष्टि से प्रस्तुत रूप आदर्श नहीं बन पाया है। इसलिये निदेशकों को पूरी स्वतंत्रता है कि कथा के रस और दर्शन दोनों को अक्षुण्ण रखते हुए चाहें तो कुछ दृश्यों को छोड़ सकते हैं। रंगमंच की जटिलताएं दिन प्रति दिन कम होती जा रही हैं और हमें विश्वास है कि किसी दिन बड़ी सरलता से पूरे 'गोदान' को प्रस्तुत किया जा सकेगा। घूमनेवाले स्टेज पर तो ऐसा किया ही जा सकता है। लेकिन

यह तो कल की बात है । आज की दृष्टि से 'होरी' का जो रूप सम्भव हो सकता था वही प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है ।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इन सीमाओं से एक लाभ भी हुआ है, दृष्टि होरी पर केन्द्रित हो गई है । नगर की घटनाओं से उसका सीधा सम्बन्ध भी नहीं था । रूपान्तर में गोबर के नागरिक जीवन को भी अलविदा कहना पड़ा है । प्रेमचंद ने जिन अमर पात्रों की सृष्टि की है उनमें होरी बहुत ऊंचा है । इस रूपान्तर में वह अपनी पूरी ऊंचाई के साथ आ गया है । यह कम बात नहीं है । यदि ऐसा होने में कुछ कमी रह गयी है तो वह रूपान्तरकार की कमी है ।

रूपान्तर करने में जो कठिनाइयां आयीं उनमें एक बड़ी कठिनाई थी उपन्यास का अन्त । उपन्यास में होरी की मृत्यु से पहले कई ऐसे घटनाएं घट जाती है जो आसानी से किसी भी नाटक की चरम सीमा बन सकती हैं जैसे गोबर का सुधर जाना और हीरा का लौट आना । इसके बाद होरी की मृत्यु अपना बहुत कुछ प्रभाव खो बैठती है । उपन्यास में लेखक अपनी ओर से बहुत कुछ कहकर उस प्रभाव को बनाये रखता है परन्तु नाटक में तो लेखक को कुछ कहने का अधिकार है ही नहीं और यदि रूपान्तरकार पात्रों से कुछ कहलवाता है तो वह उपन्यास से दूर हट जाता है । हमने इस बात से बचने की कोशिश की है । यह रूपान्तर शीघ्र ही रंगमंच पर आ रहा है । उस समय नाट्य-कला की दृष्टि से इसमें जो परिवर्तन अनिवार्य होंगे वे इसके दूसरे संस्करण में कर दिये जायंगे । क्योंकि हम चाहते हैं कि यह रूपान्तर रंगमंच के अधिक से अधिक उपयुक्त हो सके । हिन्दी में अभी नाटकों की बहुत कमी है । 'होरी' उस कमी को दूर करने का एक प्रयत्न है । वह प्रयत्न सफल हुआ तो हमें निस्सन्देह प्रसन्नता होगी ।

'होरी' की भाषा वही है जो गोदान की है । वार्तालाप भी वैसे के वैसे ले लिये गये हैं । नाटकीय दृष्टि से जो कम-से-कम परिवर्तन अनिवार्य थे वही किये गये हैं । नये वार्तालाप बनाते समय भी यथाशक्ति प्रेमचंद

की भाषा का ही प्रयोग किया गया है। पात्रों का चरित्र-चित्रण तो वैसा होना ही था। हां, लिये वे ही पात्र हैं जो होरी के चरित्र को उभारते हैं या कथा के प्रवाह को अक्षुण्ण रखने के लिये अनिवार्य हैं। उदाहरण के लिये सिलिया के इस रूपान्तर में आने पर कई व्यक्तियों ने आपत्ति की है। अपने आप में सिलिया महत्वपूर्ण है। वह गांव के सामाजिक जीवन का एक अति महत्वपूर्ण अंग भी है पर 'होरी' के लिये वह अनिवार्य नहीं है। होरी की उदारता पहिले ही सिद्ध हो चुकी है। इस तर्क में बल है लेकिन हमने सिलिया को रखा है क्योंकि उसके अभाव में तीसरे अंक की कथा कुछ नीरस लगती थी। फिर भी जो निर्देशक रंग-मंच पर उसकी अनिवार्यता न समझें, वे उसे छोड़ सकते हैं। इसी प्रकार होरी की दो बेटियों के विवाह में से भी सोना का विवाह छोड़ा जा सकता है। बहुत से पात्र छोड़े जा सकते हैं पर धनिया को नहीं छोड़ा जा सकता। 'होरी' की सबसे सशक्त प्राणवान और स्वाभाविक पात्रः यही है।

अन्त में दो बातें सेट के बारे में भी कहते चलें। हमने इस रूपान्तर में चलती दीवार का सहारा लिया है परन्तु इन शब्दों को लिखते समय एक और रूप हमें सूझा है। मंच पर यथाशक्ति ग्रामीण वातावरण की सृष्टि करने के बाद दाहिनी ओर कोने में होरी के घर का द्वार बनाया जाय और उस द्वार के आगे एक उठा हुआ चबूतरा हो जिस पर सारी कथा घटित हो। इतनी स्वतंत्रता तो हमने ली ही है ' कि बहुत-सी बातें जो होरी के घर से दूर होती हैं उन्हें हम घर के पास ले आये हैं। जैसे 'गोदान' में शहर से लौट कर गोबर गांव वालों से मिलने जाता है पर 'होरी' में वे सब गोबर से मिलने घर आते हैं।

तीसरे अंक में जहां-जहां घर से दूर रहना अनिवार्य है, वहां-वहां छोटा परदा डाल कर काम लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त निर्देशक नये-नये प्रयोग करने को स्वतंत्र हैं ही। अगर कथा में पकड़ने की शक्ति है तो दर्शक मंच की खामियों को नजरअन्दाज कर सकते हैं।

यह रूपान्तर करने के बाद हमने इसे दिल्ली में कई रंगमंच के जानकारों को सुनाया है। एक बार तो पूरी बैठक में पढ़ा है। उनके सुझावों से हमें बहुत लाभ पहुँचा है। उनके हम कृतज्ञ हैं, विशेषकर 'देहली आर्ट थियेटर' के। वे लोग तो अब भी इस पर काम कर रहे हैं। उनके नये सुझावों का लाभ हम अन्य संस्करण में लेंगे। पाठकों के सुझावों का भी हम स्वागत करेंगे।

—विष्णु प्रभाकर

होरी

अंक एक

पहला दृश्य

[रंगमंच पर पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँव का दृश्य। इधर-उधर घरों के द्वार, बीच में एक मार्ग। दायें-बायें भी मार्ग रहे। बायीं ओर एक कच्चा घर है जो होरी का है। बाहरी दीवार चलती-फिरती है। आवश्यकता पड़ने पर उसे हटा कर अन्दर का दृश्य दिखाया जा सकता है। इस दृश्य में होरी के घर का द्वार दिखाई देता है। सामने मार्ग जा रहा है। पर्दा उठने पर होरी और धनिया, बातें करते अपने घर से बाहर आते हैं। धनिया वैसे तो छत्तीसवें में है पर देखने में बुढ़िया लगती है। बाल पक गये हैं। चेहरे पर झुर्रियां पड़ गयी हैं। देह ढल गयी है। सुन्दर गेहुँआ रंग साँवला पड़ने लगा है। आँखों से भी कम सूझता है। होरी की उमर भी चालीस से कम है पर देखने में वह भी बूढ़ा लगता है। गहरा सांवला रंग, पिचके गाल, सूखा बदन, सिर पर पगड़ी लपेटे, कन्धे पर लाठी रखे बोलता आता है।]

होरी—तो क्या तू समझती है कि मैं बूढ़ा हो गया! अभी तो चालीस भी नहीं हुए। मर्द साठे पर पाठे होते हैं।

धनिया—जाकर सीसे में मुँह देखो। तुम-जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते। दूध-घी अंजन लगाने तक को तो मिलता नहीं, पाठे होंगे! तुम्हारी दशा देख-देखकर तो मैं और सूखी जाती हूँ कि भगवान, यह बुढ़ापा कैसे कटेगा? किसके द्वार भीख माँगेंगे?

होरी—(**सहसा शून्य में ताक कर**) नहीं धनिया, सूखने की जरूरत नहीं। साठे तक पहुँचने की नौबत ही न आने पावेगी। इसके पहले ही चल देंगे।

धनिया—(**तिरस्कार से**) अच्छा रहने दो, मत असुभ मुँह से निकालो ! तुमसे तो कोई अच्छी बात भी कहे तो लगते हो कोसने ।

[**होरी मुस्कराकर चल देता है । धनिया कई क्षण उसे देखती खड़ी रहती है, ऐसे जैसे उसके अन्तःकरण से आशीर्वाद का व्यूह-सा निकल कर होरी को अन्दर छिपाये लेता हो । होरी रंगमंच से बाहर होने से पहले मुड़ कर देखता है, मुस्कराता है, फिर बाहर हो जाता है । धनिया भी निश्वास लेकर अन्दर जाती है । घर की दीवार पीछे हट जाती है और मंच पर बस मार्ग-ही-मार्ग रह जाता है। होरी दूसरी ओर से मंच पर प्रवेश करता है । पीछे मुड़-मुड़कर देखता है और बोलता है !**]

होरी—कैसी अच्छी ऊख हुई है । भगवान कहीं गौं से बरखा कर दे और डांड़ी भी सुभीते से रहे तो एक गाय जरूर लूंगा । और पछांई लूंगा । देसी तो न दूध दे, न उसके बछवे ही किसी काम के । कुछ नहीं तो चार पांच सेर दूध होगा । गोबर दूध के लिये तरस-तरस कर रह जाता है । साल भर दूध पी ले तो देखने लायक हो जाय । फिर गऊ से ही तो द्वार की शोभा है (**गायों के रँभाने व घंटी बजने का स्वर सुनायी देता है । होरी चौंक कर उधर देखता है**) गाय....अहा भोला आ रहा है । वह....वह गाय कैसी अच्छी है । अगर भोला यह गाय मुझे दे दे तो क्या कहने !

[**भोला का मंच पर प्रवेश । पचास वर्ष का खंखड़ है । होरी उसके पास जाता है ।**]

होरी—राम-राम भोला भाई । कहो, क्या रंग-ढंग है ? सुना है, अब की मेले से नयी गायें लाये हो ।

भोला—(**रुखाई से**) हाँ, दो बछिये और दो गायें लाया हूँ । पहले वाली गाय सब सूख गई थीं । बन्धी पर दूध न पहुँचे तो गुजर कैसे हो ?

होरी—दुधार तो मालूम होती है । कितने में ली ?

भोला—(शान से) अब की बाजार कुछ तेज था महतो, इसके अस्सी रुपये देने पड़े। आँख निकल गई....

होरी—(चकित होकर) बड़ा भारी कलेजा है तुम लोगों का भाई, लेकिन फिर लाये भी तो वह माल कि....

भोला—(एकदम) राय साहब इसके सौ रुपये देते थे लेकिन हमने न दी। भगवान ने चाहा तो सौ रुपये इसी ब्यान में पीट लूंगा ॥

होरी—इसमें क्या सन्देह है भाई। मालिक क्या खाके लेगे। नजराने में मिल जाय तो भले ही ले लें। यह तुम्हीं लोगों का गुर्दा है कि अंजुली भर रुपये तकदीर के भरोसे गिन देते हो। धन्य है तुम्हारा जीवन कि गउओं की इतनी सेवा करते हो। हमें तो गाय का गोबर भी मयस्सर नहीं। गिरस्त के घर में एक गाय भी न हो तो कितनी लज्जा की बात है।

भोला—कहते तो ठीक हो महतो।

होरी—घरवाली बार-बार कहती है, भोला भैया से क्यों नहीं कहते। तुम्हारे सुभाव से बड़ी परसन रहती है। कहती है, ऐसा मर्द ही नहीं देखा कि जब बात करेंगे आँख नीची करके, कभी सिर नहीं उठाते।

भोला—भला आदमी वही है जो दूसरों की बहू-बेटी को अपनी बहू-बेटी समझे। जो दुष्ट किसी मेहरिया की ओर ताके उसे गोली मार देनी चाहिए।

होरी—यह तुमने लाख रुपये की बात कह दी भाई।

भोला—जिस तरह मर्द के मर जाने से औरत अनाथ हो जाती है उसी तरह औरत के मर जाने से मर्द के भी हाथ-पाँव कट जाते हैं। मेरा तो घर उजड़ गया महतो, कोई एक लोटा पानी भी देने वाला नहीं।

होरी—हाँ दादा, पुरानी मसल झूठी थोड़ी है। बिन घरनी घर भूत का डेरा। कहीं सगाई नहीं ठीक कर लेते ?

भोला—ताक में हूँ महतो, पर कोई जल्दी फँसता नहीं। सौ-पचास....

होरी—(**एकदम**) अब मैं फिराक में रहूँगा। भगवान चाहेंगे तो जल्दी घर बस जायगा।

भोला—(**गुदगुदी**) बस यही समझ लो कि उबर जाऊँगा भैया। घर में खाने को भगवान का दिया बहुत है।

होरी—मेरी ससुराल में एक मेहरिया है। तीन-चार साल हुए उसका आदमी उसे छोड़ कर कलकत्ते चला गया। बेचारी पिसाई करके गुजर कर रही है। बाल-बच्चा भी कोई नहीं है। देखने-सुनने में भी अच्छी है। बस लच्छमी समझ लो।

भोला—अब तो तुम्हारा आसरा है महतो। छुट्टी हो तो चलो एक दिन देख आयें।

होरी—ना अभी नहीं। मैं ठीक करके तुमसे कहूँगा। बहुत उतावली करने से भी काम बिगड़ जाता है।

भोला—जैसी तुम्हारी इच्छा। उतावली काहे की। हाँ, इस गाय पर मन ललचाया हो तो ले लो।

होरी—ना, यह गाय मेरे मान की नहीं है दादा। मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता।

भोला—तुम तो ऐसी बातें करते हो जैसे हम तुम दो हों। तुम गाय ले जाओ, दाम जो चाहे देना। अस्सी रुपये में ली थी, तुम अस्सी रुपये ही दे देना, जाओ।

होरी—लेकिन मेरे पास नगद नहीं है दादा, समझ लो।

भोला—तो तुमसे नगद माँगता कौन है? आओ, ले जाओ (**बाहर की ओर बढ़ता है**) तुम भी याद करोगे। ब्याते ही छः सेर दूध ले लेना। मालिक नब्बे रुपये देते थे पर उनके यहाँ गउओं की क्या

कदर तुम्हारे घर आराम से रहेगी। उसकी सेवा करोगे, प्यार करोगे, चुमकारोगे; गऊ हमें आसीरवाद देगी।

होरी—जरूर देगी, दादा।

भोला—(**ठिठककर**) तुमसे क्या कहूँ, भइया। घर में चंगुल-भर भी भूसा नहीं रहा। इतने जानवरों को क्या खिलाऊँ, यही चिन्ता मारे डालती है।

होरी—तुमने हमसे पहले क्यों न कहा? हमने एक गाड़ी भूसा बेच दिया।

भोला—(**माथा ठोंककर**) इसलिये नहीं कहा भैया कि सबसे अपना दुख क्यों रोऊँ। करता कोई नहीं, हँसते सब हैं।....हो सके, तो दस-बीस रुपया भूसे के लिए दे दो।

होरी—(**मुड़कर मंच के बीच आ जाता है**) रुपये तो दादा मेरे पास नहीं है। हाँ, थोड़ा-सा भूसा बचा है वह तुम्हें दे दूँगा। चल कर उठवा लो, भूसे के लिए तुम गाय बेचोगे और मैं लूँगा! मेरे हाथ न कट जायँगे!

भोला—(**आर्द्र कंठ से**) तुम्हारे बैल भूखे न मरेंगे?

होरी—नहीं दादा, अब की भूसा अच्छा हो गया था।

भोला—मैंने तुमसे नाहक भूसे की चर्चा की।

होरी—तुम न कहते और पीछे से मुझे मालूम होता, तो मुझे बड़ा रंज होता कि तुमने मुझे इतना गैर समझ लिया....

भोला—(**बाहर को जाते हुए**) मुदा यह गाय तो लेते जाओ।

होरी—(**दूसरी तरफ बढ़ता है**) अभी नहीं दादा, फिर ले लूँगा।

भोला—तो भूसे का दाम दूध में कटवा लेना।

होरी—(**ठिठक कर दुखी स्वर में**) दाम-कौड़ी की इसमें कौन-सी बात है, दादा! मैं एक-दो जून तुम्हारे घर खा लूँ तो तुम मुझसे दाम माँगोगे!

भोला—सो तो ठीक है लेकिन तुम्हारे बैल भूखों मरेंगे कि नहीं ?

होरी—भगवान कोई-न-कोई सबील निकालेंगे ही । असाढ़ सिर पर है । कड़वी बो लूँगा ।

भोला—मगर यह गाय तुम्हारी हो गई । जिस दिन इच्छा हो आकर ले जाना ।

होरी—किसी भाई का लिलाम पर चढ़ा हुआ बैल लेने में जो पाप है वही इस समय तुम्हारी गाय लेने में है ।

भोला—(गद्गद्) तो किसी को भेज दूँ भूसे के लिए ?

होरी—अभी मैं रायसाहब की ड्योढ़ी पर जा रहा हूँ । वहाँ से घड़ी भर में लौटूँगा, तभी किसी को भेजना ।

भोला—तुमने मुझे आज उबार लिया होरी भाई । मुझे अब मालूम हुआ कि मेरा भी कोई हितू है (**जाता है और ठिठकता है । जोर से**) उस बात को भूल न जाना ।

[होरी जाते-जाते उसे देखता है । हाथ से आश्वासन देता है । भोला जाता है । होरी ठिठक कर उसे देखता है । फिर मंच के बीच में आकर लल-चाई निगाहों से उसके जाने की दिशा में देखता है । फिर बोल उठता है ।]

होरी—कैसे सिर हिलाती, मस्तानी, मंद गति से झूमती चली जाती है । जैसे बाँदियों के बीच में कोई रानी हो । कैसा शुभ होगा वह दिन, जब यह कामधेनु मेरे द्वार पर बँधेगी ।

[पर्दा]

दूसरा दृश्य

[होरी के घर का द्वार ! खाना-पीना करके होरी बैठा हुक्का पी रहा है । मंच पर पहले दृश्य जैसी हालत है । दो क्षण बाद गोबर अन्दर से

कुदाल लिये आता है। पीछे-पीछे धनिया भी है। उसे देखकर होरी बोल उठता है।]

होरी—अभी से चल दिये। जरा ठहर जाओ बेटा, हम भी चलते हैं। तब तक थोड़ा-सा भूसा निकाल कर रख दो। मैंने भोला को देने को कहा है। वेचारा आजकल वहुत तंग है।

गोबर—(**अवज्ञा से**) हमारे पास बेचने को भूसा नहीं है।

होरी—वेचता नहीं हूँ भाई, यों ही दे रहा हूँ। वह संकट में है, उसकी मदद तो करनी ही पड़ेगी।

गोबर—हमें तो उन्होंने कभी एक गाय भी नहीं दी।

होरी—दे तो रहा था, हमीं ने नहीं ली।

धनिया—(**मटक कर**) गाय नहीं वह दे रहा था! आँख में अंजन लगाने को कभी चुल्लू भर दूध तो भेजा ही नहीं, गाय दे देगा!

होरी—नहीं, जवानी कसम, अपनी पछांई गाय दे रहे थे। हाथ तंग है, भूसा चारा नहीं रख सके। अव एक गाय बेच कर भूसा लेना चाहते हैं।

गोबर—तो ले लें, कोन रोकता है।

होरी—रोकता कौन? मैंने ही सोचा कि संकट में पड़े आदमी की गाय क्या लूं। थोड़ा-सा भूसा दिये देता हूँ, कुछ रुपये हाथ आ जायँगे तो गाय ले लूंगा....

गोबर—(**एकदम**) तुम्हारा यही धर्मात्मापन तो तुम्हारी दुर्गत करा रहा है। साफ वात है। अस्सी रुपये की गाय है, हमसे बीस रुपये का भूसा ले ले और गाय हमें दे दे। साठ रुपये रह जायँगे, वह हम धीरे-धीरे दे देंगे।

होरी—(**मुस्कराकर**) मैंने ऐसी चाल सोची है कि गाय सेंत-मेंत में हाथ आ जाय। कहीं भोला की सगाई ठीक करनी है वस।

गोबर—(**तिरस्कार से**) तो तुम अब सबकी सगाई ठीक करते फिरोगे !

धनिया—(**तीखी निगाह**) अब यही एक उद्यम तो रह गया है। नहीं देना है हमें भूसा किसी को। यहाँ भोली-भोला किसी का करज नहीं आया।

होरी—अगर मेरे जतन से किसी का घर बस जाय, तो इसमें कौन-सी बुराई है। गोबर जरा बेटा चिलम में आग तो रख ला। (**गोबर चिलम लेकर जाता है**)

धनिया—जो उनका घर बसायेगा, वह अस्सी रुपये की गाय लेकर चुप न होगा—एक थैली गिनवायेगा।

होरी—(**प्यार से**) वह मैं जानता हूँ, लेकिन उसकी भलमनसी को भी तो देखो। मुझसे जब मिलता है तेरा वखान ही करता है—ऐसी लच्छमी है, ऐसी सलीकेदार है।

धनिया—(**ऊपरी क्रोध से**) मैं उनके वखान की भूखी नहीं हूँ। वह अपना बखान धरे रहें।

होरी—(**मुस्करा कर**) कहता था जिस दिन तुम्हारी घरवाली का मुँह सबेरे देख लेता हूँ उस दिन कुछ-न-कुछ जरूर हाथ लगता है। मैंने कहा तुम्हारे लगता होगा। यहाँ तो रोज देखते हैं, कभी पैसे से भेंट नहीं होती।

धनिया—तुम्हारे भाग ही खोटे हैं तो मैं क्या करूँ !

होरी—लगा अपनी घरवाली की बुराई करने—भिखारी को भीख तक नहीं देती थी। झाड़ू लेकर मारने दौड़ती थी, लालचिन ऐसी थी कि नमक तक दूसरों के घर से माँग लाती थी।

धनिया—मरने पर किसी की क्या बुराई करूँ। मुझे देखकर जल उठती थी।

होरी—भोला बड़ा गमखोर था कि उसके साथ निबाह कर लिया।

दूसरा होता तो ज़हर खाके मर जाता ।

धनिया—तो क्या कहते थे कि जिस दिन तुम्हारी घरवाली का मुँह देख लेता हूँ, तो क्या होता है ?

होरी—उस दिन भगवान् कहीं-न-कहीं से कुछ भेज देते हैं ।

धनिया—(**प्रसन्न होती है**) वहुएँ भी तो वैसी ही चटोरिन आयी हैं । अवकी सवों ने दो रुपये के खरवूजे उधार खा डाले ।

होरी—और भोला रोवे काहे को ।

(गोबर का प्रवेश)

गोबर—भोला दादा आ पहुँचे हैं । मन दो मन भूसा है । वह उन्हें दे दो, फिर उनकी सगाई ढूँढ़ने निकलो ।

धनिया—(**उठती हुई**) उनके लिए खाट-वाट तो डाल नहीं दी ऊपर से लगे भुनभुनाने । कुछ तो भलमनसी सीखो । कलसे में पानी भर दो हाथ-मुँह धोयें । कुछ रस-पानी पिला दो ।

होरी—रस-वस का काम नहीं । कौन कोई पाहुने हैं ।

धनिया—(**बिगड़ कर**) पाहुने और कैसे होते हैं । रोज-रोज तो तुम्हारे द्वार पर आते नहीं । (**पुकारती अन्दर जाती है**) रुपिया, रुपिया, देख डिब्बे में तमाखू है....

[**होरी मुस्कराता है । गोबर खाट लाकर डाल जाता है । तभी खांचा लिये भोला का प्रवेश ।**]

होरी—आओ, आओ, भोला दादा । यहाँ वैठो खाट पर । (**पुकार कर**) ओ रुपिया, रुपिया, चिलम तो ला । ओ सोना, रस घोला कि नहीं ?

भोला—अरे, अरे, महतो । रस-वस क्या होगा !

होरी—अव मुझे कुछ पता नही, गोवर की माँ जाने घरनी वह है ।

[**रूपा का चिलम और सोना का रस लेकर प्रवेश । रूपा—नंगे बदन,**

39852.
21.6.72

लंगोटी लगाये, झबरे बाल, इधर-उधर बिखरे हुए। सोना—गठा हुआ बदन, लम्बा, रूखा पर प्रसन्न मुख, आँखों में तृप्ति, ठुड्डी नीचे को खिंची हुई, न बालों में तेल, न आँखों में काजल, न देह पर गहने, जैसे गृहस्थी के भार ने यौवन को दबा कर बौना कर दिया हो।]

भोला—(**हँस कर**) हाँ महतो, अच्छी घरनी घर में आ जाय तो समझ लो लक्ष्मी आ गई। वह जानती है छोटे-बड़े का आदर-सत्कार कैसे करना चाहिए।

[**रस पीते हैं, फिर चिलम। धनिया दरवाजे के अन्दर खड़ी सुन रही है। मुस्कारती है।]**

दशहरा आ रहा है, मालिकों के द्वार पर तो बड़ी धूमधाम होगी ?

होरी—हाँ, तम्बू सामियाना गड़ गया है। अब की लीला में मैं भी काम करूँगा। रायसाहब ने कहा है—तुम्हें राजा जनक का माली बनना पड़ेगा।

भोला—मालिक तुमसे बहुत खुश हैं।

होरी—उनकी दया है।

भोला—(**चिलम पीकर**) लेकिन सगुन करने के लिए रुपयों का कुछ जुगाड़ कर लिया है ? माली बन जाने से तो गला न छूटेगा !

होरी—उसी की चिन्ता तो मारे डालती है, दादा। अनाज तो सब-का-सब खलिहान में ही तुल गया। यह भूसा तो रातों-रात ढोकर छिपा दिया था। नहीं तो तिनका भी न बचता। तीन-तीन महाजन हैं, किसी का ब्याज भी पूरा न चुका। भइया, हमारा जनम इसलिए हुआ है कि अपना रकत बहायें और बड़ों का घर भरें।....आदमी तो हम भी हैं।

भोला—कौन कहता है कि हम तुम आदमी हैं। आदमी वे हैं जिनके पास धन हैं, अख्तियार।है, इलम है। हम लोग तो बैल हैं और

जुतने को पैदा हुए हैं। उस पर एके का नाम नहीं। परेम तो संसार से उठ गया।

होरी—हाँ दादा। परेम तो संसार से उठ गया। अच्छा बैठो, मैं खाँचा भर लाऊँ। (**उठता है**)

भोला—ना महतो, बैठूँगा नहीं। जब तक तुम खाँचा भरो तब तक मैं दातादीन पण्डित से बात कर लूँ। (**उठता है**) क्या बताऊँ यहाँ लड़कों से नहीं पटती। दोनों नालायक हैं और मैं किसी की कुचाल देख कर मुँह बन्द नहीं कर सकता। सारा काम मुझे करना पड़ता है। सानी-पानी मैं करूँ, गाय-भैंस मैं दुहूँ, दूध लेकर बाजार मैं जाऊँ। यह गृहस्थी जी का जंजाल है, सोने की हँसियाँ, जो न उगलते बने न निगलते। (**आगे बढ़ता हुआ मुड़ता है**) तुम तो जानते हो; तुमने भाइयों को बेटों की तरह पाला पर मौके पर अलग हो गये। तुम्हें बड़ा रंज हुआ होगा।

होरी—कुछ न पूछो दादा। यही जी चाहता था कि कहीं जाकर डूब मरूँ। गोबर की माँ की जो दुर्गत हुई वह मैं ही जानता हूँ, पर बहुत अच्छा हुआ कि अलग हो गये। मेरे सिर से बला टली।

भोला—यही हाल घर-घर है भइया। अच्छा, मैं अभी आया।

(**जाता है, होरी खाँचा उठाता है, धनिया बाहर आती है**)

होरी—(**खाँचा उठाकर**) जाने कहाँ से इतना बड़ा खाँचा मिल गया। मन भर से कम में न भरेगा। दो खाँचे भी दिये तो दो मन निकल जायँगे।

धनिया—तो क्या हुआ? या तो किसी को नेवता न दो और दो तो भर पेट खिलाओ। तुम्हारे पास फूल-पत्र लेने थोड़े आये हैं कि चंगोरी लेकर चलते। देते ही हो तो तीन खाँचे दो।

होरी—तीन खाँचे तो मेरे दिये न दिये जायँगे।

धनिया—तब क्या एक खाँचा देकर टालोगे! गोबर से कह दो

कि अपना खाँचा भर कर उसके साथ चला जाय ।

होरी—यह तो अच्छी दिल्लगी है कि अपना माल भी दो और उसे घर तक पहुँचा भी दो । लाद दे, लदा दे, लादनेवाला साथ कर दे । और तीन खाँचे उन्हें दूँ तो अपने बैल क्या खायँगे ?

धनिया—यह तो नेवता देने के पहले ही सोच लेना था ।

होरी—मुरौवत, मुरौवत की तरह की जाती है, अपना घर उठा कर नहीं दे दिया जाता ।

धनिया—अभी जमींदार का प्यादा आ जाय तो अपने सिर पर भूसा लाद कर पहुँचाओगे, तुम, तुम्हारा लड़का-लड़की सब ।

होरी—जमींदार की बात और है ।

धनिया—हाँ, वह डंडे के जोर से काम लेता है न !

होरी—उसके खेत नहीं जोतते ?

धनिया—खेत जोतते हैं तो लगान नहीं देते ?

होरी—अच्छा भाई जान न खा । हम दोनों चले जायँगे । कहाँ-से-कहाँ मैंने इन्हें भूसा देने को कह दिया । या तो चलेगी नहीं और चलेगी तो दौड़ने लगेगी ।

(दोनों अन्दर जाते हैं, तभी प्रकाश गदराने लगता है, मार्ग पर कुछ लोग आते-जाते हैं । गोबर, भोला खाँचा उठाकर जाते हैं । कुछ और अन्धकार बढ़ता है । साँझ होने वाली है। होरी उतावला-सा घर के बाहर चिलम पीता हुआ उचक कर रास्ते की तरफ देखता है ।)

होरी—गोबर अभी तक न आया । वहाँ जाकर सो रहा क्या ? भोला की वह मदमाती छोकरी नहीं है झुनिया ? उसके साथ हँसी-दिल्लगी कर रहा होगा । (**उचक कर**) नहीं गाय दी तो लौट क्यों नहीं आया ? क्या वहाँ ढई देगा ? पर वह तो दूसरी गाय के चक्कर में फँसा होगा न !

[**तभी रूपा सोना का भागते हुए आना**]

रूपा, सोना—(**एक साथ, हाँफती हुई**) भैया गाय ला रहे हैं। आगे-आगे गाय है पीछे-पीछे भैया हैं।

होरी—(**एकदम**) गाय आ गयी ?

रूपा—(**आगे बढ़ कर**) हाँ, पहले मैंने देखा था, तभी दौड़ी। सोना ने तो पीछे देखा।

सोना—तूने भैया को कहाँ पहचाना ? तू तो कहती थी कोई गाय भागी आ रही है। मैंने कहा कि भैया हैं।

रूपा—ऊँ हूँ, पहले मैंने देखा था।

सोना—नहीं, पहले मैंने (**रूपा चिढ़ा कर बाहर भागती है, सोना पीछे-पीछे जाती है**)

होरी—(**पुकारता हुआ**) गोवर की माँ........गोवर की माँ, गाय आ गयी।

[**धनिया तेजी से, प्रसन्न होती हुई आती है**]

धनिया—क्या गाय आ गयी ?

होरी—(**प्रसन्न**) हाँ, गाय आ गयी। चलो, जल्दी से नांद गाड़ दें।

धनिया—नहीं पहले थाली में थोड़ा-सा आटा और गुड़ घोल कर रख दें। बेचारी धूप में चली होगी। प्यासी होगी। तुम जाकर नांद गाड़ो, मैं घोलती हूँ।

होरी—कहीं एक घंटी पड़ी थी। उसे ढूँढ़ लो। उसे गले में बाँधेंगे।

धनिया—(**जाता-जाती रुक कर**) सोना कहाँ गयी ? सहुआइन की दूकान से थोड़ा-सा काला डोरा मँगवा लो। गाय को नजर बहुत लगती है।

होरी—आज मेरे मन की बड़ी भारी लालसा पूरी हो गयी।

धनिया—(आकाश की ओर देखकर) गाय के आने का आनन्द तो जव है कि उसका पौरा भी अच्छा हो। भगवान के मन की वात है।

[तभी नेपथ्य में शोर मचता है 'गाय आ गयी' 'गाय आ गयी']

धनिया—(तेजी से अन्दर जाती है। होरी विह्वल होकर बाहर आता है। धनिया अन्दर से, उसी तेजी से, काली किनारी लिये आती है और बाहर भागती है। शोर उठता रहता है। धनिया और होरी फिर विह्वल होकर आते हैं)

होरी—(गद्‌गद्) आज भगवान ने यह दिन दिखाया, मेरा घर गऊ के चरणों से पवित्र हो गया। न जाने किसके पुन्न से........

धनिया—अव ऐसे कव तक करते रहोगे। आँगन में नाँद गाड़ दो।

होरी—आँगन में जगह कहाँ है ?

धनिया—वहुत जगह है।

होरी—मैं तो वाहर ही गाड़ता हूँ।

धनिया—पागल न वनो। गाँव का हाल जान कर भी अनजान बनते हो।

होरी—अरे वित्ते भर के आँगन में गाय कहाँ वँधेगी भाई।

धनिया—जो वात नहीं जानते, उसमें टाँग मत अड़ाया करो। संसार भर की विद्या तुम्ही नहीं पढ़े हो।

होरी—तो तू ही पढ़ो है ?

धनिया—हाँ पढ़ी हूँ, तभी तो कहती हूँ कि गाय आँगन में वँधेगी।

होरी—(एकदम) धनिया....

गोबर—(आकर) अभी तक नाँद नहीं गड़ी। सारा गाँव तमाशा देख रहा है।

होरी—तेरी माँ माने तव न। कहती है कि गाय आँगन में वँधेगी।

गोबर—कैसे बँधेगी। अ गन में बाँधने को नहीं लाये। नाँद बाहर गाड़ो दादा।

धनिया—कैसे गाड़ोगे। नाँद आँगन में गड़ेगी। चलो, जल्दी करो। हमें नहीं गाँव को दिखाना। गाँव की हालत नहीं जानते क्या। कल को.... (एक क्षण तीनों एक दूसरे को देखते हैं)

होरी—(**एकदम**) अच्छा बाबा, तू जीती मैं हारा। गाय आँगन में ही बँधेगी। चल बेटा गोबर, उधर से गाय को आँगन में ले चल।

[**शोर बराबर उठता रहता है। गोबर लौटता है। धनिया, होरी घर में जाते हैं। दातादीन का प्रवेश। सत्तर वर्ष के बूढ़े पंडित हैं।**]

दातादीन—कहाँ हो होरी, होरी....

होरी—(**आकर**) पालागन पण्डितजी। आइये, आइये....

दातादीन—तनिक हम भी तुम्हारी गाय देख लें। सुना, बड़ी सुन्दर है।

होरी—हाँ, हाँ, आइये। आपकी ही गाय है। आइये।

[**दोनों अन्दर जाते हैं। पीछे-पीछे दो-चार और व्यक्ति उत्सुकता से जाते हैं। दो-चार लौटते हैं। रूपा, सोना के साथ बच्चे आते-जाते हैं। तभी दातादीन, धनिया और होरी बाहर आते हैं।**]

दातादीन—कोई दोष नहीं, बेटा! बाल, भौंरी सब ठीक है। भगवान चाहेंगे तो तुम्हारे भाग खुल जायेंगे। ऐसे अच्छे लच्छन हैं कि वाह। बस रातिब न कम होने पाये। एक-एक बाछा सौ-सौ का होगा।

होरी—(**गद्‌गद्**) सब आपका आसीरबाद है, दादा।

दातादीन—(**पीक थूकते हुए**) मेरा आसीरबाद नहीं है, बेटा, भगवान की दया है। यह सब प्रभु की दया है। रुपये नगद दिये?

होरी—भोला ऐसा भलामानस नहीं है महाराज । नगद गिनाये, पूरे, चौकस ।

दातादीन—(**एक बार होरी को देखते हैं फिर प्रसन्न होकर**) कोई हरज नहीं बेटा, कोई हरज नहीं । भगवान सब का कल्यान करेंगे । पाँच सेर दूध है इसमें, बच्चे को छोड़कर ।

धनिया—अरे नहीं महाराज । इतना दूध कहाँ ? बुढ़िया तो हो गई है । फिर यहाँ रातिब कहाँ धरा है ।

दातादीन—(**धनिया को मर्मभरी दृष्टि से देख कर**) ठीक है लेकिन बाहर न बाँधना, इतना कहे देते हैं ।

धनिया—(**होरी को देखकर**) सुन लिया (**दातादीन से**) नहीं महाराज बाहर क्या बाँधेंगे, भगवान दे तो इसी आँगन में तीन गायें और बंध सकती हैं ।

[**अनुभवी पंडित जी हँसते हुए जाते हैं । धनिया, होरी अन्दर जाते हैं । एक-दो क्षण आना-जाना लगा रहता है । होरी के भाई हीरा सोभा उधर से जाते हैं पर रुकते नहीं । सन्ध्या गहरी होती है । मंच पर प्रकाश गहराता है । होरी धनिया बाहर आते हैं ।**]

होरी—सारा गाँव गाय देखने आया पर न सोभा आया, न हीरा ।

धनिया—नहीं आये तो यहाँ कौन उन्हें बुलाने जाता है !

होरी—तू तो बात समझती नहीं, लड़ने को तैयार रहती है । भगवान ने जब यह दिन दिखाया है तो हमें सिर झुका कर चलना चाहिए । आदमी को अपने सगों के मुँह से अपनी भलाई-बुराई सुनने को जितनी लालसा होती है बाहर वालों के मुँह से नहीं । दोनों को लाकर दिखा देना चाहिए नहीं तो कहेंगे....

धनिया (**तिनक कर एकदम**)—मैंने तुमसे सौ बार हजार बार कह दिया मेरे मुँह पर भाइयों का बखान न किया करो....

होरी—धनिया तू तो....

धनिया—(**पूर्वत:**) मैं तो क्या ? मैं पूछती हूँ सारे गाँव ने सुना, क्या उन्होंने न सुना होगा ? सारा गाँव देखने आया उन्हीं के पाँव में मेंहदी लगी हुई थी, मगर आयें कैसे ? जलन आ रही होगी कि इसके घर गाय आ गई, छाती फटी जाती होगी । (**जाती हुई**) मैं तो मिट्टी का तेल लाने जा रही हूँ । किसी को बुलाने मत भेज देना ।

[**जाती है । होरी सिर हिलाता है, रूपा आती है ।**]

होरी—रूपा, रूपा, जरा जाकर देख कि हीरा काका आ गये हैं कि नहीं । सोभा काका को भी देखती आना । कहना दादा ने तुम्हें बुलाया है ।

रूपा—(**ठुनक कर**) छोटी काकी मुझे डाँटती है ।

होरी—काकी के पास क्या करने जायगी....

रूपा—सोभा काका भी मुझे चिढ़ाते हैं, कहते हैं....मैं न कहूँगी ।

होरी—क्या कहते हैं बता ?

रूपा—चिढ़ाते हैं ।

होरी—क्या कह कर चिढ़ाते हैं ?

रूपा—कहते हैं कि तेरे लिये मूस पकड़ रखा है । ले जा भून कर खा ले ।

होरी—(**हँस कर**) तू कहती नहीं, पहले तुम खा लो, तो मैं खाऊँगी ।

रूपा—अम्माँ मने करती है । कहती है उन लोगों के घर न जाया कर ।

होरी—तू अम्माँ की बेटी है कि दादा की ?

रूपा—(**गले में हाथ डाल कर**) अम्माँ की (**हँसती है**)

होरी—तो फिर मेरी गोद से उतर जा । आज मैं तुझे अपनी थाली में न खिलाऊँगा ।

रूपा—(**मचल कर**) अच्छा तुम्हारी बेटी ।

होरी—तो फिर मेरा कहना मानेगी कि अम्माँ का ?

रूपा—तुम्हारा ।

होरी—तो जाकर हीरा और सोभा को खींच ला ।

रूपा—और जो अम्माँ बिगड़े ?

होरी—अम्माँ से कहने कौन जायगा ।

[**रूपा जाने को बढ़ती है कि तेल लिये धनिया आ जाती है**]

धनिया—कहाँ चली ? हूँ, काका को बुलाने जाती होगी । चल अन्दर, किसी को बुलाने नहीं जाना है । (**होरी से**) मैंने तुमसे हजार बार कह दिया मेरी लड़कियों को किसी के घर न भेजा करो । किसी ने कुछ कर-करा दिया, तो मैं तुम्हें लेकर चाटूंगी (**अन्दर जाती है**)

होरी—(**अनजान-सा**) किस बात पर बिगड़ती है भाई । यह तो अच्छा नहीं लगता कि अन्धे कूकुर की तरह हवा को भूंका करे । (**बाहर जाता हुआ**) भाई मेरा बुरा चेतें, मैं उनका बुरा क्यों चेतूँ । अपनी-अपनी करनी अपने-अपने साथ । मैं आप ही जाता हूँ ।

[**मंच पर अँधेरा और गहरा होता है । समय की सूचना देने को धीरे-धीरे गहराता है । कुछ लोग आते-जाते हैं । कहीं-कहीं मिट्टी के तेल की कुप्पी जलती है । होरी बाहर से आता है । बहुत व्यग्र है । बड़बड़ाता है ।**]

होरी—(**स्वागत**) हीरा ने यह कहा कि मैंने पहले की कमाई छिपा रखी थी । मैंने भाई का हक मार लिया (**मंच पर व्यग्रता से टहलता है**) बेईमानी का धन जैसे आता है वैसे ही जाता है । भगवान चाहेंगे तो बहुत दिन गाय घर में न रहेगी । (**एकदम**) नहीं, नहीं, गाय रहेगी, रहेगी ....पर हीरा ने यह क्या कहा । नहीं, नहीं, मेरी नीयत साफ है । भगवान के सामने मैं निरदोस हूँ....पर....पर....हीरा जलता है, और भी जलते होंगे । तो क्यों न गाय को लौटा दूँ । इतना बड़ा कलंक सिर पर लेकर मैं

गाय को घर में न रख सकूँगा....मैं उसे लौटा दूँगा। अभी लौटा दूँगा।

[**धनिया का प्रवेश**]

धनिया—किसे लौटा दोगे ?

होरी—(**ठिठक कर**) गाय को....

धनिया—क्यों, क्या हुआ ? लौटा क्यों देंगे ? लौटाने के लिये लाये थे ?

होरी—हाँ, लौटा देने में ही कुसल है।

धनिया—क्यों, बात क्या है ? क्या भोला रुपये माँगता है ?

होरी—नहीं, भोला यहाँ कब आया ?

धनिया—तो फिर क्या बात है ?

होरी—क्या करेगी पूछ कर ?

धनिया—(**तेज होकर**) हूँ, समझी, तो तुम्हें भाइयों का डर है, लेकिन मैं किसी से नहीं डरती। अगर हमारी बढ़ती देख कर किसी की छाती फटती है तो फट जाय।

होरी—(**विनम्र स्वर**) धीरे-धीरे बोल महरानी। मैं अपने कानों से क्या सुन आया हूँ तू क्या जाने। चर्चा हो रही है कि मैंने अलग होते समय रुपये दबा लिये थे। भाइयों को धोखा दिया था....

धनिया—हीरा कहता होगा ?

होरी—सारा गाँव कह रहा है। हीरा को क्यों बदनाम करूँ।

धनिया—सारा गाँव नहीं कह रहा। अकेला हीरा कह रहा है। मैं अभी जाकर पूछती हूँ न कि तुम्हारे बाप कितने रुपये छोड़ कर मरे थे। (**बाहर जाती है**) डाढ़ीजारों के पीछे हम बरबाद हो गये और अब हम बेईमान हैं ! मैं कहती हूँ रख लिये रुपये, दबा लिये। हीरा, सोभा और संसार को जो करना हो कर ले। क्यों न रुपये रख लें ? दो-दो संडों का ब्याह नहीं किया !

[रुकती नहीं, चीखती हुई मार्ग पर चढ़ जाती है। होरी के घर का द्वार पीछे हट जाता है। दूसरे द्वार भी। धनिया के पीछे होरी भी आता है।]

होरी—बिगड़ती है तो चण्डी बन जाती है। सुन तो, अरे सुन !

[धनिया नहीं सुनती। चीखती है आदमी आने लगते हैं]

धनिया—कहाँ है हीरा ? बाहर तो आ। तू हमें देखकर क्यों जलता है ? हमें देख कर क्यों तेरी छाती फटती है ? पाल-पोस कर जवान कर दिया (हीरा का प्रवेश) हमने न पाला होता तो आज कहीं भीख माँगते होते....

हीरा—हमने न पाला होता....बड़ी आई पालने वाली ? तेरे घर में कुत्तों की तरह एक टुकड़ा खाते थे और दिन भर काम करते थे। दिन-दिन भर सूखा गोबर बीना करते थे। उस पर भी बिना दस गाली दिये रोटी न देती थी। तेरी जैसी राच्छसिन के हाथ में पड़ कर जिन्दगी तलख हो गई।

धनिया—(तेज होकर) जबान सँभाल नहीं तो जीभ खींच लूंगी। राच्छसिन तेरी औरत होगी। तू है किस फेर में मूँड़ीकाटे, टुकड़खोर, नमकहराम....

दातादीन—इतना कटु वचन क्यों कहती है धनिया। नारी का धर्म है कि गम खाय। वह तो उजड्ड है। क्यों उसके मुँह लगती है ?

पटेश्वरी—बात का जवाब बात है, गाली नहीं। तूने लड़कपन में उसे पाला-पोसा, लेकिन यह क्यों भूल जाती है कि उसकी जायदाद तेरे हाथ में थी।

धनिया—अच्छा तुम रहने दो लाला। मैं सबको पहचानती हूँ। मैं गाली दे रही हूँ, वह फूल बरसा रहा है, क्यों ?

दुलारी—बड़ी गाल दराज औरत है भाई। मरद के मुँह लगती है।

हीरा—चली जा मेरे द्वार से नहीं तो जूतों से बात करूँगा। झोंटा

पकड़ कर उखाड़ लूंगा। गाली देती है डाइन। बेटे का घमण्ड हो गया है....

[**भीड़ में अचरज के भाव दिखाई देते हैं**]

होरी—(**एकदम आगे बढ़ता है**) अच्छा बस, अब चुप हो जाओ हीरा। अब नहीं सुना जाता। मैं इस औरत को क्या कहूँ। जब मेरी पीठ में धूल लगती है, तब इसी के कारण।

दातादीन—बड़ा निर्लज्ज है हीरा।

पटेश्वरी—अजी गुण्डा है।

दुलारी—कपूत है।

धनिया—सुन लो कान खोल के। भाइयों के लिये मरते रहते हो। ये भाई हैं, ऐसे भाई का मुँह न देखे। यह मुझे जूतों से मारेगा....

होरी—फिर क्यों बक-बक करने लगी तू। घर क्यों नहीं जाती।

धनिया—(**धम्म-से जमीन पर बैठती है और आर्त स्वर में पुकारती है**) अब तो इसके जूते खाके जाऊँगी। जरा इसकी मर्दुमी देख लूं। कहाँ है गोबर (**होरी उसे खींचता है**) अब किस दिन काम आयेगा तू ? देख रहा है बेटा, तेरी माँ को जूते मारे जा रहे हैं ! (**एकदम छुड़ाकर हीरा को धक्का देती है। वह गिर पड़ता है**) कहाँ जाता है, जूते मार, मार जूते, देखूँ तेरी मर्दुमी !

[**होरी तेजी से उसे पकड़ कर खींचता है और घर में ले जाता है**]

होरी—तू चलेगी नहीं....चल....मैं कहता हूँ यूँ नहीं मानेगी....

[**भीड़ सिर हिला-हिलाकर अपना मत प्रगट करती है। यहीं पर्दा गिरता है।**]

तीसरा दृश्य

[**मंच पर वही पहले वाला दृश्य। पर्दा उठने पर होरी के घर का द्वार हट जाता है। अन्दर का दृश्य, होरी खाट पर बड़ा चिन्तित बैठा है। सोना, रूपा उसके पास बैठी हैं, धनिया पास में पीढ़े पर बैठी व्यग्र होकर होरी को देख रही है।**]

धनिया—क्या कहा झिंगुरी सिंह ने ?

होरी—बताता हूँ (**निश्वास लेकर**) रायसाहब को यह क्या हुआ। और कभी तो इतनी कड़ाई नहीं होती थी। अब की यह कैसा हुआ कि जब तक बाकी न चुक जायगी किसी को खेत में हल न ले जाने दिया जायगा।

धनिया—यह क्या कह रहे हो ? मैं पूछती हूँ झिंगुरी सिंह ने रुपया दिया या नहीं ?

होरी—नहीं।

धनिया—नहीं ? क्या कहा ?

होरी—कहा कि रुपये उधार लेने में अपनी बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं।

धनिया—फिर ?

होरी—फिर गाय बेचने को कहते थे।

धनिया—(**चौंककर**) क्या....क्या कहते थे !

होरी—कहते थे, यह नयी गाय जो लाये हो उसे हमारे हाथ बेच दो। सूद-इसटाम के झगड़े से बच जाओगे।

धनिया—नहीं, नहीं, यह नहीं होगा। हम गाय बेचने को नहीं लाये। मैं इन सब को जानती हूँ। जलते हैं। गाय देख कर छाती फटती है। नहीं बेचेंगे हम गाय। कर ले जो जिसके जी में आये।

रूपा—नहीं, नहीं, दादा, गाय नहीं बेचना, मेरी गाय....

सोना—दादा, तुमने गाय बेची तो देख लेना....

होरी—(**पुचकार कर**) गाय बेचना मुझे क्या अच्छा लगता है। पर हमारे इतने पुन्न कहाँ बेटी, कि गऊ माता हमारे द्वार पर रहे। फिर यह संकट तो काटना ही है। रायसाहब को रुपये देने हैं। नहीं तो हल न चलेगा।

रूपा—पर नहीं देते हम अपनी गाय। रुपये जहाँ से चाहे लाओ।

सोना—इससे तो कहीं अच्छा है कि मुझे बेच डालो। गाय से कुछ बेसी ही मिल जायगा !

होरी—हाय, हाय, बेटी यह तू क्या कहने लगी ! (**होरी बेटियों को छाती में भर लेता है।**)

धनिया—(**रुंधा स्वर**) मेरे पास कोई गहना-गाँठा भी नहीं जो गिरो रखकर रुपये ले लें।

होरी—यही तो मैंने कहा था पर....(**एकदम**) अच्छा कुछ भी करना पड़े गाय न बेचेंगे। जाओ रूपा, सोना गाय को देखो। पानी तो पिलाया उसे ?

रूपा—मैं अभी जाती हूँ। दादा मैंने गाय के बछड़े का नाम रखा है।

सोना—बछड़ा आया नहीं नाम पहले रख लिया।

होरी—(**हँसकर**) क्या नाम रखा, मैं भी तो जानूँ।

रूपा—मटरू। मैं उसे अपने साथ लेकर सोऊँगी।

होरी—मटरू। हा, हा, हा, मटरू। बड़ा प्यारा नाम है मटरू....

[**होरी हँसता है। सब हँसते हैं। लड़कियाँ भाग जाती हैं**]

होरी—क्या करूँ धनिया, कुछ समझ में नहीं आता। इधर गिरूँ तो कुआँ, उधर गिरूँ तो खाईं। गाय न दूँ तो खेती न होगी और रायसाहब का बाकी चुकाऊँ तो गाय जाती है।

धनिया—गाय तो मैं न जाने दूँगी।

होरी—मैं ही कब चाहता हूँ। एक मित्र से गाय उधार लेकर बेच देना बहुत ही वैसी बात है लेकिन विपत में तो आदमी का धरम तक चला जाता है।

धनिया—चला तो जाता है पर....

होरी—तो बस समझ ले विपत ही आ पड़ी है। धरम के सामने यह कौन सी बड़ी बात है।

धनिया—विपत में आदमी कितना बेबस हो जाता है।

होरी—ऐसा न हो तो लोग विपत से इतना डरें क्यों ?

धनिया—गोबर से भी पूछ लेते।

होरी—पूछ लेंगे पर वह तो आजकल....(**एकदम**) आजकल वह अड़ता नहीं।

धनिया—हाँ, आजकल वह अड़ता नहीं, लेकिन रूपा, सोना का क्या करोगे ? गाय पर जान देती हैं।

होरी—इनके सामने न ले जाऊँगा। कहीं चली जायेंगी तो गाय झिंगुरी सिंह के पास पहुँचा दूँगा।

धनिया—पहुँचा आना (**कहते-कहते रो पड़ती है**) पर मैं उसे जाते कैसे देख सकूँगी। नहीं, मुझसे न देखा जायेगा।

होरी—और जैसे मैं देख सकूँगा। धनिया, ऐसा कोई माई का लाल नहीं जो इस वक्त मुझे पचीस रुपये दे दे, फिर चाहे पचास रुपये ही ले ले।

धनिया—ऐसा कोई होता तो फिर बात क्या थी।

होरी—सच कहता हूँ अब मुझसे गाय के सामने नहीं खड़ा हुआ जाता। वह मानो अपनी काली-काली आँखों में आँसू भर कर कहती है—क्या चार दिन में ही तुम्हारा मन मुझसे भर गया। तुमने तो वचन दिया था कि जीते-जी तुम्हें न बेचूँगा। यही वचन था तुम्हारा ! मैंने तो

तुमसे कभी किसी बात का गिला नहीं किया। जो कुछ रूखा-सूखा तुमने दे दिया वही खाकर सन्तुष्ट हो गई !

धनिया—(**रुँधा स्वर**) लड़कियाँ तो चली गई। अब इसे ले क्यों नहीं जाते ? जब बेचना ही है तो अभी बेच दो।

होरी—(**कम्पित स्वर**) मेरा तो हाथ नहीं उठता, धनिया। उसका मुँह नहीं देखती !

धनिया—यह तो देखती हूँ पर....

होरी—अब रहने दे, रुपये सूद पर लूँगा। भगवान ने चाहा तो सब अदा हो जायँगे।

धनिया—(**चकित**) क्या....क्या गाय न बेचोगे ?

होरी—नहीं। तीन-चार सौ होते ही क्या हैं। एक बार ऊख लग जाय....

धनिया—(**प्रेम और गर्व से**) और क्या ? इतनी तपस्या के बाद तो घर में गऊ आयी। उसे भी बेच दो। ले लो कल रुपये। जैसे और सब चकाये जायँगे वैसे इसे भी चुका देंगे।

होरी—बस यही ठीक है, लेकिन भीतर बड़ी उमस है। हवा बन्द है, बरखा होगी। गाय को बाहर हवा में बाँधे देता हूँ।

धनिया—नहीं, नहीं, बाहर न बाँधो।

होरी—तू तो झूठमूठ डरती है। अरी उसके भी तो जान है। हवा में आराम से रहेगी। [**कहते-कहते दोनों अन्दर जाते हैं। प्रकाश से फिर समय का व्यवधान होता है। होरी फिर बाहर आकर एक ओर चला जाता है। एक क्षण बाद हीरा सशंक भाव से होरी के घर की ओर बढ़ता है, झिझकता है, बढ़ता है, झिझकता है, एक बार लौट जाता है फिर आता है, हाथ में चिलम है। इस बार दृढ़ता से मकान के पीछे की ओर चला जाता है। उधर गाय बँधी है। एक बार मंच से बाहर हो जाता है फिर घर के पीछे की तरफ दिखाई देता है; तभी होरी का प्रवेश। वह हीरा**

को देख कर ठिठकता है]

होरी—(**ठिठक कर**) वहाँ कौन खड़ा है ?

हीरा—(**सामने आकर**) मैं हूँ दादा, तुम्हारे कौड़े से आग लेने आया था ।

होरी—(**प्रसन्न होकर**) अच्छा । तमाखू है कि ला दूँ ?

हीरा—नहीं तमाखू तो है, दादा ।

होरी—मैं सोभा को देखने गया था, वह तो आज बहुत बेहाल है ।

हीरा—हाँ, पर कोई दवाई न खाय, तो क्या किया जाय । उसके लेखे तो वैद, डाक्टर, और हकीम अनाड़ी हैं । भगवान के पास जितनी अक्कल है वह उसके और उसकी घरवाली के हिस्से पड़ गई ।

होरी—यही तो बुराई है उसमें । अपने सामने किसी को गिनता ही नहीं । और चिढ़ने तो बीमारी में सभी हो जाते हैं ।

हीरा—हाँ दादा । (**चिलम पीते रहते हैं**)

होरी—तुम्हें याद है कि नहीं, जब तुम्हें इंफिजा हो गया था, दवाई उठा कर फेंक देते थे । मैं तुम्हारे दोनों हाथ पकड़ता था तब तुम्हारी भौजी तुम्हारे मुँह में दवाई डालती थी । उस पर तुम उसे हजारों गालियाँ देते थे ।

हीरा—(**भरा कंठ**) हाँ दादा, भला वह बात भूल सकता हूँ । तुमने इतना न किया होता तो तुमसे लड़ने के लिये कैसे बच रहता !

होरी—बेटा, लड़ाई-झगड़ा तो जिन्दगी का धरम है (**उठता है**) इससे जो अपने हैं वह पराये थोड़े ही हो जाते हैं ।

हीरा—ठीक कहते हो, दादा । (**उठता है**)

होरी—और जब घर में चार आदमी रहते हैं तभी तो लड़ाई-झगड़े भी होते हैं । जिसके कोई है ही नहीं उससे कौन लड़ाई करेगा । अच्छा देर हो गई, तेरी भौजी भरी बैठी होगी ।

[अन्दर जाता है, हीरा बाहर । तभी होरी के घर का द्वार हट जाता

है। दोनों लड़कियाँ सोई पड़ी हैं। धनिया बैठी काम कर रही है। होरी को देख कर भभक उठती है]

धनिया—देखी अपने सपूत की लीला। इतनी देर हो गई और अभी उसे अपने सैल से छुट्टी नहीं मिली। मैं सब जानती हूँ। मुझको सारा पता मिल गया है। भोला की वह राँड़ लड़की नहीं है, झुनिया, उसी के फेर में पड़ा रहता है।

होरी—किसने कहा तुझ से ?

धनिया—(**प्रचंड स्वर**)—तुमसे छिपी होगी, और तो सभी जगह चर्चा चल रही है। यह है भुग्गा, वह बहत्तर घाट का पानी पिये हुए है। इसे उँगलियों पर नचा रही है और यह समझता है कि वह इस पर जान देती है। तुम उसे समझा दो, नहीं तो कोई ऐसी-वैसी बात हो गई तो कहीं के न रहोगे।

होरी—(**हँसी का स्वर**) झुनिया देखने-सुनने में तो बुरी नहीं है। उससे कर ले सगाई। ऐसी सस्ती मेहरिया और कहाँ मिली जाती है !

धनिया—(**पूर्ववत:**) झुनिया इस घर में आये तो मुँह झुलस दूँ राँड़ का। गोवर की चहेती है तो उसे लेकर जहाँ चाहे रहे।

होरी—और जो गोवर इसी घर में लाये ?

धनिया—तो ये दोनों लड़कियाँ किसके गले बाँधोगे ? फिर बिरादरी में तुम्हें कौन पूछेगा ? कोई द्वार पर खड़ा तक तो होगा नहीं।

होरी—उसे इसकी क्या परवाह ?

धनिया—इस तरह नहीं छोड़ूँगी लाला को। मर-मर कर मैंने पाला है, और झुनिया आकर राज करेगी। मुँह में लुआठी लगा दूँगी रांड़ के।

(गोबर का घबराये हुए आना)

गोबर—दादा, दादा, सुन्दरिया को क्या हो गया ? क्या काले ने छू लिया। वह तो पड़ी तड़प रही है। (**तीनों घबरा कर बाहर दौड़ते हैं**)

होरी—क्या असगुन मुँह से निकालते हो। अभी तो मैं देखे आ रहा हूँ, लेटी थी।

धनिया—लेटी थी! मैं कितना जूझती रही कि बाहर न ले जाओ। हमारे दिन पतले हैं पर....

[बाहर निकल जाते हैं। तभी धनिया की चीख उठती है और होरी तेजी से आकर दूसरी ओर निकल जाता है। परदा गिरने लगता है, गिरते-गिरते शोर उठता है। लोग तेजी से आते दिखाई देते हैं, परदा गिर पड़ता है। कुछ स्वर कानों में पड़ते हैं—'हाय-हाय गाय को विष दे दिया।' 'ऐसी वारदात तो इस गाँव में कभी हुई नहीं।' 'क्या गाय थी कि बस देवता रही। पाँच सेर दूध था।' 'आते देर न हुई और यह बज्र गिर पड़ा।' रुदन तेज होता जाता है। परदा गिरते ही सब समाप्त]

चौथा दृश्य

[परदा उठते-उठते होरी के घर के द्वार पर मारपीट का दृश्य। होरी धनिया को मार रहा है। धनिया गाली दे रही है। दोनों लड़कियाँ बाप के पाँव से लिपटी चिल्ला रही हैं। गोबर माँ को बचा रहा है]

होरी—तू बिना पिटे नहीं मानेगी। समझ ले तू थाने गई तो मार ही डालूँगा!

धनिया—मार ले, मार डाल दाढ़ीजार, मूँड़ी काटे। मैं बिना लाला को बड़े घर भिजवाये मानूँगी नहीं। तीन साल चक्की पिसवाऊँगी, तीन साल....

होरी—(**पीट कर**) चक्की पिसवाएगी। मैं अभी तुझे पीसे देता हूँ। ले पिसवा चक्की....चुड़ैल....

गोबर—दादा, दादा, रहने दो दादा....

धनिया—तू जितना चाहे मार ले राक्षस। मैं उसे न छोड़ूंगी। वह वैरी है, पक्का वैरी। और वैरी को मारने में पाप नहीं, छोड़ने में पाप है।

होरी—तू नहीं मानेगी ?

धनिया—नहीं, नहीं, नहीं, उसे तीरथ करना पड़ेगा। भोज देना पड़ेगा। इस धोखे में न रहें लाला....

होरी—हट जा गोबर (**गोबर पीछे खींचता है**) मैं आज इसके प्राण ही निकाल दूँ (**लात मारता है**)

धनिया—(**चीख कर**) तेरी लात टूटे, तेरे कीड़े पड़ें, दाढ़ीजार, तुझे भी नहीं छोड़ूंगी। तुझसे गवाही दिलवाऊँगी। बेटे के सिर पर हाथ रख कर गवाही दिलवाऊँगी। राक्षस....

होरी—(**मारने झपटता है**) राक्षसिन चुड़ैल....

[**तभी गांव के लोग आ जाते हैं। शोभा है, दातादीन है। दातादीन डाँटते हैं।**]

दातादीन—यह क्या है होरी, तुम बावले हो गये हो क्या ? कोई इस तरह घर की लक्ष्मी पर हाथ छोड़ता है। तुम्हें तो यह रोग न था। क्या हीरा की छूत तुम्हें भी लग गई ?

होरी—(**पालागन करके**) महाराज, तुम इस बखत न बोलो। मैं आज इसकी बान छुड़ाकर दम लूंगा। मैं जितना ही तरह देता हूँ उतना ही यह सिर चढ़ती जाती है!

धनिया—(**सजल क्रोध**) महाराज, तुम गवाह रहना। मैं आज इसे और इसके हत्यारे भाइयों को जेहल भेजवा कर तब पानी पिऊँगी। इसके भाई ने गाय को माहुर खिला कर मार डाला। अब जो मैं थाने में रपट लिखाने जा रही हूँ तो यह हत्यारा मुझे मारता है....

होरी—(**दांत पीस कर**) फिर वही बात मुँह से निकाली। तूने देखा था हीरा को माहुर खिलाते ?

धनिया—तू कसम खा जा कि तूने हीरा को गाय की नाँद के पास खड़े नहीं देखा ?

होरी—हाँ, मैंने नहीं देखा, कसम खाता हूँ।

धनिया—वेटे के माथे पर हाथ रख कर कसम खा।

होरी—(**गोबर के माथे पर हाथ रख कर काँपता हुआ**) मैं वेटे की कसम खाता हूँ कि मैंने हीरा को नाँद के पास नहीं देखा।

धनिया—(**जमीन पर थूक कर**) थुड़ी है तेरी झुठाई पर। तूने रात खुद मुझसे कहा कि हीरा चोरों की तरह नाँद के पास खड़ा था और अव भाई के पक्ष में झूठ वोलता है। थुड़ी है। अगर मेरे वेटे का वाल भी बाँका हुआ तो घर में आग लगा दूँगी।

होरी—(**पांव पटकककर**) धनिया, गुस्सा मत दिला, नहीं तो बुरा होगा।

धनिया—बुरा क्या होगा। मार तो रहा ही है और मार ले, पापी ! मारते-मारते मेरा भुरकुस निकाल दिया। फिर भी इसका जी नहीं भरा। मुझे मार कर समझता है मैं वड़ा वीर हूँ। भाइयों के सामने भीगी विल्ली बन जाता है (**सहसा रोकर**) इस घर में आकर मैंने क्या-क्या नहीं झेला, पेट तन काटा, एक-एक लत्ते को तरसी, एक-एक पैसा प्राण की तरह संचा। घर भर को खिला कर आप पानी पीकर सो रही और आज उन सारे वलिदानों का यह पुरस्कार। भगवान....

[**आगन्तुक धीरे-धीरे धनिया की ओर होने लगते हैं**]

एक व्यक्ति—जरूर हीरा ने जहर दिया है।

दूसरा व्यक्ति—जरूर हीरा ने जहर दिया है।

तीसरा व्यक्ति—वेचारी, धनिया ठीक कहती है। होरी झूठ वोल रहा है।

गोबर—दादा, तुमने झूठी कसम खाई ?

होरी—गोवर तू चुप रह....

दातादीन—वह चुप कैसे रहे, चुप तुम रहो। जो वात है उसका पता लगाना चाहिए। (शोभा से) तुम कुछ जानते हो शोभा, क्या वात हुई ?

[होरी सिर झुकाये चला जाता है]

शोभा—(लेटे-लेटे) मैं तो महाराज, आठ दिन से वाहर नहीं निकला। होरी दादा कभी-कभी जाकर कुछ दे आते हैं उसी से काम चलता है। रात भी वह मेरे पास गये थे। किसने क्या किया मैं कुछ नहीं जानता।

दातादीन—हीरा से तुम्हारी कुछ वात नहीं हुई ?

शोभा—वात तो कुछ नहीं हुई। हाँ, कल साँझ वह मेरे घर खुरपी माँगने गया था। कहता था एक जड़ी खोदनी है। फिर तव से मेरी उससे भेंट नहीं हुई।

धनिया—(एकदम) देखा पण्डित दादा, यह उसी का काम है। शोभा के घर से खुरपी माँग कर लाया और कोई जड़ी खोदकर गाय को खिला दी।

दातादीन—यह वात सावित हो गई तो उसे हत्या लगेगी। पुलिस कुछ करे या न करे, धरम तो विना दण्ड दिये न रहेगा। चली तो जा रुपिया, हीरा को बुला ला। कहना पण्डित दादा बुला रहे हैं।

[रूपा जाती है]

दातादीन—अगर उसने हत्या नहीं की है तो गंगाजली उठा ले और चौरे पर चल कर कसम खाय....

धनिया—महाराज, उसके कसम का भरोसा नहीं। जव इसने झूठी कसम खा ली जो वड़ा धर्मात्मा वनता है तो हीरा का क्या विश्वास।

गोवर—खा ले झूठी कसम, वंस का अन्त हो जाय। वूढ़े जीते रहें। जवान जीकर क्या करेंगे !

रूपा—(**आकर**) काका घर में नहीं हैं पण्डित दादा। काकी कहती है कहीं चले गये।

दातादीन—कहाँ चले गये पूछा नहीं ?

रूपा—कहती है वता कर नहीं गये। लुटिया, डोरी और डण्डा सब लेकर गये हैं। साइत रुपये भी ले गये। काकी ने आले में रखे थे। वहाँ नहीं हैं।

धनिया—मुँह में कालिख लगा कर भागा है।

शोभा—भाग के कहाँ जायगा। गंगा नहाने न चला गया हो !

धनिया—गंगा जाता तो रुपये क्यों ले जाता और आजकल कोई परव भी तो नहीं है।

[**सब एक दूसरे को देखते हैं**]

एक व्यक्ति—हीरा ने अवश्य जहर दिया है।

दूसरा व्यक्ति—हाँ, जब देखा भेद खुल गया, अब जेहल जाना पड़ेगा, हत्या अलग लगेगी तो भाग गया।

दातादीन—भागने से बच नहीं सकता। धरम उसे नहीं छोड़ेगा। भगवान उसे अवश्य दण्ड देंगे। मैं खुद जाकर पता लगाता हूँ।

[**दातादीन लकड़ी सँभाल कर जाते हैं। पीछे-पीछे और लोग भी। होरी बाहर से आता है। धनिया की ओर आँख बचाकर देखता है। अन्दर चला जाता है। गोबर और धनिया भी जाते हैं। एक क्षण के लिये मंच खाली हो जाता है ! फिर दूसरी ओर से शोर पास आता है। दूसरे क्षण दारोगा जी वहां प्रवेश करते हैं। पीछे-पीछे हाँथ बाँधे दातादीन, झिंगुरी सिंह, नोखेराम, चार प्यादे, लाला पटेश्वरी आदि हैं।**]

दारोगाजी—होरी कहाँ है ?

दातादीन....(**आवाज लगाकर**) होरी, होरी महतो—

[**होरी आता है। दारोगा जी को देखकर काँपता है। सिमट जाता है। दारोगा एक क्षण उसे भाँपते हैं। फिर पूछते हैं**]

दारोगा—तुझे किस पर शुवहा है ! (**धनिया भी आती है**)

होरी—(**जमीन छूकर और हाथ बाँध कर**) मेरा शुवहा किसी पर नहीं है सरकार, गाय अपनी मौत से मरी है । वुड्ढी हो गई थी ।

धनिया—गाय मारी है तुम्हारे भाई हीरा ने । सरकार ऐसे वौड़म नहीं हैं कि जो कुछ तुम कह दोगे यह मान लेंगे । यहाँ जाँच-तहकीकात करने आये हैं ।

दारोगा—यह कौन औरत है ?

दातादीन
पटेश्वरी
मंगरू
झिंगुरीसिंह —(**एक साथ**) होरी की घरवाली है सरकार ।

दारोगा—तो इसे वुलाओ, मैं पहले इसी का वयान लिखूँगा । वह कहाँ है—हीरा ?

दातादीन—वह तो आज सवेरे से ही कहीं चला गया है सरकार ।

दारोगा—मैं उसके घर की तलाशी लूँगा ।

होरी—(**सहम कर**) तलाशी....

[**सब एक दूसरे को देखते हैं, फुसफुसाते हैं**]

पटेश्वरी—यह सब कमाने के ढंग हैं !

पटेश्वरी—और आया क्यों है । जव आया है तो विना कुछ लिये-दिये थोड़े ही जायेगा !

झिंगुरीसिंह—(**होरी से**) निकालो जो कुछ देना है । यों गला न छूटेगा ।

(**होरी पागल-सा देखता है । दारोगा चीखते हैं**)

दारोगा—कहाँ है हीरा का घर ? मैं उसके घर की तलाशी लूँगा ।

[**होरी घबराता है । दातादीन झिंगुरीसिंह आदि उसे बाहर ले जाते हैं । पटेश्वरी दरोगा के पास जाता है ।**]

पटेश्वरी—तालाशी लेकर क्या करेंगे हुजूर, उसका भाई तावेदारी के लिये हाजिर है।

दारोगा—(**इधर-उधर देखकर अलग को**) कैसा आदमी है ?

पटेश्वरी—बहुत ही गरीब हुजूर। भोजन का भी ठिकाना नहीं।

दारोगा—सच !

पटेश्वरी—हाँ हुजूर, ईमान से कहता हूँ।

दारोगा—अरे तो क्या एक पचासे का भी डौल नहीं ?

पटेश्वरी—कहाँ की बात हुजूर ! दस मिल जाय तो हजार समझिये। पचास तो पचास जनम में भी मुमकिन नहीं, और वह भी जब कोई महाजन खड़ा हो जाय।

दारोगा—(**सोचकर**) तो फिर उसे सताने से क्या फायदा। मैं ऐसों को नहीं सताता जो आप ही मर रहे हों।

पटेश्वरी—(**एकदम**) नहीं हुजूर, ऐसा न कीजिए। नहीं तो फिर हम कहाँ जायँगे। हमारे पास दूसरी कौन-सी खेती है !

दारोगा—तुम इलाके के पटवारी हो जी, कैसी बातें करते हो ?

पटेश्वरी—जब ऐसा ही कोई अवसर आ जाता है तो आपकी बदौलत हम भी कुछ पा जाते हैं। नहीं तो पटवारी को कौन पूछता है।

दारोगा—अच्छा आओ तीस रुपये दिलवा दो। बीस रुपये हमारे दस तुम्हारे।

पटेश्वरी—चार मुखिया हैं। इसका ख्याल कीजिए।

दारोगा—अच्छा आधे-आधे रखो और जल्दी करो। मुझे देर हो रही है।

[होरी का प्रवेश, प्रसन्न है। अँगोछे में रुपये बंधे हैं। तभी सहसा धनिया उसके पास पहुँचती है। अब तक वह घर के द्वार से झाँकझाँक कर देख रही थी। एक बार आगे तक जाकर पटेश्वरी व दारोगा की बात

भी सुन गयी थी। ताक में थी। तुरन्त अँगोछा छीन लेती है। रुपये बिखर जाते हैं। वह फुंकारती है।]

धनिया—ये रुपये कहाँ लिये जा रहा है ? वता। घर के परानी रात-दिन मरें और दाने-दाने को तरसें, लत्ता भी पहनने को मयस्सर न हो और अँजुली भर रुपये लेकर चला है इज्जत वचाने ! ऐसी वड़ी है तेरी इज्जत ! दारोगा तलासी ही तो लेगा। ले ले जहाँ चाहें तलासी। एक तो सौ रुपये की गाय गई उस पर से यह पलेथन, वाह री तेरी इज्जत !

[**सब स्तम्भित-से खड़े देखते हैं। दारोगा जी का मुँह उतर जाता है। खिसिया कर बोलते है**]

दारोगा—मुझे ऐसा मालूम होता है कि इस शैतान की ख़ाला ने हीरा को फँसाने के लिये ख़ुद गाय को ज़हर दे दिया।

धनिया—(**हाथ मटका कर**) हाँ दे दिया। अपनी गाय थी मार डाली, किसी दूसरे का जानवर तो नहीं मारा ! तुम्हारे तहकीकात में यही निकलता है तो यही लिख दो। पहना दो मेरे हाथों में हथकड़ियाँ।

होरी—(**चीख कर**) धनिया तू नहीं गई। जा नहीं तो.... (**लपकता है**)

गोबर—(**अड़ जाता है**) अच्छा दादा, अब वहुत हुआ। पीछे हट जाओ नहीं तो कहे देता हूँ, मेरा मुँह न देखोगे। तुम्हारे ऊपर हाथ न उठाऊँगा। ऐसा कपूत नहीं हूँ। यहों गले में फाँसी लगा लूंगा।

[**होरी पीछे हटता है, धनिया शेर होती है**]

धनिया—तू हट जा गोवर, देखूँ तो क्या करता है मेरा। दारोगा जी वैठे हैं। इसकी हिम्मत देखूँ। वड़ा वीर है तो किसी मर्द से लड़। जिसकी वाँह पकड़ कर लाया उसे मारकर वहादुर न कहलायेगा। सम्भाल अपना घर। समझता होगा इसे रोटी कपड़ा देता हूँ ! देख तो इसी गाँव में तेरी छाती पर मूंग दल कर रहती हूँ कि नहीं....

[होरी फिर सिर झुका लेता है। लोग रुपये चुनते हैं और दारोगा जी चलने का इशारा करते हैं। धनिया और तेज होती है।]

धनिया—जिसके रुपये हों, ले जाकर उसे दे दो। हमें किसी से उधार नहीं लेना है। हम बाकी चुकाने को पचीस रुपये माँगते थे तो किसी ने न दिया। आज अंजुली भर रुपये ठनाठन निकाल कर दे दिये, वांट बखरा होने वाला था न ! ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले !

[वह तेज होती हुई अन्दर जाती है। नेता लोग धीरे-धीरे बाहर जाते हैं। दारोगा जी जाते-जाते कहते हैं]

दारोगा—औरत है दिलेर।

पटेश्वरी—दिलेर क्या हुजूर, कर्कशा है। ऐसी औरत को तो गोली से मार दे।

दारोगा—तुम लोगों का काफिया तंग कर दिया उसने। चार-चार तो मिलते ही।

पटेश्वरी—हुजूर के भी तो पन्द्रह थे।

दारोगा—मेरे कहाँ जा सकते है। वह न देगा गाँव के मुखिया देंगे और पन्द्रह रुपये की जगह पूरे पचास देंगे। आप चटपट इन्तजाम कीजिये।

पटेश्वरी—(**हंस कर**) हुजूर वड़े दिल्लगीवाज़ हैं।

दारोगा—(**कड़क कर**) यह खुशामद फिर करना। इस वक्त तो मुझे पचास रुपये दिलवाइये नकद। मैं पन्द्रह मिनट का समय देता हूँ। अगर इतनी देर में पूरे पचास न आये तो तुम चारों के घर की तलाशी होगी। और गण्डा सिंह को जानते हो ? उसका मारा पानी भी नहीं माँगता। डाके में सारे गाँव को कालेपानी भेजवा सकता हूँ।

[वह बाहर जाता है। नेता लोगों के मुँह पर हवाइयां उड़ती हैं और परदा गिरने लगता है। उठता है तो चारों बोलते हैं]

दातादीन—मेरा सराप न पड़े तो मुँह न दिखाऊँ।

पटेश्वरी—ऐसा धन कभी फलते नहीं देखा।

झिंगुरीसिंह—भगवान न जाने कहाँ हैं कि अन्धेर देख कर भी पापियों को दण्ड नहीं देतें।

[**परदा पूरा गिर जाता है**]

*

अंक दो

पहला दृश्य

[मंच पर रात का अँधेरा है। पृष्ठभूमि में जुगनू- से चमकते हैं। शीत है, होरी के घर का द्वार नहीं दिखायी देता है। दूसरी ओर मंच पर होरी फटा कम्बल लपेटे धनिया के साथ प्रवेश करता है। मिट्टी के तेल की ढिबरी जल रही है। दोनों बातें कर रहे हैं]

होरी—बात क्या है ? बोलती क्यों नहीं। गोबर को भेज कर मुझे क्यों नहीं बुलवा लिया ?

धनिया—(पास बैठ कर) गोबर ने मुँह में कालिख लगा दी, उसकी करनी क्या पूछते हो ?

होरी—क्या हुआ ? क्या किसी से मार-पीट कर बैठा ?

धनिया—अब मैं क्या जानूँ, क्या कर बैठा, चल कर पूछो उसी राँड़ से।

होरी—किस राँड़ से ? क्या कहती है तू, बौरा तो नहीं गयी ?

धनिया—हाँ, बौरा क्यों न जाऊँगी। बात ही ऐसी हुई है कि छाती दुगुनी हो जाय !

होरी—साफ साफ क्यों नहीं कहती ? किस राँड़ को कह रही है ?

धनिया—उसी झुनिया को, और किसको।

होरी—तो झुनिया क्या यहाँ आयी है ?

धनिया—और कहाँ जाती, पूछता कौन ?

होरी—गोबर क्या घर में नहीं है ?

धनिया—गोबर का कहीं पता नहीं। जाने कहाँ भाग गया। कई

महीने का पेट है। न रहता तो अभी बात न खुलती। चुड़ैल ने लेके मेरे लड़के को चौपट कर दिया।

होरी—लाया तो वही होगा ?

धनिया—हाँ, कुछ दूर तो आगे-आगे आता रहा फिर न जाने किधर सरक गया। यह पुकारती रही। न लौटा तो मेरे पास आयी। बैठी रो रही है। मैं तुमसे कहे देती हूँ मैं उसे अपने घर में न रक्खूँगी। गोबर को रखना हो अपने सिर पर रखे।

होरी—उसे घर में आने ही न देना चाहिए था।

धनिया—सब कुछ करके हार गयी। टलती नहीं, धरना दिये बैठी है।

होरी—अच्छा चल, देखूँ कैसे नहीं उठती। घसीट कर बाहर निकाल दूँगा।

[दोनों मंच के बीच में आ जाते हैं। और होरी के घर के द्वार पर प्रकाश चमकता है। धनिया ठिठक कर होरी का हाथ पकड़ती है]

धनिया—देखो, हल्ला न मचाना, नहीं तो सारा गाँव जाग उठेगा और बात फैल जायगी।

होरी—(**कठोर**) मैं कुछ नहीं जानता। हाथ पकड़ कर घसीट लाऊँगा और गाँव के बाहर कर दूँगा।

धनिया—(**पूर्वतः**) तुम उसका हाथ पकड़ोगे तो वह चिल्लायेगी।

होरी—तो चिल्लाया करे।

धनिया—मुदा इतनी रात गये इस अँधेरे सन्नाटे में जायगी कहाँ, यह तो सोचो।

होरी—जाय जहाँ उसके सगे हों। हमारे घर में उसका क्या रखा है। मैं तो गोबर को भी निकाल बाहर करूँगा। क्यों अपने मुँह में कालिख लगवाऊँ।

धनिया—(**गम्भीर**) कालिख जो लगनी थी वह तो अब लग चुकी।

ग़ोबर ने नैया डुबो दी ।

होरी—गोबर ने नहीं डुबोयी, डुबोयी इसी ने । वह तो बच्चा था । इसके पंजे में आ गया ।

[**बातें करते-करते द्वार पर आ जाते हैं**]

धनिया—किसी ने डुबोयी, अब तो डूब गयी । (**सहसा होरी के गले में बाँह डाल कर**) देखो तुम्हें मेरी सौंह उस पर हाथ न उठाना । वह तो आप ही रो रही है । भाग की खोटी न होती तो यह दिन ही क्यों आता ।

[**होरी ठिठकता है, धनिया को थपथपाता है । फिर दोनों किवाड़ों के दराज से झांकते हैं और फिर एक दूसरे को देखते हैं । फिर सहसा होरी किवाड़ खोल देता है । तेल की कुप्पी का प्रकाश मंच पर पड़ता है और उसी के साथ कांपती, रोती झुनिया आगे आती है**]

झुनिया—कौन ? दादा....(**पैरों पर गिर पड़ती है**) दादा, अब तुम्हारे सिवाय मुझे दूसरा ठौर नहीं, चाहे मारो, चाहे काटो लेकिन अपने द्वार से दुरदुराओ मत ।

होरी—(**प्यार से पीठ पर हाथ फेरता हुआ**) डर मत बेटी, डर मत । तेरा घर है, तेरा द्वार है, तेरे हम हैं । आराम से रह । हमारे रहते कोई तुझे तिरछी आँखों न देख सकेगा । भोज-भात जो लगेगा, वह हम सब दे लेंगे, तू खातिर जमा रख ।

झुनिया—(**और भी पैरों से चिपटती है**) दादा, अब तुम्हीं मेरे बाप हो और अम्माँ तुम्हीं मेरी माँ हो । मैं अनाथ हूँ । मुझे सरन दो, नहीं मेरे काका और भाई कच्चा ही खा जायँगे ।

धनिया—तू चल घर बैठ, मैं देख लूँगी काका और भैया को । संसार में उन्हीं का राज नहीं है । बहुत करेंगे, अपने गहने ले लेंगे । फेंक देना उतार कर ।

होरी—क्यों बेटी तुझे कुछ मालूम है, गोबर किधर गया है ?

झुनिया—(सिसकती है) मुझसे तो कुछ नहीं कहा। मेरे कारण तुम्हारे ऊपर....(कंठावरोध)

होरी—जब तूने आज उसे देखा तो कुछ दुखी था ?

झुनिया—बातें तो हँस-हँसकर कर रहे थे। मन का हाल भगवान जाने।

होरी—तेरा मन क्या कहता है, है गाँव में ही कि कहीं बाहर चला गया ?

झुनिया—मुझे तो शंका होती है, कहीं बाहर चले गये हैं।

होरी—यही मेरा मन कहता है। कैसी नादानी की। हम उसके दुसमन थोड़े ही थे। जब भली या बुरी एक बात हो गई तो उसे निभानी ही पड़ती है। इस तरह भाग कर तो इसने हमारी जान आफत में डाल दी।

धनिया—(**झुनिया को अन्दर ले जाती है**) कायर कहीं का। जिसकी बाँह पकड़ी उसका निबाह करना चाहिये कि मुंह में कालिख लगा कर भाग जाना चाहिये। अब जो आये तो घर में न पैठने दूँ !

[**दोनों अन्दर जाती हैं। होरी वहीं पुआल पर चिन्ता की मुद्रा में बैठ जाता है। यहीं परदा गिरता है।**]

दूसरा दृश्य

[**मंच पर पंचायत का दृश्य। होरी के घर के सामने बहुत लोग बैठे हैं ! हुक्का चिलम चल रहा है। पंच गरदन हिला-हिलाकर सलाह करते हैं। फिर होरी की पुकार होती है।**]

पटेश्वरी—होरी को बुलाया जाय। वह पंचायत का फैसला सुन ले।

[**होरी और धनिया का सिर झुकाये अन्दर से प्रवेश**]

झिंगुरीसिंह—पंचायत ने तुम्हारे मामले पर खूब गौर किया है।

तुमने उस कुलटा को घर में रख कर समाज में विष बोया है। अगर गाँव में यह अनीति चली तो किसी की आवरू सलामत न रहेगी। झुनिया को देख कर दूसरी विधवाओं का मन वढ़ेगा। पंचायत यह अनीति नहीं देख सकती। उसने तुम पर सौ रुपये नकद और तीन मन अनाज डाँड़ लगाने का फैसला किया है।

धनिया—(**रुँधा कंठ**) पंचों, गरीव को सता कर सुख न पाओगे। हम तो मिट जायँगे लेकिन मेरा सराप तुमको जरूर-से-जरूर लगेगा। मुझसे इतना कड़ा जरीवाना इसीलिये लिया जा रहा है कि मैंने अपनी वहू को क्यों—अपने घर में रख लिया। क्यों उसे सड़क की भिखारिन नहीं बना दिया। यही न्याय है, एँ....

होरी—(**डांट कर**) तू क्यों बोलती है धनिया? पंच में परमेश्वर रहते हैं। उनका जो न्याय है वह सिर आँखों पर। पंचों, हमारे पास जो कुछ है, वह अभी खलिहान में है। एक दाना भी घर में नहीं आया। जितना चाहे ले लो....

धनिया—(**दांत कटकटाकर**) कैसे ले लो। मैं न एक दाना अनाज दूँगी, न एक कौड़ी डाँड। जिसमें वूता हो चल कर मुझ से ले। हमें नहीं रहना है विरादरी में। विरादरी में रह कर हमारी मुकुत न हो जायगी।

होरी—(**हाथ जोड़ कर**) धनिया तेरे पैरों पड़ता हूँ, चुप रह। हम सव विरादरी के चाकर हैं, उसके बाहर नहीं जा सकते। वह जो डाँड़ लगाती है उसे सिर झुका कर मंजूर कर।

धनिया—(**तेजी से घर के अन्दर जाती हुई**) कैसे मंजूर करूँ। कोई न्याय है। मैं नहीं करती। देखूँगी, कैसे डाँड़ लेते हैं।

होरी—पंचों, मुझे अपने जवान बेटे का मुँह देखना नसीब न हो, अगर मेरे पास खलिहान के अनाज के सिवा और कोई चीज हो। मैं विरादरी से दगा न करूँगा। पंचों को मेरे वाल-बच्चों पर दया आये तो

परवरिस करे नहीं मैं तो अनाज लाता हूँ। (**घर के पीछे जाता है**)

[**होरी जाता है। महतो भी धीरे-धीरे जाते हैं। फिर होरी एक किसान के साथ अनाज ढो-ढो कर जाता है। दोनों एक ओर से आते हैं दूसरी ओर से जाते हैं। कभी-कभी होरी बोलता है**]

होरी—यह जो अब के इतना अनाज हुआ सब धनिया के पुरुषार्थ से हुआ। भुनिया भीतर का सारा काम कर लेती थी और धनिया अपनी लड़कियों के साथ खेती में जुट गयी थी।

किसान—यह भी कहने की बात है महतो, सारा गाँव जानता है।

होरी—सोचा था गेहूँ और तेलहन से लगान की एक किस्त अदा हो जायगी। थोड़ा-थोड़ा सूद भी दे देंगे। जौ खाने के काम में आयेगा। वह सारी आशा मिट्टी में मिल गयी।

[**जाता है, खाली करके लौटता है। दूसरी बार आता है तो धनिया भगड़ती आती है**]

धनिया—अच्छा अब रहने दो, ढो चुके बिरादरी की लाज। बच्चा के लिए भी कुछ छोड़ोगे कि सब बिरादरी के भाड़ में भोंक दोगे ?

होरी—(**हाथ छुड़ा कर**) यह न होगा धनिया, पंचों की आँख बचा कर एक दाना भी रख लेना मेरे लिए पाप है। फिर पंचों के मन में दया उपजेगी तो....

धनिया—(**तिलमिलाकर**) दया उपजेगी ! यह पंच नहीं राछस हैं, पक्के राछस ! ये सब हमारी जगह-जमीन छीन कर माल मारना चाहते हैं। तुम इन पिचाशों से दया की आशा रखते हो !

होरी—(**टोकरी सिर पर रखता हुआ**) पर पंचों से पूछे बिना एक दाना भी न लूंगा।

धनिया—(**टोकरी पकड़कर**) तुम न लेना पर इसे तो मैं न ले जाने दूँगी। चाहे तुम मेरी जान ही ले लो। तुमने अकेले ही सब कुछ नहीं कर लिया है। मैं भी अपनी बच्चियों के साथ सती हुई हूँ।

होरी—धनिया तू हट जा....

धनिया—मैं नहीं हटूँगी। सीधे टोकरी यहाँ रख दो नहीं तो आज से सदा के लिए नाता टूट जायगा। कहे देती हूँ।

[**होरी क्षण भर सोचता है। फिर एकदम टोकरी छोड़ देता है**]

होरी—तू ठीक कहती है धनिया। दूसरों के हिस्से पर मेरा कोई जोर नहीं है। जो कुछ बचा है वह ले जा। मैं जाकर घर रेहन रखने का प्रबन्ध करता हूँ।

धनिया—(**क्रोध में**) क्या कहा घर रेहन रखोगे ? मैं कहती हूँ तुम इतने भोंदू क्यों हो ? तुम्हारे मुँह में जीभ नहीं है कि उन पंचों से पूछते तुम कहाँ के बड़े धर्मात्मा हो। दातादीन का लड़का मातादीन एक चमारिन से फँसा है। पटेश्वरी ने ब्याज खा-खाकर हजारों की सम्पत्ति बना ली है। झिंगुरी सिंह की दोनों औरतें घूँघट की ओट सत्तर घाट का पानी पीती हैं।

होरी—(**जोर से**) चुप रह, बहुत बढ़-बढ़ कर न बोल। बिरादरी से अपराध तो क्षमा करवाना ही पड़ेगा।

धनिया—क्यों करवाना पड़ेगा ? किसी के घर चोरी की है, किसी का माल काटा है ? मेहरिया रख लेना पाप नहीं, हाँ रख के छोड़ देना पाप है। मेरे तो भाग फूट गये थे कि तुम जैसे मर्द से पाला पड़ा। कभी सुख की रोटी न मिली।

होरी—मैं तेरे बाप के पाँव पड़ने गया था ? वही तुझे मेरे गले बाँध गया।

धनिया—पत्थर पड़ गया था उनकी अक्कल पर और उन्हें क्या कहूँ। न जाने क्या देख कर लट्टू हो गये। ऐसे कोई बड़े सुन्दर भी तो न थे तुम।

होरी—(**मुस्करा कर**) मैं न था तो न सही, तुम तो थीं और अब तुम्हारा पोता सुन्दर है कि नहीं। अनाज गया, घर भी चला जाय पर....

लाख रुपये का बालक तो मिल गया। उसे तो कोई न छीन लेगा।

धनिया—उसे कौन छीन सकता है। अब तो बस गोबर घर लौट आये, धनिया अलग झोपड़ी में भी सुखी रहेगी।

[**दोनों के चेहरों पर प्रकाश चमकता है। दोनों अन्दर जाते हैं। और एक क्षण बाद भोला तेजी से वहाँ प्रवेश करता है।**]

भोला—महतो; होरी महतो।

[**होरी अन्दर से आता है**]

होरी—आओ, आओ, भोला महतो।

भोला—आया तो हूँ। मैं पूछता हूँ कि यही है तुम्हारा कौल। इसी मुँह से तुमने ऊख पेर कर मेरे रुपये देने का वादा किया था। अब तो कभी की ऊख पेर चुके। लाओ रुपये मेरे हाथ में।

होरी—महतो तुम तो जानते हो इस बार ऊख हुई कहाँ थी।

भोला—मैं कुछ नहीं जानता।

होरी—नहीं महतो, इस बार कुछ नहीं मिला। दाने-दाने की तंगी हो रही है।

भोला—मैंने कह दिया मैं कुछ नहीं जानता। मैं रुपये लेकर जाऊँगा।

होरी—(**झुंझला कर**) तो महतो, इस वखत तो मेरे पास रुपये नहीं हैं और न मुझे कहीं उधार ही मिल सकते हैं। मैं कहाँ से लाऊँ। विश्वास न हो, तो घर में आकर देख लो। जो कुछ मिले उठा ले जाओ।

भोला—(**कठोर स्वर**) मैं तुम्हारे घर में क्यों तलाशी लेने जाऊँ। और न मुझे इससे मतलब है कि तुम्हारे पास रुपये हैं या नहीं।

होरी—तो तुम्हें काहे से मतलब है ?

भोला—रुपयों से। तुमने ऊख पेर कर रुपये देने को कहा था। ऊख पेर चुके। अब मेरे रुपये मेरे हवाले करो।

होरी—रुपये मेरे पास नहीं हैं। अब जो कहो वह करूँ।

भोला—मैं क्या कहूँ ?

होरी—मैं तुम्हीं पर छोड़ता हूँ।

भोला—मैं तुम्हारे दोनों बैल खोल ले जाऊँगा।

[**होरी विस्मय से कांप उठता है।**]

होरी—क्या बैल ले लोगे !

भोला—और क्या ?

होरी—(**दीन स्वर**)—दोनों बैल ले लोगे मेरा सर्वनास न हो जायगा !

भोला—तुम्हारे बनने-बिगड़ने की मुझे परवा नहीं है। मुझे अपने रुपये चाहिए।

होरी—जो मैं कह दूँ मैंने रुपये दे दिये।

भोला—(**सहमता है फिर तेज होता है**) अगर तुम हाथ में गंगा-जली लेकर कह दो कि मैंने रुपये दे दिये तो सबर कर लूँगा।

होरी—कहने को मन तो चाहता है लेकिन कहूँगा नहीं।

भोला—तुम कह ही नहीं सकते।

होरी—हाँ भइया, मैं नहीं कह सकता। हँसी कर रहा था। (**एक क्षण ठिठक कर**) लेकिन भोला, तुम मुझ से बैर क्यों पाल रहे हो। झुनिया मेरे घर में आ गयी तो मुझे कौन-सा सरग मिल गया।

[**तभी तेजी से धनिया अन्दर से आती है**]

धनिया—मिल गया सरग। महतो बैल माँग रहे हैं तो दे क्यों नहीं देते। हमारे हाथ तो नहीं काट लेंगे। अब तक अपनी मजदूरी करते थे अब दूसरों की मजूरी करेंगे। मैं न जानती थी यह हमारे बैरी हैं नहीं तो गाय लेकर अपने सिर बिपत क्यों लेती। उसी निगोड़ी का पौरा जिस दिन से आया घर तहस-नहस हो गया।

होरी—लड़का हाथ से गया। दो सौ रुपया डाँड़ अलग भरना पड़ा।

भोला—तुम अपने दो सौ को रोते हो, यहाँ लाखों रुपयों की आबरू

बिगड़ गयी। तुम्हरी कुशल इसी में है कि उसे घर से निकाल दो, फिर न हम बैल मांगेंगे, न गाय का दाम मांगेंगे। उसने हमारी नाक कटवाई है तो मैं भी उसे ठोकरें खाते देखना चाहता हूँ।

होरी—क्या कहते हो, महतो। वह तुम्हारी बेटी है।

भोला—हाँ, वह मेरी बेटी है। मैंने उसे कभी बेटी से कम नहीं समझा। लेकिन इस मुँहजली ने सात पुस्त का नाम डुबा दिया। और तुम उसे घर में रखे हुए हो। यह छाती पर मूँग दलना नहीं तो क्या है।

धनिया—(**दृढ़ता से**) महतो, मेरी भी सुन लो। जो बात तुम चाहते हो, वह न होगी, सौ जनम न होगी। झुनिया हमारी जान के साथ है।

भोला—तुम उसे घर से न निकालोगे ?

धनिया—नहीं। तुम बैल ही तो ले जाने को कहते हो तो ले जाओ, अगर इससे तुम्हारी कटी नाक जुड़ती हो तो जोड़ लो। पुरखों की आबरू बचती हो तो बचा लो।....तुम अब बूढ़े हो गये महतो, पर आजभी तुम्हें सगाई की धुन सवार है, फिर वह तो बच्चा है।

भोला—सुनते हो होरी इसकी बातें ? अब मेरा दोस नहीं। मैं बिना बैल लिये न जाऊँगा।

होरी—ले जाओ।

भोला—फिर रोना मत कि मेरे बैल खोल ले गये !

होरी—नहीं रोऊँगा।

[**भोला आगे बढ़ता है। तभी झुनिया बच्चे को गोदी में लिये तेजी से बाहर आती है और कम्पित स्वर से कहती है**]

झुनिया—काका। लो इस घर से मैं निकली जाती हूँ और जैसी तुम्हारी मनोकामना है उसी तरह भीख मांग कर अपना और बच्चे का पेट पालूंगी....

भोला—(**खिसिया कर**) दूर हो मेरे सामने से। भगवान न करे मुझे फिर तेरा मुँह देखना पड़े। कुलच्छनी कहीं की ! अब तेरे लिए डूब मरना ही उचित है।

[**तभी धनिया दौड़ कर झुनिया को पकड़ती है**]

धनिया—तू कहाँ जाती हैं बहू, चल घर में। यह तेरा घर है, हमारे जीते जो भी और हमारे मरने के पीछे भी। डूब मरे वह, जिसे अपनी सन्तान से बैर हो। इस भले आदमी को मुँह से ऐसी बात कहते लाज भी नहीं आती। मुझ पर धौंस जमाता है नीच। ले जा, बैलों का रकत पी....

झुनिया—(**रोती हुई**) अम्माँ, जब अपना बाप हो के मुझे धिक्कार रहा है तो मुझे डूब ही मरने दो। मुझ अभागिनी के कारण तो तुम्हें दुख ही मिला। तुमने इतने दिन मुझे जिस प्रेम से रखा, माँ भी नहीं रखती। भगवान मुझे फिर जनम दे तो तुम्हारी कोख से दे। यही मेरी अभिलाषा है।

धनिया—यह तेरा बाप है ? तेरा बैरी है, हत्यारा ! माँ होती; तो अलबत्ते उसे कलक होती। ला सगाई। मेहरिया जूतों से न पीटे तो कहना !

[**झुनिया को पकड़ कर घर में ले जाती है। भोला बैलों की तरफ जाता है। होरी विमूढ़ शून्य में ताकता खड़ा रहता है। दो क्षण बाद तेज-तेज आवाजें उठती हैं**]

दातादीन—यह तुमने क्या अनर्थ किया भोला ? उसके बैल खोले लिए जाते हो।

पटेश्वरी—बैल खोल लाने का तुम्हें क्या अख्तियार है ? अभी

फौजदारी में दावा कर दे तो बँधे फिरो।

दातादीन—तुम सब खड़े ताकते क्या हो, मार के भगा दो इसको। हमारे गाँव के बैल खोल ले जायगा !

भोला—मुझे मारते क्यों हो। होरी ने खुद दिये हैं; पूछ लो।

[होरी उधर बढ़ता है, तभी वे सब मंच पर आते हैं]

भोला—ईमान से कहना, होरी महतो, मैंने बैल जबरदस्ती खोल लिये ?

दातादीन—यह कहते हैं कि होरी ने अपनी खुशी से बैल मुझे दे दिये। हमीं को उल्लू बनाते हैं।

होरी—यह मुझ से कहने लगे या तो झुनिया को घर से निकाल दो, या मेरे रुपये दो, नहीं तो मैं बैल खोल ले जाऊँगा। मैंने कहा मैं बहू को तो न निकालूंगा, न मेरे पास रुपये हैं। अगर तुम्हारा धरम कहे तो बैल खोल लो। बस मैंने इसके धरम पर छोड़ दिया और इन्होंने....

पटेश्वरी—और इन्होंने बैल खोल लिये। तब काहे की जबरदस्ती। उसके धरम ने कहा लिये जाता है। ले जाओ भैया, बैल तुम्हारे हैं।

[सब सिर झुकाये जाते हैं। भोला अकड़ के सब को देखता है। होरी पूर्ववत् शून्य में ताकता रहता है। परदा गिरता है।]

तीसरा दृश्य

[मंच पर होरी के घर का द्वार। मार्ग तथा अन्य घरों के द्वार दिखायी देते हैं। सोना बाहर से आती है, अन्दर जाने को होती है कि ठिठक जाती है। अन्दर से मातादीन आता है। पीछे-पीछे झुनिया है। मातादीन सोना को देखता चला जाता है। सोना के भाव बिगड़ते हैं।]

सोना—जब से भोला हमारे बैल खोल ले गये और दादा ने दातादीन पण्डित के साथ साझे की खेती शुरू की मातादीन भी यहाँ आने लगे। बड़ा खराब आदमी है।

झुनिया—मुझे तो बड़ा भला आदमी लगता है। क्या खराबी है उसमें?

सोना—तुम नहीं जानतीं? सिलिया चमारिन को रखे हुए है।

झुनिया—तो इसी से आदमी खराब हो गया?

सोना—और काहे से आदमी खराब कहा जाता है?

झुनिया—तुम्हारे भैया भी तो मुझे लाये हैं। वह भी खराब आदमी हैं?

सोना—मेरे घर में फिर कभी आयगा तो दुतकार दूँगी।

झुनिया—और जो उससे तुम्हारा ब्याह हो जाय?

सोना—(लजाकर) तुम तो भाभी गाली देती हो!

झुनिया—क्यों, इसमें गाली की क्या बात है?

सोना—मुझसे बोले तो मुँह झुलस दूँ।

[धनिया का प्रवेश]

धनिया—तुम यहाँ खड़ी क्या कर रही हो? तुम्हारे दादा आते होंगे।

सोना—अरे हाँ अम्माँ। आज तो दादा बहुत से रुपये लायँगे।

झुनिया—मिल खुल जाने का यही फायदा है। अच्छा किया जो

दादा ने ऊख बेच दी। गुड़ के भाव चीनी मिलेगी तो गुड़ लेगा ही कौन ? अब कम-से-कम सौ रुपये की आसा है।

सोना—इतने में एक मामूली गोई आ जायगी।

धनिया—आ तो जायगी पर महाजनों से बचे तब न। इस झिंगुरी के सभी रिनियाँ हैं। देखा नहीं, दुलारी सहुआइन, मंगरू साह सब ऊख काटते वक्त कैसे भागे आये थे। अच्छा आओ, अन्दर आओ, कुछ चना-चबेना तो चाहिए ही। कुछ तो लायेंगे ही।

[सब अन्दर जाती हैं। एक क्षण बाद होरी मुंह लटकाये आता है। सामने से एक किसान ताड़ी पिये झूमता आता है]

किसान—झिंगुरिया ने सारे का सारा ले लिया, होरी काका। चबेना को भी एक पैसा न छोड़ा। हत्यारा कहीं का। रोया, गिड़गिड़ाया पर उस पापी को दया नहीं आयी।

होरी—ताड़ी पिये हो, उस पर कहते हो एक पैसा भी न छोड़ा।

किसान—साँझ हो गयी; जो पानी की बूंद भी कण्ठ तले गई हो, तो गौ मांस बराबर। एक इकन्नी मुँह में दबा ली थी। उसकी ताड़ी पी ली। सोचा साल भर पसीना गारा है तो एक दिन ताड़ी पी लूं, मगर सच कहता हूँ नसा नहीं है। एक आने में क्या नसा होगा। हाँ, झूम रहा हूँ जिसमें लोग समझें खूब पिये है। बड़ा अच्छा हुआ काका, बेबाकी हो गयी। बीस लिये थे उसके एक सौ साठ भरे, कुछ हद है।

[बोलता हुआ जाता है। होरी एक क्षण उसे देखता है तभी रूपा आती है। चिल्लाती है]

रूपा—दादा आ गये, दादा आ गये। (**अन्दर जाती है और दूसरे ही क्षण सब आती हैं। रूपा पानी लिये है। सोना चिलम लिये है। धनिया चबेना और नमक लायी है। झुनिया भी चौखट पर खड़ी है।**)

सब **मुस्करा कर उत्सुकता से देखते हैं पर होरी बैठा है, उदास, ग्लानि-ग्रस्त गुमसुम**)

धनिया—कितने की तौल हुई।

होरी—एक सौ वीस मिले, पर सब वहीं लुट गये। धेला भी न वचा।

[**सब सन्न रह जाते हैं**]

धनिया—क्या ? एक धेला भी न वचा ?

होरी—नहीं।

धनिया—(**तेज होकर**) तुम जैसा घामड़ आदमी भगवान ने क्यों रचा। तुम्हारे साथ जिन्दगी तलख हो गई। उठा कर सारे रुपये वहनोइयों को दे दिये। अब गोईं कहाँ से आयगी ? हल में क्या तुम मुझे जोतोगे ? या आप जुतोगे ?

होरी—जो होगा देखा जायगा।

धनिया—कैसे देखा जायगा। पूस की ठण्ड है और किसी के देह पर लत्ता नहीं, ले जाओ सबको नदी में डुवा दो। कव तक पुआल में घुस कर रात काटोगे और पुआल में घुस भी लें तो पुआल खाकर रहा तो न जायगा।

होरी—(**सिर झुकाये**) मजूरी तो मिलेगी। मजूरी करके खायँगे।

धनिया—कहाँ है इस गाँव में मजूरी ? और कौन मुँह लेकर मजूरी करोगे ? महतो नहीं कहलाते !

होरी—(**चिलम के कश लगाता हुआ**) मजूरी करना कोई पाप नहीं है। मजूर बन जाय तो किसान हो जाता है। किसान विगड़ जाय तो मजूर हो जाता है। मजूरी करना भाग्य में न होता तो यह सब विपत क्यों आती। क्यों गाय मरती, क्यों लड़का नालायक....

धनिया—(**एकदम सबसे**) तुम सब-की-सब क्यों घेरे खड़ी हो ! वह और हैं जो हाट-वाज़ार से आते हैं, तो वाल-बच्चों के लिए दो

चार पैसे की कोई चीज लिये आते हैं। इसी कमाई में बरकत नहीं होती। जो खरच करते हैं, उन्हें, मिलता है। जो न खा सकें, न पहन सकें उन्हें रुपये मिलें ही क्यों? जमीन में गाड़ने के लिए?

[**सब जाती हैं**]

होरी—(**खिलखिला कर**) कहाँ है वह गड़ी हुई थैली!

धनिया—जहाँ रखी है वहीं होगी! चार पैसे की कोई चीज लाकर बच्चों के हाथ पर रख देते तो पानी में न पड़ जाते। झिंगुरी से तुम कह देते कि एक रुपया मुझे दे दो, नहीं तो एक पैसा न दूँगा, जाकर अदालत में लेना तो वह जरूर दे देता। (**जाती है**)

होरी—(**लजाकर**) हाँ, यह तो चूक हो गयी। बहुत होता बकाया पर दो चार आना सूद ले लेते। मगर अब तो चूक हो ही गयी। अच्छा (**शंख बजता है**) ओहो ठाकुर ध्यानसिंह की कथा पूरी हो गयी। आरती हो रही है। जाना चाहिये पर पास में एक पैसा भी नहीं। खाली हाथ आरती कैसे लूंगा। सबकी आँखों में हेठा कैसे बनूंगा। मर्यादा कैसे तोड़ूंगा। (**अन्दर की ओर जाता है लेकिन दूसरे ही क्षण लौटता है**) नहीं, मैं मर्यादा की गुलामी क्यों करूँ! मर्यादा के पीछे आरती का पुण्य क्यों छोड़ूं! लोग हँसेंगे, हँस लें। परवा नहीं। भगवान कुकर्म से बचाये रखे, मैं और कुछ नहीं चाहता।

(**दृढ़ता से बाहर जाता है। परदा गिरता है।**)

चौथा दृश्य

[**वही स्थान। परदा उठने पर कई व्यक्ति होरी को उठाये लाते हैं। धनिया, रूपा, सोना, झुनिया सब रोती हुई साथ आती हैं। धनिया खाट लाकर बिछाती है—रोती है।**]

धनिया—अरी सोना, दौड़ कर पानी ला और जाकर सोभा से कह दे, दादा बेहाल हैं। हाय भगवान अब मैं कहाँ जाऊँ।....अब मैं

किसकी होकर रहूँगी, कौन मुझे धनिया कह कर पुकारेगा !

पटेश्वरी—क्या करती है धनिया, होश संभाल। होरी को कुछ नहीं हुआ। गर्मी से अचेत हो गये हैं। अभी होश आया जाता है।

धनिया—क्या करूँ लाला, जी नहीं मानता। भगवान ने सब कुछ हर लिया। मैं सबर कर गयी। अब सबर नहीं होता। हाय रे मेरा हीरा।

[**सोना पानी लाती है। लाला छींटे देते हैं। धनिया व बेटियाँ हवा करती हैं। होरी आंखें खोल कर उड़ती नज़र से ताकता है। धनिया विह्वल** होकर **लिपट-सी जाती है।**]

धनिया—अब कैसा जी है तुम्हारा ? मेरे तो परान नहों में समा गये थे।

होरी—(**कातर स्वर**) अच्छा हूँ। न जाने कैसा जी हो गया था !

धनिया—(**सस्नेह-ताड़ना**) देह में दम तो है नहीं, काम करते हो जान देकर। बच्चों का भाग था नहीं तो तुम तो ले ही डूबे थे।

पटेश्वरी—(**हंस कर**) धनिया तो रो-पीट रही थी।

होरी—सचमुच तू रोती थी धनिया ?

धनिया—इन्हें बकने दो तुम। पूछो यह क्यों कागद छोड़ कर घर से दौड़े आये थे ?

पटेश्वरी—(**चिढ़ा कर**) तुम्हें हीरा, हीरा कह कर रोती थी। अब लाज के मारे मुकरती है। छाती पीट रही थी।

होरी—(**करुण स्वर**) पगली है और क्या ? अब न जाने कौन-सा सुख देखने के लिए मुझे जिलाये रखना चाहती है !

पटेश्वरी—जीने को अभी क्या है होरी, ऐसे हिम्मत क्यों हारते हो। अच्छा मैं तो जाता हूँ।

[**जाता है। इसी समय कुत्तों के भूँकने की आवाज़ आती है। सभी**

उधर देखने लगते हैं। सहसा रूपा, सोना उधर बढ़तीहैं । रूपा चीखती हुई भागती है।]

रूपा—भैया आये, भैया आये (भागती है)

सोना—भैया (दो कदम बढ़ कर रुक जाती है)

धनिया—(विह्वल) गोबर !

[झुनिया घूँघट उठा कर देखती है और द्वार पर खड़ी हो जाती है। गोबर आता है। नया रूप, नया रंग, शहरी कपड़े। आकर माँ-बाप के चरण छूता है।]

गोबर—अम्माँ....

धनिया—गोबर बेटा, बेटा, (कंठ रुँध जाता है) जुग-जुग जियो। खुश रहो।

[कई क्षण छाती से लगाये रहती है। फिर गोबर रूपा को गोद में उठा कर प्यार करता है। सोना को थपथपाता है। होरी मुँह फेरे लेटा है।]

गोबर—अम्माँ, दादा को क्या हुआ ?

धनिया—कुछ नहीं बेटा, जरा सिर में दर्द है। चलो कपड़े उतारो। कहाँ थे तुम, इतने दिन राह देखते-देखते आँखें फूट गयीं।

गोबर—(शर्मा कर) कहीं दूर नहीं गया था अम्माँ। यहीं लखनऊ में तो था।

धनिया—और इतने नियरे रह कर भी कभी एक चिट्ठी न लिखी।

[इसी बीच में सोना, रूपा सामान खोल कर फैलाती हैं। धनिया भी उधर बढ़ती है। बालक झुनिया की गोद में लपकना चाहता है पर वह उतरने नहीं देती।]

सोना—भैया तुम्हारे लिए एक कंघी लाये भाभी।

झुनिया—(उपेक्षा से) मुझे ऐना-कंघी न चाहिए। अपने पास

रखे रहें।

रूपा—(**टोपी निकालकर**) ओहो ! यह तो चुन्नू की टोपी है। **(बच्चे को पहनाती है, झुनिया उतार फेंकती है और अन्दर जाती है। गोवर मुस्करा कर वहीं बैठ कर बक्स खोलता है।)**

गोवर—ले सोना तेरी चप्पल। रूपा तू गुड़िया ले।

सोना—अहा-हा मेरी चप्पल।

रूपा—ऊँ-ऊँ मैं भी चप्पल लूंगी। मेरे लिए चप्पल क्यों नहीं लाये ?

सोना—तू क्या करेगी चप्पल लेकर, अपनी गुड़िया से खेल। हम तो तेरी गुड़िया देख कर नहीं रोते, तू मेरा चप्पल देख कर क्यों रोती है ?

धनिया—अच्छा-अच्छा, लड़ो मत। सब उठा कर अन्दर ले चलो।

[गोबर साड़ियाँ निकालता है]

सोना—किनारदार साड़ी।

रूपा—जैसे पटेश्वरी लाला के घर पहनते हैं।

सोना—मगर है बड़ी हल्की। कै दिन चलेगी !

गोवर—यह रही दादा की धोती और यह रहा दुपट्टा।

धनिया—(**प्रसन्न होकर**) यह तुमने अच्छा किया बेटा। इनका दुपट्टा बिल्कुल तार-तार हो गया था। अच्छा-अच्छा मुँह-हाथ धो। फिर बाँट लेना। चल सोना, रूपा। उठाओ, सब-कुछ। मैं दुलारी की दूकान तक चली जाती हूँ।

[सब अन्दर जाते हैं। होरी भी गोवर का सहारा लेकर उठता है। धनिया बाहर जाने को मुड़ती है कि दुलारी उधर ही आती है।]

धनिया—अरे लो दीदी, मैं तुम्हारी दूकान पर जा रही थी। गेहूँ का आटा चाहिये। गोवर आया है।

दुलारी—हाँ, हाँ, जितना चाहे लो, चावल लो, घी लो। गोबर तो खूब कमा के आया है न ?

धनिया—अभी तो कुछ नहीं खुला, दीदी। हाँ, सबके लिए किनारदार साड़ियाँ लाया है। तुम्हारे आसिरवाद से कुसल से लौट आया, मेरे लिये तो यही बहुत है।

दुलारी—भगवान करे कुशल से रहे। माँ-बाप को और क्या चाहिए। लड़का समझदार है। दूसरे छोकरों की तरह उड़ाऊ नहीं है। (**जाते-जाते**) हमारे रुपये अभी न देती हो तो ब्याज तो दे दो। दिन-दिन बोझ बढ़ ही तो रहा है।

धनिया—सब देंगे दीदी। रुपये भी देंगे। ब्याज भी।

[**दोनों बाहर हो जाते हैं। घर के अन्दर से झुनिया और गोबर आते हैं।**]

गोबर—क्या कहा दोनों बैल खोल कर ले गये? इतनी बड़ी जबरदस्ती। और दादा कुछ बोले नहीं?

झुनिया—दादा अकेले किस-किस से लड़ते। फिर वे भलमनसी में आ गये। गाँव वाले तो नहीं ले जाने देते थे।

गोबर—तो आजकल खेतीबारी कैसे हो रही है!

झुनिया—खेतीबारी सब टूट गई। थोड़ी-सी पण्डित महाराज के साझे में है। ऊख बोई ही नहीं गयी।

गोबर—(**तेजी से बढ़ता हुआ**) तो फिर पहले मैं उन्हीं से जाकर समझता हूँ। उनकी यह मजाल कि मेरे द्वार पर से बैल खोल ले जाँय। यह डाका है, खुला हुआ डाका।

झुनिया—(**उसे खींचती है**) तो चले जाना, अभी ऐसी क्या जल्दी है। कुछ आराम कर लो, कुछ खा पी लो। सारा दिन तो पड़ा है। यहाँ बड़ी-बड़ी पंचायत हुई। पंचायत ने अस्सी रुपये डाँड़ लगाये।

गोबर—(**चकित**) अस्सी रुपये डाँड़!

झुनिया—और तीन मन अनाज ऊपर से। उसी से तो तबाही आ गयी।

गोबर—मेरा गधापन था कि घर से भागा, नहीं देखता कैसे कोई एक धेला डाँड़ लेता है। यही जी चाहता है कि लाठी उठाऊँ और पटेसरी, दातादीन, झिंगुरी सब सालों को पीट कर गिरा दूँ और उनके पेट से रुपये निकाल दूँ।

झुनिया—रुपये की गर्मी चढ़ी हुई है साइत। लाओ निकालो, देखूँ इतने दिन में क्या-क्या लाये हो।

गोबर—अभी क्या कमाया। हाँ, जब तुम चलोगी तो कमाऊँगा।

झुनिया—अम्माँ जाने देंगी तब तो....

गोबर—अम्माँ क्यों न जाने देंगी? उनसे मतलब?

झुनिया—वाह, उनकी राजी बिना कहीं न जाऊँगी। तुम तो छोड़कर चलते बने और मेरा कौन था यहाँ। वह अगर घर में न घुसने देतीं तो मैं कहाँ जाती। जब तक जीऊँगी उनका जस गाऊँगी। और तुम भी क्या परदेस ही करते रहोगे?

गोबर—और नहीं यहाँ बैठकर क्या करूँगा। कमाओ और मरो, इसके सिवा यहाँ और क्या रखा है। थोड़ी-सी अकल हो और आदमी काम करने से न डरे, तो वहाँ भूखा नहीं मर सकता। यहाँ तो अकल कुछ काम ही नहीं करती। हाँ, दादा क्यों मुझसे मुँह फुलाये हुए हैं?

झुनिया—अपने भाग बखानों कि मुँह फुलाकर छोड़ देते हैं। तुमने उपद्रव तो इतना बड़ा किया था कि उस क्रोध में पा जाते तो मुँह लाल कर देते।

गोबर—तो तुम्हें भी खूब गालियाँ देते होंगे?

झुनिया—कभी नहीं, भूल कर भी नहीं। अम्माँ तो पहले बिगड़ी थीं पर दादा ने तो कभी कुछ नहीं कहा। जब बुलाते हैं बस प्यार से। हाँ, तुम्हारे ऊपर सैकड़ों बार बिगड़ चुके हैं।

[**सहसा झिंगुरीसिंह का प्रवेश। झुनिया एकदम अन्दर जाती है**]

झिंगुरीसिंह—कब आये गोबर ? मजे में तो रहे । कहीं नौकर थे ? लखनऊ में ?

गोबर—(हेकड़ी से) लखनऊ गुलामी करने नहीं गया था । मैं व्यापार करता था ।

झिंगुरीसिंह—(अचरज से) कितना रोज पैदा करते थे ?

गोबर—यही कोई ढाई-तीन रुपये मिल जाते थे । कभी चटक गयी तो चार भी मिल गये ।

झिंगुरीसिंह—(नम्र होकर) इतनी कमाई कम नहीं बेटा, जो खरच करते बने । गाँव में तीन आने भी नहीं मिलते । भवनिया को भी कहीं कोई काम दिला दो । तुम्हारा तो मित्र है । तलब थोड़ी हो, कुछ ग़म नहीं । हाँ, चार पैसे की ऊपर की गुंजाइश हो ।

गोबर—यह ऊपरी आमदनी की चाट आदमी को खराब कर देती है ठाकुर । लेकिन हम लोगों की आदत कुछ ऐसी बिगड़ गयी है कि जब तक बेईमानी न करें पेट ही नहीं भरता । पर संसार में इलम की कदर नहीं है, ईमान को कदर है ।

[**सहसा दातादीन का प्रवेश । झिंगुरीसिंह अभिमान से गोबर को देखते हुए जाते हैं**]

दातादीन—मजे में तो रहे गोबर ? सुना वहाँ कोई अच्छी जगह पा गये हो ? मातादीन को भी किसी हीले से लगा दो न ।

गोबर—तुम्हारे घर में किस बात की कमी है महाराज । जिस ज़िजमान के द्वार पर जाकर खड़े हो जाओगे कुछ-न-कुछ मार ही लाओगे । जनम में लो, मरन में लो, सादी में लो, गमी में लो ।

दातादीन—हँ-हँ-हँ, वह तो गोबर अपना काम है ।

गोबर—अपना काम क्यों ? खेती करते हो, लेन-देन करते हो किसी से कुछ भूल-चूक हो जाय तो डाँड़ लगा कर उसका घर लूट लेते हो !

दातादीन—हँ-हँ-हँ, लखनऊ की हवा खाके तू वड़ा चंट हो गया है, गोवर। ला क्या कमा के लाया है, कुछ निकाल। सच कहता हूँ गोवर, तेरी वहुत याद ग्राती थी। ग्रव तो रहोगे कुछ दिन ?

गोवर—हाँ, ग्रभी तो रहूँगा कुछ दिन। उन पंचां पर दावा करना है जिन्होंने डाँड़ के वहाने मेरे डेढ़ सौ रुपये हजम किये हैं। देखूँ कौन मेरा हुक्का-पानी वन्द करता है ग्रौर कौन विरादरी मुझे जात वाहर करती है !

[कहता-कहता तेजी से ग्रन्दर जाता है। दातादीन ठगा सा उसे देखता है फिर सिर हिलाता हुग्रा जाता है। धनिया सामान लिये ग्राती है। ग्रन्दर जाती है। फिर रंगमंच पर समयसूचक प्रकाश का कम होना ग्रौर तेज होना। गोवर सज-धज कर बाहर जाने को ग्राता है। पीछे-पीछे होरी है।]

गोवर—दादा, जव तक ग्रपनी जोड़ी लाकर ग्रपने द्वार पर न वाँध दूँगा तव तक मुझे चैन नहीं।

होरी—(**कातर स्वर**) रार मत वढ़ाग्रो वेटा। भोला गोंई ले गये, भगवान उनका भला करें, लेकिन उनके रुपये तो ग्राते ही थे।

गोवर—(**उत्तेजित स्वर**) दादा, तुम वीच में न वोलो। उनकी गाय पचास की थी। हमारी गोंई डेढ़ सौ में ग्रायी थी। तीन साल हमने जोती फिर भी सौ की थी ही। वह ग्रपने-रुपये के लिये दावा करते, डिग्री कराते, या जो चाहते करते। हमारे द्वार से जोड़ी क्यों खोल ले गये। मेरे सामने खोल ले जाते तो देखता। तीनों को यहीं जमीन पर सुला देता। ग्रौर पंचों से तो वात तक न करता। देखता, कौन मुझे विरादरी से ग्रलग करता है लेकिन तुम वैठे ताकते रहे !

धनिया—वेटा, तुम भी तो ग्रँधेर करते हो, हुक्का-पानी वन्द हो जाता तो गाँव में निवाह होता ? जवान लड़की वैठी है, उसका भी कहीं ठिकाना लगाना है कि नहीं। मरने-जीने में ग्रादमी बिरादरी....

गोबर—(**बात काट कर**) हुक्का-पानी सब तो था, बिरादरी में आदर भी था, फिर मेरा ब्याह क्यों नहीं हुआ ? बोलो। इसलिये कि घर में रोटी न थी। रुपये हों तो न हुक्का-पानी का काम है, न जात बिरादरी का। दुनिया पैसे की है, हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता।

[सहसा बच्चा रोता है, धनिया अन्दर जाती है। गोबर आगे बढ़ता है। होरी शून्य में ताकता हुआ सहसा जागता है। दो कदम बढ़ता है]

होरी—मैं भी चला चलूँ ?

गोबर—मैं लड़ाई करने नहीं जा रहा हूँ, दादा, डरो मत। मेरी ओर तो कानून है। मैं क्यों लड़ाई करने लगा।

होरी—मैं भी चलूँ तो कोई हरज है ?

गोबर—हाँ, बड़ा हरज है। तुम बनी बात बिगाड़ दोगे।

[कह कर वह तेजी से जाता है। धनिया तेजी से आती है]

धनिया—क्या गोबर चला गया ? अकेले ! भोला क्या सहज में गाई देगा। तीनों उस पर टूट पड़ेंगे। भगवान ही कुशल करे। अब किससे कहूँ दौड़कर गोबर को पकड़ लो। तुम से तो मैं हार गई !

[होरी उसे देखता है। फिर एकाएक डंडा उठाकर भागता है। मंच पर सहसा अन्धकार होने लगता है। धनिया अन्दर जाती है। कुछ क्षण बाद होरी निराश लौटता है। अन्धकार और गहरा होता है। बैलों की घंटियाँ बजती हैं। गोबर अकड़ता हुआ मंच पर आता है। पीछे-पीछे एक व्यक्ति सिर पर हांडी रखे है। गांव के युवक भी हैं]

गोबर—(**गर्व से**) हाँडी अन्दर रख दो और गोई उधर बाँध दो। (**युवक से**) हाँ, होली आ रही है। मेरे द्वार पर भंग घुटेगी।

युवक—सच !

गोबर—सेर भर बादाम लाया हूँ। केसर अलग पीते ही चोला तर हो जायगा। आँखें खुल जायेंगी और खमीरा तमाकू भी है। (**चुपके से**) पर इस बार नकल करनी है।

युवक—तो शोभा है, गिरधारी है। वकील की नकल वह करे, पटवारी की नकल वह करे, थानेदार की, चपरासी की, सभी की नकल कर सकता है।

दूसरा युवक—पर बेचारे के पास वैसा सामान नहीं है।

गोबर—सामान का जिम्मा मेरा।

युवक—तब उसकी नकल देखने जोग होगी।

गोबर—तो फिर आओ परोगराम बना लें।

[अन्दर जाते हैं। परदा गिरता है।]

पाँचवाँ दृश्य

[रंगमंच पर वही दृश्य, होरी के घर का द्वार, बाहर गोबर और कई युवक खड़े हँस रहे हैं।]

एक युवक—भई खूब। रात गाँव के मुखियों की खूब नकल उड़ायी। लोग खूब हँसे और अब जिसे देखो उसी की जबान पर रात के गाने हैं, वही फिकरे, वही नकल।

[एक-दो फिकरे गाता है]

दूसरा युवक—और तो जो हुआ सो हुआ, मुखिये खूब तमाशा बन गये। जिधर निकलते हैं उधर ही दो-चार लड़के पीछे लग जाते हैं और वही फिकरे कसते हैं।

पहला युवक—यार यह झिंगुरीसिंह सच्चे दिल्लगीबाज हैं। जरा बुरा नहीं माना मगर पटेश्वरी चिढ़ गये हैं।

दूसरा युवक--और पण्डित दातादीन तो इतने तुनुक मिजाज हैं कि लड़ने को तैयार हैं।

गोबर—लड़ने दो, मैं सब से निपट लूंगा। तुम अब जाओ। सोओ। शाम को देखूंगा....मुझे भी नींद आ रही है....

[युवक जाते हैं। **गोबर भी अन्दर जाता है। तभी दातादीन झल्लाये हुए आते हैं।**]

दातादीन—(**क्रोध से**) होरी....होरी....क्या आज भी तुम काम करने न चलोगे ?

गोबर—(**नींद में आँखें मलता बाहर आता है**) अब यह तुम्हारी मजूरी न करेंगे। हमें अपनी ऊख भी तो बोनी है।

दातादीन—(**सुरती फाँकते हुए**) मजूरी कैसे न करेंगे, साल के बीच में काम नहीं छोड़ सकते। जेठ में छोड़ना हो छोड़ दें। उसके पहले नहीं छोड़ सकते।

गोबर—उन्होंने तुम्हारी गुलामी नहीं लिखी है। जब तक इच्छा थी काम किया। अब नहीं इच्छा है नहीं करेंगे। इसमें कोई जबर्दस्ती नहीं कर सकता।

दातादीन—तो होरी काम नहीं करेंगे ?

गोबर—ना।

[**होरी का प्रवेश**]

दातादीन—तो हमारे रुपये सूद समेत दे दो। तीन साल का सूद होता है सौ रुपया। असल मिला कर दो सौ होते हैं। हमने समझा था तीन रुपये महीने सूद में कटते जायँगे; लेकिन तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मत करो।

होरी—(**एकदम**) क्यों न करें। महाराज, तुम्हारी चाकरी से मैं कब इनकार करता हूँ। लेकिन हमारी ऊख....

गोबर—(**एकदम**) कैसी चाकरी और किस की चाकरी। यहाँ कोई किसी का चाकर नहीं। सभी बराबर हैं। अच्छी दिल्लगी है। किसी को सौ रुपये उधार दे दिये और सूद में उससे जिन्दगी भर काम लेते रहे। मूल ज्यों का त्यों। यह महाजनी नहीं खून चूसना है।

दातादीन—तो रुपये दे दो भैया। लड़ाई काहे की। मैं आने रुपये

ब्याज लेता हूँ। तुम्हें गाँव-घर का समझ कर आध रुपये आने पर दिया था।

गोबर—हम तो एक रुपया सैकड़ा देंगे। एक कौड़ी वेसी नहीं। तुम्हें लेना हो तो लो, नहीं अदालत से लेना।

दातादीन—मालूम होता है रुपये की गर्मी हो गयी है!

गोबर—गर्मी उन्हें होती है जो एक के दस लेते हैं, हम तो मजूर हैं। हमारी गर्मी पसीने के रास्ते वह जाती है। मुझे खूब याद है तुमने बैल के तीस रुपये दिये थे। उसके सौ हुए और अब सौ के दो सौ हो गये।

दातादीन—हो गये क्या वैसे ही। हिसाब कर लो।

गोबर—क्या हिसाब कर लूं। तुम लोगों ने किसानों को लूट-लूट कर मजूर बना डाला। और आप उनकी जमीन के मालिक बन बैठे। तीस के दो सौ। कुछ हद है। कितने दिन हुए होंगे दादा?

होरी—(**कातर कंठ**) यही आठ-नौ साल हुए होंगे।

गोबर—(**छाती पर हाथ रख कर**) नौ साल में तीस रुपये के दो सौ। एक रुपये के हिसाब से कितना होता है। (**जमीन पर ठीकरे से हिसाब लगाता है**) दस साल में छत्तीस रुपये होते हैं। असल मिला कर छाछठ। उसके सत्तर रुपये ले लो। इससे वेसी मैं एक कौड़ी न दूँगा।

दातादीन—(**होरी से**) सुनते हो होरी, गोवर का फैसला। इस तरह का व्यवहार हुआ तो कै दिन संसार चलेगा! और तुम बैठे सुन रहे हो! मगर यह समझ लो, मैं ब्राह्मण हूँ, मेरे रुपये हजम करके तुम चैन न पाओगे। मैंने ये सत्तर रूपये भी छोड़े, अदालत भी न जाऊँगा, जाओ। (**जाता है, लौटता है**) अगर मैं ब्राह्मण हूँ तो पूरे दो सौ रुपये लेकर दिखा दूँगा और तुम द्वार पर आओगे और हाथ बाँध कर दोगे।

[**झल्लाये हुए हैं। तभी होरी दौड़कर चरण पकड़ लेता है। आर्त्त स्वर में कहता है**]

होरी—महाराज, जब तक जीता हूँ, तुम्हारी एक-एक पाई चुकाऊँगा। लड़के की बातों पर मत जाओ। वह कौन होता है....

दातादीन—जरा इसकी जबरदस्ती तो देखो, कहता है दो सौ रुपये के सत्तर रुपये लो या अदालत जाओ! अभी अदालत की हवा नहीं खायी है! जभी। चार दिन शहर में क्या रहे तानासाह हो गये!

होरी—मैं तो कहता हूँ महाराज, मैं तुम्हारी एक-एक पाई चुकाऊँगा।

दातादीन—तो कल से हमारे यहाँ काम करने आना पड़ेगा।

होरी—अपनी ऊख बोना है महाराज, नहीं तुम्हारा काम करता।

दातादीन—अच्छा-अच्छा, देखूँगा (**तेजी से जाता है**)

गोबर—गये थे देवता को मनाने। तुम्हीं लोगों ने इन सब का मिजाज बिगाड़ दिया है। तीस रुपये दिये, अब दो सौ रुपये लेगा और डाँट ऊपर से बताएगा और मजूरी कराते-कराते मार डालेगा।

होरी—मार डाले पर नीति हाथ से न छोड़ना चाहिये बेटा, अपनी करनी अपने साथ है। हमने जिस ब्याज पर रुपये लिये वह तो देने ही पड़ेंगे। फिर ब्राह्मण ठहरे। इनका पैसा हमें पचेगा?

गोबर—कौन कह रहा है कि बाह्मन का पैसा पचा लो। मैं तो यही कहता हूँ कि इतना सूद हम नहीं देंगे। बंक वाले बारह आने सूद लेते हैं। तुम एक रुपया ले लो। और क्या किसी को लूट लोगे।

होरी—उनका रोआँ जो दुखी होगा।

गोबर—हुआ करे।

होरी—बेटा, जब तक मैं जीता हूँ मुझे अपने रास्ते चलने दो। जब मर जाऊँ तो तुम्हारी जो इच्छा हो वह करना।

गोबर—तो फिर तुम्हीं देना। मैं अपने पाँव में कुल्हाड़ी न मारूँगा। मेरा गधापन था कि तुम्हारे बीच में बोला। तुमने खाया है तुम भरो, मैं क्यों अपनी जान दूँ! (**तेजी से जाता है, पीछे-पीछे होरी भी। एक क्षण**

बाद गोबर बाहर जाने को तैयार आता है, साथ में झुनिया भी है। दरवाजे पर रुक कर वह तेजी से बोलता है।)

गोबर—इनके ऊपर रिन का बोझ इसी तरह बढ़ता जायगा। मैं कहाँ तक भरूँगा। इन्होंने कमा-कमा कर दूसरों का घर भरा। मैं क्यों इनकी खोदी हुई खन्दक में गिरूँ।

झुनिया—कहते तो ठीक हो।

गोबर—इन्होंने मुझसे पूछ कर करज नहीं लिया, न मेरे लिए लिया। मैं उसका देन-दार नहीं।

झुनिया—लेकिन अभी कहाँ जाते हो। जरा रुको, पानी तो पी लो। आओ-आओ (**अन्दर ले जाती है। रूपा, सोना का लड़ते हुए प्रवेश**)

सोना—छोटी-ठकुराइन पहले खुद खाती है।

रूपा—अगर वह पहले खाती है तो क्यों मोटी नहीं है ? ठाकुर क्यों मोटे हैं ?

सोना—तू समझती है अच्छा खाने से लोग मोटे होते हैं। अच्छा खाने से लोग बलवान होते हैं, मोटे नहीं होते हैं, मोटे होते हैं घास-पात खाने से।

रूपा—तो ठकुराइन ठाकुर से बलवान है ?

सोना—और क्या।

रूपा—तो तू भी पहले आप खाकर जीजा को खिलावेगी ?

सोना—और क्या।

रूपा—अम्माँ तो पहले दादा को खिलाती हैं ?

सोना—तभी तो जब देखो तब दादा डाँट देते हैं। मैं बलवान होकर अपने मरद को काबू में रखूँगी। तेरा मरद तुझे पीटेगा। तेरी हड्डी तोड़कर रख देगा।

रूपा—क्यों पीटेगा ? मैं मार खाने का काम ही न करूँगी।

सोना—वह कुछ न सुनेगा। तूने जरा भी कुछ कहा और वह मार

चलेगा। मारते-मारते तेरी खाल उधेड़ लेगा।

[**रूपा बिगड़ कर मारने को दौड़ती है। सोना चिढ़ाती है।**] वह तेरी नाक भी काट लेगा। [**रूपा सोना को पकड़कर जोर से काट लेती है। सोना चीखती है और रूपा को ढकेलती है। वह गिरती है और चीख कर उठती है। उस चीख को सुनकर गोबर क्रोध में भरा हुआ अन्दर से आता है और दोनों को पीटता है**]

गोबर—क्या शोर मचा रखा है। नाक में दम कर दिया। इतनी बड़ी हो गई, रत्ती भर तमीज नहीं।

[**दोनों रोती हुई अन्दर भागती हैं। होरी घबराया-सा बाहर आता है**]

होरी—दोनों को मार कर भगा दिया ?

गोबर—(**तेजी से**) तुम्हीं ने इन सब को बिगाड़ रखा है।

होरी—पर इस तरह मारने से और भी निर्लज्ज हो जायँगी।

गोबर—दो जून खाना बन्द कर दो। आप ठीक हो जायँ।

होरी—मैं उनका बाप हूँ। कसाई नहीं हूँ। अब पानी कौन चलायगा ?

गोबर—पानी भी कोई चला लेगा। (**तेजी से अन्दर आता है और झुनिया को लेकर आता है। पीछे-पीछे धनिया और दोनों बेटियाँ हैं**)

गोबर—पानी यह चलायगी।

[**दोनों बाहर जाते हैं।**]

धनिया—देख....इसने आज जवान लड़की पर हाथ उठाया। रूपा को मार लेता तो कुछ न था....

[**होरी कुछ नहीं कहता। वह तो जैसे खो गया। एक क्षण बाद वह बिना कुछ कहे चला जाता है। धनिया और रूपा, सोना भी उसी तरह पीछे-पीछे जाती हैं। परदा गिरता है।**]

[**वही स्थान। समय सन्ध्या के बाद। गोबर और नोखेराम तेजी से बातें करते हैं**]

गोबर—(**उत्तेजित स्वर**) यह क्या बात है कारिन्दा साहब कि दादा ने हाल तक का लगान चुकता कर दिया और आप अभी दो साल की बाकी निकाल रहे हैं ? यह कैसा गोलमाल है ?

नोखेराम—जब तक होरी हैं मैं तुमसे लेन-देन की कोई बात-चीत नहीं करना चाहता ।

गोबर—तो मैं घर में कुछ नहीं हूँ ?

नोखेराम—तुम अपने घर में सब कुछ होगे । इस मामले में तुम कुछ नहीं हो ।

गोबर—अच्छी बात है, आप बेदखली दायर कीजिए । मैं अदालत में तुमसे गंगाजली उठवा कर रुपये दूँगा; इसी गाँव से एक सौ सहादतें दिलाकर साबित कर दूँगा कि तुम रसीद नहीं देते ।

नोखेराम—तुम सहादत दिलाओगे ?

गोबर—जरूर दिलाऊँगा । सीधे-सादे किसान हैं, कुछ बोलते नहीं, तो तुमने समझ लिया कि सब काठ के उल्लू हैं । राय साहब वहीं रहते हैं जहाँ मैं रहता हूँ । गाँव के सब लोग उन्हें हौवा समझते होंगे, मैं नहीं समझता, रत्ती-रत्ती हाल कहूँगा ।

नोखेराम—राय साहब से कहोगे ? (**मुख के भाव पलटते हैं**)

गोबर—हाँ कहूँगा और देखूंगा तुम कैसे मुझसे दोबारा रुपये वसूल कर लेते हो ।

नोखेराम—मैं दोबारा क्यों वसूल करूँगा । और तुम इतना गर्म क्यों हो रहे हो, इसमें गर्म होने की कौन बात है ?

गोबर—बात क्यों नहीं है । दादा ने पाई-पाई लगान चुका दिया । तुम कहते हो दो साल की बाकी है ।

नोखेराम—अगर होरी ने रुपये दिये हैं तो कहीं-न-कहीं तो टाँके गये होंगे । मैं कल कागज निकाल कर देखूंगा । मैं अभी कागज निकाल कर देखता हूँ । (**जाता है । मुड़कर कहता है**) तुम निसाखातिर रहो । अगर

रुपये आ गये हैं, तो कहीं नहीं जा सकते। मुझे भी कुछ-कुछ याद आ रहा है कि शायद होरी ने रुपये दिये थे।

[चला जाता है। होरी आवाज सुन कर बाहर आता है]

होरी—नोखेराम चले गये ?

गोबर—जाते न तो क्या करते ? लेकिन मैं कहे देता हूँ, दादा, मैं कहाँ-कहाँ तुम्हारी रक्षा करता फिरूँगा। सत्तर रुपये दिये जाता हूँ। दातादीन ले, तो देकर भरपाई लिखा लेना। इसके ऊपर तुमने एक पैसा भी दिया, तो फिर मुझसे एक पैसा भी न पाओगे। मैं परदेस में इसलिए नहीं पड़ा हूँ कि तुम अपने को लुटवाते रहो और मैं कमा-कमाकर मरता रहूँ। मैं कल चला जाऊँगा।

[धनिया आती है]

धनिया—अभी क्यों जाते हो बेटा, दो-चार दिन और रह कर ऊख की बोनी करा लो और कुछ लेन-देन का हिसाब भी ठीक कर लो तो जाना।

गोबर—मेरा दो तीन रुपये रोज का घाटा हो रहा है, यह भी समझती हो ? यहाँ मैं बहुत-से-बहुत चार आने की मजदूरी ही तो करता हूँ ! और अब की मैं झुनिया को भी लेता जाऊँगा। वहाँ मुझे खाने-पीने की बड़ी तकलीफ होती है।

धनिया—(डरते-डरते) जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन वहाँ वह कैसे अकेले घर सँभालेगी, कैसे बच्चे की देख-भाल करेगी।

गोबर—अब बच्चे को देखूँ कि अपना सुभीता देखूँ। मुझसे चूल्हा नहीं फूँका जाता।

धनिया—ले जाने को मैं नहीं रोकती, लेकिन परदेस में बाल-बच्चों के साथ रहना, न कोई आगे न पीछे, सोचो कितना झंझट है।

गोबर—परदेस में भी संगी-साथी निकल आते हैं। और यह तो स्वारथ का संसार है। जिसके साथ चार पैसे गम खाओ, वही अपना। खाली

ब्रथ तो माँ-बाप भी नहीं पूछते ।

धनिया—माँ-बाप को भी तुमने उन्हीं पैसे के यारों में समझ लिया ?

गोबर—आँखों देख रहा हूँ ।

धनिया—नहीं देख रहे हो । माँ-बाप का मन इतना निठुर नहीं होता । हाँ, लड़के अलबत्ता जहाँ चार पैसे कमाने लगे कि माँ-बाप से आँखें फेर लीं । माँ-बाप करज-कवाम लेते हैं किसके लिए ? लड़के लड़कियों के लिए कि अपने भोग-विलास के लिए ?

गोबर—क्या जाने तुमने किसके लिए करज लिया । मैंने तो एक पैसा भी नहीं जाना ।

धनिया—विना पाले ही इतने वड़े हो गये !

गोबर—पालने में तुम्हारा लगा क्या । जब तक बच्चा था दूध पिला दिया फिर लावारिस की तरह छोड़ दिया । जो सबने खाया वही मैंने खाया । मेरे लिए दूध नहीं आता था । पक्खन नहीं बँधा था ।

धनिया—(चौंकती है) गोबर !

गोबर—मैं झूठ कह रहा हूँ ? और अब तुम चाहती हो और दादा भी चाहते हैं कि मैं सारा करजा चुकाऊँ, लगान दूँ, लड़कियों का ब्याह करूँ । जैसी मेरी जिन्दगी तुम्हारा देना भरने के लिए है ! मेरे भी तो बाल-बच्चे हैं ।

धनिया—(दुखी स्वर) यह मन्तर तुम्हें कौन दे रहा है बेटा । तुम तो ऐसे न थे । माँ-बाप तुम्हारे ही हैं, बहनें तुम्हारी ही हैं, घर तुम्हारा ही है । घर की मरजाद बनाये रहोगे तो तुम्हीं को सुख होगा । आदमी घरवालों के लिए ही धन कमाता है । अपना पेट तो सुअर भी पाल लेता है । मैं न जानती थी झुनिया नागिन बन कर हमीं को डसेगी ।

गोबर—(तिनक कर) अम्माँ मैं नादान नहीं हूँ कि झुनिया मुझे मन्तर पढ़ावेगी । तुम्हारी गिरस्ती का सारा बोझ मैं नहीं उठा सकता ।

झुनिया—(तेजी से आकर) अम्माँ, जुलाहे का गुस्सा दाढ़ी पर न

उतारो । कोई बच्चा नहीं है कि उसे फोड़ लूंगी । अपना भला-बुरा समझते हैं । आदमी इसलिए नहीं जनम लेता कि सारी उम्र तपस्या करता रहे और एक दिन खाली हाथ मर जाय ।

धनिया—(**दांत पीस कर**) अच्छा झुनिया, बहुत ज्ञान न बघार । अब तू भी अपना भला-बुरा सोचने जोग हो गयी है । जब यहाँ आकर मेरे पैरों पर सिर रखे रो रही थी उस घड़ी हम भी अपना भला-बुरा सोचने लगते तो आज तेरा कहीं पता न होता ।

झुनिया—ओहो पता न होता ! क्या किया मेरे साथ ! सारे गाँव वाले जानते हैं तुम्हें ।

धनिया—गांव वाले क्या जानते हैं सुनूं तो । बड़ी आयी गाँव वाली । दो दिन में जबान निकालने लगी । यहाँ सौक-सिंगार करने को नहीं मिलता, घर का काम भी करना ही पड़ता है । वहाँ रुपये-पैसे हाथ में आयेंगे, मजे से चिकना खायगी, चिकना पहनेगी ।

झुनिया—खाऊँगी, पहनूंगी । अपने मर्द की ही कमाई तो । किसी गैर की तो नहीं । सब खाने-पहनने को तो कमाते हैं । और फिर मैं कुछ भी करूँ तुम्हें क्या ?

धनिया—मुझे क्या ? आज तू ऐसे बोलती है । यहाँ सरन न मिली होती तो आज कहीं भीख मांगती होती ।

झुनिया—अब जैसे रानी बनी बैठी हूँ । दिन भर काया गलाती हूँ ।

[**गांव के स्त्री-पुरुष आ-आकर खड़े होते हैं । कुछ समझाते भी हैं पर दोनों तेज़ हैं ।**]

धनिया—काया तू ही गलाती है और हम तो जैसे टाँग फैला कर सोते हैं । सुनो तो इस चुड़ैल की बातें !

झुनिया—ये क्या सुनेंगे मेरी बातें । ये क्या नहीं जानते कि तुमने

हीरा और सोभा काका के साथ क्या किया ! तुमने उन्हें कहीं का न रखा !

गोबर—यह तो मुझे भी बरबाद करने पर तुली है।....अम्माँ। तुम नाहक उसे कोस रही हो, तुम्हारी किसी से....

धनिया—मैं नाहक कोस रही हूँ ? उसे कोई नहीं देखता ! इसके पीछे डाँड़ देना पड़ा, बिरादरी में बदनामी हुई, खेती टूट गयी, सारी दुर्गत हो गयी। और आज यह चुड़ैल जिस पत्तल में खाती है उसी में छेद कर रही है। पैसे देखे तो आँख हो गयी !

गोबर—अम्माँ, तुम्हारी आज किसी से न पटी, तो झुनिया से कैसे पट सकती है। चल झुनिया चल, मैं अभी सहर जाता हूँ। (**दोनों अन्दर जाते हैं**)

धनिया—जाओ, सब जाओ लेकिन कहे देती हूँ मैं भी कि....

होरी—(**एकदम**) मैं तेरे पैरों पड़ता हूँ, धनिया, चुप रह। मेरे मुँह में कालिख मत लगा....

धनिया—(**तेज**) तुम भी मोटी ढाल पकड़ने चले। मैं ही दोषी हूँ। वह तो जैसे फूल बरसा रहा है !

होरी—जो छोटों के मुँह लगे, वह छोटा।

धनिया—झुनिया छोटी है ?

होरी—अच्छा, वह छोटी नहीं। बड़ी सही। जो आदमी नहीं रहना चाहता, क्या उसे बाँध कर रखेगी ? माँ-बाप का धरम है लड़के की पाल-पोस कर बड़ा कर देना। वह हम कर चुके।

धनिया—और लड़कों का कुछ धरम नहीं है ?

होरी—माँ-बाप का धरम सोलहों आना लड़कों के साथ है। लड़कों का माँ बाप के साथ एक आना भी धरम नहीं है। अब जो जाता है उसे असीस देकर बिदाकर। हमारा भगवान मालिक है। जो कुछ भोगना बदा है, भोगेंगे। चालीस साल, सैंतालीस साल इसी तरह रोते-धोते कट गये। दस-पाँच साल हैं वह भी यों ही कट जायँगे।

[गोबर बिस्तर लिये आता है, झुनिया चुंदरी पहने है। चुन्नू ने टोप और फ्राक पहना है। सोना, रूपा पागल-सी पीछे-पीछे हैं। होरी गोबर के पास आकर करुण कंठ से कहता है।]

होरी—बेटा। तुमसे कुछ कहने को मुँह तो नहीं है लेकिन कलेजा नहीं मानता। क्या जरा जाकर अपनी अभागिनी माता के पाँव छू लोगे तो कुछ बुरा होगा! जिस माता की कोख से जनम लिया और जिसका रक्त पीकर पले हो उसके साथ इतना भी नहीं कर सकते!

गोबर—(मुँह फेर कर) मैं उसे अपनी माता नहीं समझता।

होरी—(रुँधा स्वर) जैसी तुम्हारी इच्छा। जहाँ रहो सुखी रहो।

[झुनिया सास के पास जाती है, अंचल से चरण छूती है पर धनिया नहीं बोलती। आगे-आगे बालक को लिये गोबर, पीछे-पीछे बिस्तर लिये झुनिया। एक लड़का सन्दूक उठाये है। गाँव के स्त्री-पुरुष साथ-सा जाते हैं। मंच पर रूपा, सोना हैं जो पीछे-पीछे जाती हैं। रोती हैं, ठिठकती हैं। होरी है जो रोता हुआ एकटक देखता है। धनिया है जो कहीं न देख कर रोये जाती है, रोये जाती है। यहीं परदा गिरता है।]

अंक तीन

पहला दृश्य

[मंच पर दातादीन के पौरा का दृश्य । बैलों की घंटी सुनाई देती है । एक ओर मातादीन बैठा अपनी लाठी में तेल मल रहा है । दूसरी ओर सिलिया पौरे से अनाज निकाल-निकाल कर ओसा रही है । सिलिया सांवली, सलोनी, छरहरी युवती है । आकर्षक है । उसका अंग-अंग हर्षोन्माद से नाचता है । पसीने से तर वह सिर से पांव तक भूसे से सनी है । सिर के बाल आधे खुले हैं ! वह दौड़-दौड़कर अनाज ओसा रही है । सहसा मातादीन उठता है ।]

मातादीन—आज सांझ तक अनाज बाकी न रहे सिलिया । तू थक गयी हो तो मैं आऊँ ।

सिलिया—तुम काहे को आओगे, पण्डित । मैं संझा तक सब ओसा दूँगी ।

मातादीन—अच्छा तो अनाज ढो-ढोकर रख आऊँ । तू अकेली क्या-क्या कर लेगी ।

सिलिया—तुम घबड़ाते क्यों हो, मैं ओसा दूँगी, ढोकर रख भी आऊँगी । पहर रात यहां एक दाना भी न रहेगा ।

[दुलारी का प्रवेश । मातादीन चुपके से सरक जाता है]

दुलारी—सिलिया, क्यों री महीना भर रंग लाये हो गया, अभी तक पैसे नहीं दिये ? मांगती हूँ, तो मटक कर चली आती है । आज मैं बिन पैसे लिये न जाऊँगी ।

सिलिया—(**इधर-उधर देखकर**) चिल्लाओ मत सहुआइन, यह ले लो, दो की जगह चार पैसे का अनाज। अब क्या किसी की जान लोगी। मैं मरी थोड़े ही जाती थी।

[**पल्ले में अनाज डालती है, तभी झल्लाया हुआ मातादीन आता है। पल्ला पकड़ लेता है।**]

मातादीन—अनाज सीधे से रख दो सहुआइन; लूट नहीं है। (**सिलिया से लाल आंखें करके**) तूने अनाज क्यों दे दिया? किससे पूछ कर दिया? तू कौन होती है मेरा अनाज देने वाली?

[**सहुआइन अनाज डाल देती है। सिलिया हक्का-बक्का होकर मातादीन का मुँह देखने लगती है, फिर आँखों में आंसू भर कर सहुआइन से कहती है।**]

सिलिया—तुम्हारे पैसे मैं फिर दे दूँगी सहुआइन, आज मुझ पर दया करो। (**सहुआइन बोलती नहीं पर उसकी आँखों में धिक्कार है। मातादीन को देखती हुई जाती है। सिलिया मातादीन से कहती है**) तुम्हारी चीज में मेरा कुछ अख्तियार नहीं?

मातादीन—(**आंखें निकालकर**) नहीं। काम करती है खाती है। जो तू चाहे कि खा भी और लुटा भी तो यह न होगा! यहाँ मजदूरों की कमी नहीं है। संत में काम नहीं लेते, खाना-कपड़ा देते हैं। (**सहसा चमारों का एक दल तेजी से वहां आता है। उनमें सिलिया की माँ-बाप, भाई हैं। माँ आते ही सिलिया से टोकरी छीन लेती है।**)

माँ—यह रही कुलबोरनी। राँड, जब तुझे मजूरी ही करनी थी तो घर की मजूरी छोड़कर यहाँ क्यों मरने आयी! जब बाह्मन के साथ रहना है तो बाह्मन की तरह रह।

[**शोर सुन कर झिंगुरीसिंह और दातादीन दौड़े आते हैं**]

झिंगुरीसिंह—क्या बात है चौधरी! किस बात का झगड़ा है?

हरखू—झगड़ा कुछ नहीं है ठाकुर, हम आज या तो मातादीन

को चमार बना कर छोड़ेंगे या उनका और अपना रक्त एक कर देंगे। सिलिया कन्या जात है। किसी-न-किसी के घर तो जायगी ही। मगर उसे जो कोई भी रखे हमारा होकर रहे। तुम हमें बाह्मन नहीं बना सकते मुदा हम तुम्हें चमार बना सकते हैं।

दातादीन—(**लाठी फटकार कर**) मुँह सँभाल कर बातें कर, हरखुआ। तेरी बिटिया वह खड़ी है। ले जा जहाँ चाहे। हमने उसे बाँध नहीं रखा। काम करती थी मजूरी लेती थी।

माँ—वाह-वाह पंडित, खूब नियाव करते हो। तुम्हारी लड़की किसी चमार के साथ निकल गयी होती और तुम इस तरह बातें करते तो देखती। हम चमार हैं इसलिए हमारी कोई इज्जत ही नहीं। हम सिलिया को अकेली न ले जायँगे। साथ मातादीन को भी ले जायँगे।

हरखू—(**साथियों से**) सुन लो इन लोगों की बात। अब क्या खड़े मुँह ताकते हो।

[**सहसा दो चमार मातादीन को पकड़ते हैं। जनेऊ तोड़ देते हैं और मुँह में हड्डी ठूँसते हैं। वह छटपटाता है। दातादीन और झिंगुरीसिंह झपटते हैं। मातादीन कै करता है।**]

दातादीन—अरे बचाओ-बचाओ। क्या करते हो ! मेरे बेटे को मार डाला।

[**भीड़ बढ़ती है। पर कोई नहीं बोलता। बस होरी आता है।**]

होरी—अच्छा, बहुत हुआ हरखू। भला चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ।

हरखू—तुम्हारे घर में भी लड़कियाँ हैं होरी महतो, इतना समझ लो। इस तरह गाँव की मरजाद बिगड़ने लगी तो किसी की आबरू न बचेगी।

दातादीन—एक-एक को पाँच-पाँच साल के लिए न भेजवाया तो कहना। पाँच-पाँच साल तक चक्की पिसवाऊँगा।

हरखू—इसका यहाँ कोई गम नहीं। कौन तुम्हारी तरह बैठे मौज करते हैं। जहाँ काम करेंगे, वहीं आधा पेट दाना मिल जायगा। चलो जी, चल सिलिया।

माँ—(**सिलिया से**) खड़ी ताकती क्या है, चल सीधे घर। नहीं बोटी-बोटी काट डालूंगी। बाप-दादा का नाम तो खूब उजागिर कर चुकी....

सिलिया—मैं कहीं नहीं जाऊँगी।

माँ—तू न चलेगी ?

सिलिया—नहीं।

माँ—चल सीधे से !

सिलिया—नहीं जाती।

[**तभी दोनों भाई उसे पकड़ कर खींचते हैं। वह बैठ जाती है। घिसटती है। साड़ी फट जाती है। कमर छिल जाती है पर वह जाती नहीं। कहती रहती है—नहीं जाऊँगी, मार डालो, नहीं जाऊँगी**]

हरखू—अच्छा, अब इसे छोड़ दो। समझ लेंगे मर गयी। मगर अब जो कभी मेरे द्वार पर आयी तो लहू पी जाऊँगा।

सिलिया—हाँ, जब तुम्हारे द्वार पर आऊँ तो पी लेना।

[**एकाएक माँ आगे बढ़कर लातें मारती है। हरखू उसे पकड़ता है।**]

हरखू—तू बड़ी हत्यारिन है, सिलिया। क्या उसे मार डालेगी ?

सिलिया—(**बाप के पैरों से लिपट जाती है**) मार डालो दादा, सब जनें मिल कर मार डालो। हाय अम्माँ, तुम इतनी निर्दयी हो। हाय मेरे पीछे पण्डित को भी तुमने भिरस्ट कर दिया। मैं मर जाऊँगी पर हरजाई न बनूँगी। एक बार जिसने बाँह पकड़ ली उसी की रहूँगी।

माँ—जाने दो राँड़ को। समझती है वह इसका निबाह करेगा। मगर आज ही मार कर भगा न दे तो मुँह न दिखाऊँ। चलो....

[सब जाते हैं। सिलिया कराहती है और आंचल से मुंह ढांप कर रोती है।]

दातादीन—उनके साथ चली क्यों नहीं गयी री सिलिया। अब क्या करवाने पर लगी हुई है। मेरा सत्यानाश करके भी पेट नहीं भरा।

सिलिया—उनके साथ क्यों जाऊँ? जिसने बाँह पकड़ी उसके साथ रहूँगी।

दातादीन—(**धमकाकर**) मेरे घर में पाँव रखा तो लातों से बात करूंगा।

सिलिया—(**उद्दंडता से**) मुझे जहाँ वह रखेंगे वहीं रहूँगी। पेड़ तले रखें चाहे महल में रखें।

दातादीन—(**मातादीन से**) मातादीन। अगर तुम परासचित करना चाहते हो तो सिलिया को त्यागना पड़ेगा।

मातादीन—मैं अब इसका कभी मुँह न देखूंगा। लेकिन पण्डितों ने कहा कि परासचित नहीं हो सका तो तुम मुझे घर से निकाल दोगे?

दातादीन—ऐसा कहीं हो सकता है, बेटा! धन जाय, धरम जाय, लोक-मरजाद जाय पर तुम्हें नहीं छोड़ सकता। चलो उठो। चलकर नहाओ खाओ।

[मातादीन लकड़ी उठा कर दातादीन के पीछे-पीछे चलता है। सिलिया भी लँगड़ाती हुयी पीछे हो लेती है।]

मातादीन—(**कठोर स्वर**) मेरे साथ मत आ, मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं।

सिलिया—वास्ता कैसे नहीं! इसी गाँव में तुमसे धनी, तुमसे सुन्दर, तुमसे इज्जतदार लोग हैं। मैं उनका हाथ क्यों नहीं पकड़ती। जो रस्सी तुम्हारे गले में पड़ गयी है, उसे तुम लाख चाहो तोड़ नहीं सकते। और न मैं छोड़कर कहीं जाऊँगी। मजूरी करूंगी, भीख मागूँगी लेकिन तुम्हें न छोड़ूंगी।

[इतना कह कर वह पहले की तरह अनाज ओसाने लगती है। होरी अनाज माँड़ने में लगा है। वह मंच पर आता है। तभी धनिया आती है।]

होरी—आ गयी ? देख तो इस सिलिया को घर वालों ने कैसा पीटा है। पीठ पर की साड़ी लहू से रंग गयी है। कहीं घाव पक न जाय, बड़े निर्दयी हैं।

सिलिया—यहाँ निर्दयी कौन नहीं है, दादा ! मैंने तो किसी को दयावान नहीं पाया। पंडित कहते हैं मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं।

होरी—अच्छा, ऐसा कहते हैं।

सिलिया—समझते होंगे, इस तरह अपने मुँह की लाली रख लेंगे लेकिन जिस बात को दुनिया जानती है उसे कैसे छिपा लेंगे। मेरी रोटियाँ भारी हैं, न दें। मजूरी अब भी करती हूँ, तब भी करूँगी। सोने को हाथ भर जगह तुम्हीं से माँगूंगी तो क्या तुम न दोगे ?

धनिया—(**करुण स्वर**) जगह की कौन कमी है बेटी। तू चल मेरे घर रह।

होरी—(**कातर स्वर**) बुलाती तो है लेकिन पण्डित को जानती नहीं।

धनिया—(**निर्भीक स्वर**) बिगड़ेंगे तो एक रोटी बेसी खा लेंगे। कोई उनकी दबैल हूँ। इसकी इज्जत ली, बिरादरी से निकलवाया, अब कहते हैं मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं। आदमी है कि कसाई !

होरी—लेकिन धनिया, सिलिया के घर वालों ने मतई को बेधरम कर दिया यह भी कोई अच्छा काम नहीं किया। सिलिया को चाहे मार कर ले जाते, चाहे दुलार कर ले जाते। वह उनकी लड़की है। मतई को क्यों बेधरम किया ?

धनिया—अच्छा रहने दो बड़े न्यायी बने हो। मरद-मरद सब एक होते हैं ? इसको मतई ने बेधरम किया तब तो किसी को बुरा न

लगा। क्या इसका धरम; धरम नहीं है। रखा तो चमारिन को, उस पर नेमी-धरमी बनते हैं !....सिलिया, तू चल मेरे घर। (**सिलिया धनिया के पैरों पर गिर कर फूट पड़ती है**) अरे-अरे रोती क्यों है।....बेचारी की सारी पीठ लहूलुहान करदी....जाओ जी तुम जाके सोना को भेज दो। मैं इसे लेकर जा रही हूँ। इसे तो पेट है। (**होरी चुपचाप जाता है। धनिया उसे उठाती है।**) उठ चल, न जाने कैसे बेदरद माँ बाप हैं तेरे ....ऐसी हालत में इतना मारा।

[**दोनों जाने को मुड़ती हैं परदा गिरता है।**]

दूसरा दृश्य*

[**मंच पर होरी के घर का दृश्य। होरी और धनिया बैठे बातें कर रहे हैं।**]

होरी—देख धनिया। इस साल जैसे भी हो सोना का ब्याह कर देना है। गल्ला तो मौजूद है। दो सौ रुपये भी हाथ आ जायँ तो कन्या ऋण से उद्धार हो जाय। अगर गोबर सौ रुपये की मदद कर दे तो बाकी सौ रुपये आसानी से मिल जायँगे।

धनिया—गोबर से मैं एक पैसा भी नहीं लूंगी, किसी तरह नहीं।

होरी—(**झुंझलाकर**) लेकिन काम कैसे चलेगा, यह बता।

धनिया—मान लो गोबर परदेस न गया होता, तब तुम क्या करते ? वही अब करो।

होरी—मैं तुझी से पूछता हूँ।

धनिया—यह सोचना मरदों का काम है।

---

* अगर नाटक का समय कम करना हो तो दूसरा व तीसरा दृश्य छोड़ा जा सकता है।

होरी—मान ले मैं न होता, तू ही अकेली रहती तब तू क्या करती, वही कर।

धनिया—(**तिरस्कार से**) तब मैं कुस-कन्या भी दे देती, तो कोई हँसनेवाला न था।

होरी—लेकिन मैं नहीं दे सकता। बहनों के विवाह में तीन-तीन सौ बराती द्वार पर आये थे। दहेज भी अच्छा ही दिया था। आज भी बिरादरी में नाम है। कुस-कन्या देकर किसे मुँह दिखाऊँगा।

धनिया—मैं भी यही कहती हूँ।

होरी—तो जमीन बेच दूँ ?

धनिया—बेच दोगे तो खेती कैसे करोगे ?

होरी—खेती की सोचूँ या बेटी को सोचूँ ? मेरा तो खून सूखता है। झिंगुरी, पटेश्वरी और नोखेराम के शहरी लड़के कई-कई बार द्वार की ओर ताकते हुए निकलते हैं।

धनिया—(**साँस लेकर**) यही तो कहती हूँ।

होरी—(**उठता है**) अच्छा भगवान, जाता हूँ। औरतों में दया होती है। शायद दुलारी, सहुआइन का दिल पसीज जाय और कम सूद पर दो सौ रुपये दे दे।

धनिया—(**व्यंग**) जरूर दे देगी! उससे रुपये लेकर आज तक कोई उरिन हुआ है। चुड़ैल कितना कस कर सूद लेती है।

होरी—लेकिन करूँ क्या ? दूसरा देता कौन है ?

[धनिया कुछ नहीं कह पाती। होरी चला जाता है। धनिया एक क्षण उसे देखती है फिर अन्दर जाती है। उसके जाते ही सोना और सिलिया अन्दर से आती हैं। सोना इधर-उधर देखती है और चौकन्नी होकर कहती है।]

सोना—तूने कुछ सुना ? दादा सहुआइन से मेरी सगाई के लिये दो सौ रुपये उधार ले रहे हैं।

सिलिया—घर में पैसा नहीं है तो क्या करें।

सोना—(गम्भीर) मैं ऐसा नहीं करना चाहती जिसमें माँ-बाप को कर्ज लेना पड़े। कहाँ से देंगे बेचारे कर्जा। पहले ही कर्ज के बोझ से दबे हुए हैं। दो सौ और ले लेंगे तो बोझा और भारी होगा कि नहीं।

सिलिया—विना दान-दहेज के बड़े आदमियों का कहीं ब्याह होता है पगली। विना दहेज के तो कोई बूढ़ा-ठेला ही मिलेगा। जायगी बूढ़े के साथ ?

सोना—बूढ़े के साथ क्यों जाऊँ ? भैया बूढ़े थे तो झुनिया को ले आये ? उन्हें किसने कै पैसे दहेज में दिये थे।

सिलिया—उसमें बाप-दादा का नाम डूबता है।

सोना—मैं तो सोनारी वालों से कह दूँगी, अगर तुमने एक पैसा भी दहेज लिया तो मैं तुमसे ब्याह न करूँगी।

सिलिया—और जो वह कह दे कि मैं क्या करूँ तुम्हारे बाप देते हैं, मेरे बाप लेते हैं, इसमें मेरा क्या अख्तियार है ?

सोना—(हताश स्वर में) मैं एक बार उससे कह के देख लेना चाहती हूँ। अगर उसने कह दिया मेरा अख्तियार नहीं है तो क्या गोमती यहाँ से बहुत दूर है। डूब मरूँगी।

सिलिया—(काँपकर) क्या कहती है री !

सोना—ठीक तो कहती हूँ। माँ-बाप ने मर-मर के पाला पोसा, उसका बदला क्या यही है कि उसके घर से जाने लगूँ तो उन्हें कर्ज से और लादती जाऊँ ? भगवान ने दिया हो तो खुशी से जितना चाहें लड़की को दें मैं मना नहीं करती लेकिन जब पैसे-पैसे को तंग हो रहे हों तो कन्या का धरम यही है कि वह डूब मरे।

सिलिया—(काँपकर) डूब मरे ?

सोना—हाँ, डूब मरे। इससे घर की जमीन-जैजात तो बच जायगी,

रोटी का सहारा तो रह जायगा। चार दिन मेरे नाम को रोकर सन्तोष कर लेंगे।। ब्याह करके तो जन्म भर रोना पड़ेगा। तीन-चार साल में दो सौ के दूने हो जायँगे। दादा कहाँ से लाकर देंगे?

[**सोना का हताश स्वर धीरे-धीरे आवेश में पलट जाता है। सिलिया अचरज से उसे देखती है फिर एकाएक छाती में भर लेती है।**]

सिलिया—तूने इतनी अक्कल कहाँ से सीख ली, सोना। देखने में तो तू बड़ी भोली-भाली है।

सोना—इसमें अक्कल की कौन बात है चुड़ैल। क्या मेरे आँखें नहीं हैं कि मैं पागल हूँ। मुँह अँधेरे सोनारी चली जाना और उसे बुला लाना, मगर नहीं, बुलाने का काम नहीं। मुझे उससे बोलते लाज आयेगी। तू ही मेरा यह संदेसा कह देना। देख क्या जवाब देते हैं। कौन दूर है। नदी के उस पार ही तो है।

सिलिया—चली जाऊँगी। मना कहाँ करती हूँ। (**साँस लेकर**) तेरे माँ-बाप कितने अच्छे हैं। सारे गाँव में बदनाम हो रहे हैं पर तुझे निकालते नहीं।

सोना—क्यों निकालें। गाँव वाले तो अन्धे हैं। हाँ, यह तो बता इधर मतई से तेरी भेंट नहीं हुई। सुना, बाह्मन उन्हें बिरादरी में ले रहे हैं।

सिलिया—(**हिकारत से**) बिरादरी में क्यों न लेंगे। हाँ, बूढ़ा रुपये नहीं खर्च करना चाहता। उसको पैसा मिल जाय तो झूठी गंगा उठा ले। लड़का आजकल बाहर ओसारे में टिक्कड़ लगाता है।

सोना—तू उसे छोड़ क्यों नहीं देती? अपनी बिरादरी में किसी के साथ बैठ जा और आराम से रह। वह तेरा अपमान तो न करेगा।

सिलिया—हाँ रे, क्यों नहीं, मेरे पीछे उस बेचारे की इतनी दुर-दसा हुई, अब मैं उसे छोड़ दूँ! अब वह चाहे पण्डित बन जाय, चाहे देवता बन जाय, मेरे लिये तो वही मतई है जो मेरे पैरों पर सिर रगड़ा

करता था। अभी मान-मरजाद के मोह में वह चाहे मुझे छोड़ दे लेकिन देख लेना फिर दौड़ा आयगा। बच्चा होने पर तो आयगा ही।

सोना—आ चुका अब। तुझे पा जाय तो कच्चा ही खा जाय।

सिलिया—तो उसे बुलाने ही कौन जाता है। अपना-अपना धर्म अपने-अपने साथ है। वह अपना धरम तोड़ रहा है तो मैं अपना धरम क्यों तोड़ूं (**जाती-जाती**) अच्छा मैं चली।

[**वह जाती है। सोना एकटक उसे जाते देखती है। फिर अन्दर जाती है। एक क्षण बाद होरी आता है। बहुत खुश है।**]

होरी—(**पुकार कर**) धनिया ओ धनिया। (**बैठ कर**) सगाई की तैयारी आज ही हो जानी चाहिए।

धनिया—(**आकर**) क्या है? यहाँ क्यों बैठ गये। रोटी नहीं खानी?

होरी—(**अनसुना करके**) इसी सहालग में लगन ठीक हुआ है। बता, क्या-क्या सामान लाना चाहिए। मुझे तो कुछ मालूम नहीं।

धनिया—जब कुछ मालूम ही नहीं तो सलाह करने क्या बैठे हो। कुछ रुपये-पैसे का डौल भी हुआ कि मन की मिठाई खा रहे हो?

होरी—(**गर्व से**) तुझे इससे क्या मतलब? तू इतना बता दे कि क्या-क्या सामान लाना होगा?

धनिया—मैं ऐसी मन की मिठाई नहीं खाती।

होरी—तू इतना बता दे कि हमारी बहनों के ब्याह में क्या क्या सामान आया था?

धनिया—पहले यह बता दो, रुपये मिल गये?

होरी—हाँ मिल गये, और नहीं क्या भंग खायी है।

धनिया—तो पहले चल कर रोटी खालो। फिर सलाह करेंगे।

होरी—अरे बैठ तो जरा, जो काम निपट जाय वह अच्छा। दुलारी ने बड़ी मुश्किल से....

धनिया—ओहो उसने जरा-सी हामी भर दी, तो तुम चारों ओर खुशखबरी लेकर दौड़े ।

होरी—हामी नहीं भर दी, पक्का वादा किया । चल-चल रोटी दे । फिर सब बताऊँगा ।

[दोनों अन्दर जाते हैं । मंच पर प्रकाश धीमा पड़ता है । गाँव वाले आते-जाते हैं । सोना अन्दर से आकर मार्ग में दूर तक देखती है, फुस-फुसाती है ।]

सोना—(**स्वगत**) अभी तक नहीं आयी ? कौन बड़ी दूर है । न आने दिया होगा उन लोगों ने । अहा....वह आ रही है; लेकिन बहुत धीरे-धीरे आती है । अभागे नहीं माने साइत, नहीं सिलिया दौड़ती आती । तो सोना से हो चुका ब्याह मुँह धो रखें ?

[सिलिया आती है । सोना लपक कर उसे पकड़ती है । पूछती है । दोनों मकान के पीछे जाती हैं । घुल-घुल कर बातें करती हैं । अन्धकार गहरा होने लगता है । दोनों अन्दर जाती हैं । पूर्ण अन्धकार हो जाता है । बाद में प्रकाश होता है । गाँव में आवाजाही होने लगती है । होरी बाहर से दौड़ा हुआ आता है । हर्ष से उछल पड़ता है । अन्दर जाता है । बाहर की दीवार हट जाती है । अन्दर धनिया खाट पर लेटी है ।]

होरी—धनिया, धनिया ।

धनिया—(**उठती हुई**) क्या है ?

होरी—है क्या । सोना के ससुर ने नाई के हाथ पत्र भेजा है । सुन—'स्वस्ती श्री सर्वोपमा जोग श्री होरी महतो को गौरीराम का राम-राम बाँचना । आगे जो हम लोगों में दहेज की बातचीत हुई थी उस पर हमने सांत मन से विचार किया, तो समझ में आया कि लेन-देन से वर और कन्या ही के घरवाले जेरबार होते हैं । जब हमारा-तुम्हारा सम्बन्ध हो गया, तो हमें ऐसा व्यवहार करना चाहिए कि किसी को न अखरे । तुम दान-दहेज की कोई फिकर मत करना, हम तुमको सौगन्ध देते हैं ।

जो कुछ मोटा-महीन जुरे, बरातियों को खिला देना। हम वह भी न माँगेंगे। रसद का इन्तजाम हमने कर लिया है। हाँ, तुम खुशीखुर्रमी से हमारी जो खातिर करोगे, वह सिर झुका कर स्वीकार करेंगे।'

(**धनिया जैसे ध्यानमग्न हो गयी हो**) सुना धनिया ?)

धनिया—(**चौंक कर**) सुना।

होरी—तुझे खुशी नहीं हुई।

धनिया—यह गौरी महतो की भलमनसी है। लेकिन हमें भी तो अपने मरजाद का विवाह करना है। संसार क्या कहेगा। रुपया हाथ का मैल है। उसके लिए कुल-मरजाद नहीं छोड़ा जाता।

होरी—पर मैं कुल-मरजाद कहाँ छोड़ रहा हूँ। उन्होंने खुद लिखा है।

धनिया—लिखा होगा पर हमसे जो कुछ हो सकेगा देंगे, और गौरी महतो को लेना पड़ेगा। तुम यही जवाब लिख दो। माँ-बाप की कमाई में क्या लड़की का कोई हक नहीं।

(**होरी हतबुद्धि-सा उसे देखता है**)

होरी—तेरा मिजाज आज तक मेरी समझ में न आया। तू आगे भी चलती है, पीछे भी चलती है। पहले तो इस बात पर लड़ रही थी कि किसी से एक पैसा करज मत लो, कुछ देने-दिलाने का काम नहीं है और जब भगवान ने गौरी के भीतर पैठ कर यह पत्र लिखवाया तो तूने कुल-मरजाद का राग छेड़ दिया।

धनिया—मुँह देखकर बीड़ा दिया जाता है, जानते हो कि नहीं। तब गौरी अपनी सान दिखाते थे, अब वह भलमनसी दिखा रहे हैं। ईंट का जवाब चाहे पत्थर हो लेकिन सलाम का जवाब तो गाली नहीं है।

होरी—तो दिखा अपनी भलमनसी! देखें कहाँ से रुपये लाती है?

धनिया—रुपये लाना मेरा काम नहीं है, तुम्हारा काम है।

होरी—मैं तो दुलारी से ही लूंगा।

धनिया—ले लो उसी से। सूद तो सभी लेंगे। जब डूबना ही है तो क्या तालाब क्या गंगा।

[**होरी बाहर जाने को बढ़ता है। चिन्तित है। हाथ हिलाता हुआ बढ़ता है, बोलता है**]

होरी—(**स्वगत**) कितने मजे में गला छूटा जाता था, लेकिन धनिया जब जान छोड़े तब तो! जब देखो उल्टी ही चलती है। इसे जैसे कोई भूत सवार हो जाता है। घर की दशा देख कर भी आँखें नहीं खुलतीं।

[**सहसा शोभा का तेजी से प्रवेश**]

शोभा—होरी दादा, होरी दादा। तुम यहाँ क्या कर रहे हो? कुर्क अमीन तुम्हारी ऊख नीलाम कर रहा है।

होरी—(**कांप कर**) क्या कहते हो?

धनिया—क्या हुआ? क्या बात है शोभा?

शोभा—दादा, कहते हैं मँगरू साह ने तुम पर डेढ़ सौ रुपये का दावा किया, उसी की डिग्री हो गई।

होरी—पर कब? मुझे तो पता भी नहीं।

शोभा—पता किसी को भी नहीं पर डिग्री हो गयी। कुर्क अमीन नीलाम करने आया है, चलो तो।

होरी—चल, मैं मँगरू साह से पूछता हूँ। (**जाता है**)

धनिया—मैं समझ गई, यह सब उस डाढ़ीजार पटवारी की कारस्तानी है, हाय रे, ढाई सौ की ऊख थी, गाँव भर के ऊपर। नास हो जाय इसका, मर मिटे इसकी औलाद। हाय-हाय, तुम पटवारी से क्यों नहीं पूछते।

[**बकती-झकती जाती है और परदा गिरता है**]

तीसरा दृश्य

[वही होरी का घर। धनिया मन मारे द्वार पर बैठी है। सोना, रूपा बारी बारी जाती है। वह नहीं बोलती। सिलिया भी दुखी मन चली जाती है, उससे भी नहीं बोलती। तभी होरी आता है। हारा-थका, जैसे पराजित होकर लौटा हो, एक क्षण उसे देखता है। वह भी देखती है। फिर कहता है]

होरी—दुलारी ने इन्कार कर दिया।

धनिया—(मौन)

होरी—मैंने जितनी चिरौरी-विनती हो सकती थी, की। मगर वह न पसीजी। ऊख नीलाम हो गई, रुपये न देगी। अब क्या करूँ ?

धनिया—(एकदम) करोगे क्या ! जो तुम चाहते थे वही तो हुआ।

होरी—मेरा ही दोष है।

धनिया—किसी का दोष हो, हुई तुम्हारे मन की। मेरी सुनते तो देखते कैसे मेरे जीते जी मेरा खेत काट ले जाता।

होरी—अब मेरी वह चीज़ मँगरू साह की है।

धनिया—मँगरू साह ने मर-मर कर जेठ की दुपहरी में सिंचाई और गोड़ाई की थी !

होरी—वह सब तूने किया, मगर अब वह चीज मँगरू साह की है। हम उनके करजदार नहीं हैं।

धनिया—नहीं हैं, तो कर लो बेटी का ब्याह। बड़े खुश हो रहे थे, बता क्या-क्या आवेगा।

होरी—ताने मत दे। बता जमीन रेहन रख दूँ ?

धनिया—जमीन रेहन रख दोगे तो करोगे क्या ?

होरी—मजूरी।

धनिया—(सहम कर) मजूरी....

होरी—और कोई रास्ता नहीं !....बोल....

धनिया—(एकक्षरण रुक कर) बोलूं क्या ? गौरी बरात लेकर आयेंगे। एक जून खिला देना। सवेरे बेटी विदा कर देना। दुनिया हँसेगी, हँस ले। भगवान की यही इच्छा है कि हमारी नाक कटे, मुँह में कालिख लगे, तो हम क्या करेंगे।

[तभी नोहरी चुंदरी पहने सामने से जाती है]

होरी—अरे भोला की नई वहू जा रही है।

धनिया—(पुकार कर) आज किधर चली समधिन ? आओ बैठो ? (नोहरी पास आती है) आज किधर भूल पड़ीं ?

नोहरी—ऐसे ही तुम लोगों से मिलने चली आयी। बिटिया का ब्याह कब तक है ?

धनिया—(सन्देह से) भगवान् के अधीन है, जब हो जाय।

नोहरी—मैंने तो सुना इसी सहालग में होगा। तिथि ठीक हो गयी ?

धनिया—हाँ, तिथि तो ठीक हो गयी।

नोहरी—मुझे भी नेवता देना।

धनिया—तुम्हारी तो लड़की है, नेवता कैसा ?

नोहरी—दहेज का सामान तो मँगवा लिया होगा। चलो मैं भी देखूं।

होरी—अभी तो कोई सामान नहीं मँगवाया और सामान क्या करना है, कुस-कन्या तो देना है।

नोहरी—(अविश्वास से) कुस-कन्या क्यों दोगे महतो, पहली बेटी है, दिल खोलकर करो।

होरी—(हँसता है) रुपये-पैसे की तंगी है, क्या दिल खोल कर करूँ। तुमसे कौन परदा है।

नोहरी—बेटा कमाता है, तुम कमाते हो, फिर भी रुपये-पैसे को

तंगी । किसे विश्वास आयेगा ।

होरी—बेटा ही लायक होता तो फिर काहे का रोना था । चिट्ठी-पत्तर तक भेजता नहीं, रुपये क्या भेजेगा । यह दूसरा साल है एक चिट्ठी नहीं ।

[**सोना का प्रवेश । सिर पर गट्ठा है । गट्ठा वहीं पटक कर अन्दर जाती है । नोहरी उसे जांचती है ।**]

नोहरी—लड़की तो खूब सयानी हो गयी है ।

धनिया—लड़की की बाढ़ रेड़ की बाढ़ है । है के दिन की । रुपये का बन्दोबस्त हो गया तो इसी महीने में ब्याह कर देंगे ।

नोहरी—(**क्षण भर सोच कर**) थोड़े बहुत से काम चलता हो, तो मुझ से ले लो, जब हाथ में आ जाय तो दे देना । (**अचरज से दोनों नोहरी को देखते हैं । नोहरी फिर कहती है**) तुम्हारी और हमारी इज्जत एक है । तुम्हारी हँसी हो तो मेरी हँसी न होगी ? कैसे भी हुआ हो, पर अब तो तुम हमारे समधी हो ।

होरी—तुम्हारे रुपये तो घर में ही हैं जब काम पड़ेगा ले लेंगे । आदमी अपनों ही का भरोसा तो करता है । मगर ऊपर से इन्तजाम हो जाय, तो घर के रुपये क्यों छुए ।

धनिया—हाँ और क्या ?

नोहरी—जब घर में रुपये हैं तो बाहर वालों के सामने हाथ क्यों फैलाओ । सूद भी देना पड़ेगा, उस पर इस्टाम लिखो, गवाही कराओ, दस्तूरी दो, खुशामद करो । हाँ, मेरे रुपये में छूत लगी हो तो दूसरी बात है ।

होरी—नहीं-नहीं, नोहरी, जब घर में काम चल जायगा, तो बाहर क्यों हाथ फैलायेंगे, लेकिन आपसवाली बात है । खेती-बारी का भरोसा नहीं । तुम्हें जल्दी कोई काम पड़ा और हम रुपये न जुटा सके तो तुम्हें

भी बुरा लगेगा और हमारी जान भी संकट में पड़ेगी इससे कहता था। नहीं लड़की तो तुम्हारी है ।

नोहरी—मुझे अभी रुपये की ऐसी जल्दी नहीं है ।

होरी—तो तुम्हीं से लेंगे । कन्या-दान का फल भी क्यों बाहर जाय।

नोहरी—कितने रुपये चाहिए ?

होरी—तुम कितने दे सकोगी ?

नोहरी—सौ में काम चल जायगा ?

होरी—सौ में भी चल जायगा । पाँच सौ में भी चल जायगा जैसा हौसला हो ।

नोहरी—मेरे पास कुल दो सौ रुपये हैं वह मैं दे दूँगी ।

होरी—तो इतने में बड़ी खुसफैली से काम चल जायगा । अनाज घर में है । मगर ठकुराइन आज तुमसे कहता हूँ, मैं तुम्हें ऐसी लक्ष्मी न समझता था । इस जमाने में कौन किसकी मदद करता है । तुमने डूबने से बचा लिया है ।

(नोहरी लजाती है । उठती है ।)

नोहरी—अब देर हो रही है । कल तुम आकर रुपये ले लेना महतो।

होरी—(उठता है) कुछ लिखा-पढ़ी ।

नोहरी—तुम मेरे रुपये हजम न करोगे, यह मैं जानती हूँ ।

होरी—चलो मैं तुम्हें पहुँचा दूँ ।

नोहरी—नहीं-नहीं, तुम बैठो । मैं चली जाऊँगी ।

धनिया—अजी तुम पहुँचा भी आओ ।

होरी—जी तो चाहता है तुम्हें कन्धे पर बैठा कर पहुँचा आऊँ ।

[सब हँस पड़ते हैं । होरी व नोहरी रास्ते से जाते हैं । धनिया एक क्षण देखती है । फिर अन्दर जाती है । परदा गिरता है]

चौथा दृश्य

[वही होरी का घर, मार्ग, कुछ और घर। होरी के घर के पास एक झोपड़ी है जिसमें सिलिया रहती है। होरी घर के दरवाजे पर बैठा धनिया से बातें करता है। बहुत हार गया है।]

होरी—सोना अपने घर की हुई यह अच्छा हुआ, राज करती है। पर सिलिया का बेटा मर गया। कैसा प्यारा था।

धनिया—रूपा का तो वह खिलौना था। उवटन मलती, काजल लगाती, नहलाती, वाल सँवारती, अपने हाँथों कौर वना कर खिलाती, कभी-कभी गोद में लिए रात को सो जाती। मैं डाँटती, तू सव कुछ छुआ-छूत किये देती है मगर वह न सुनती।

होरी—और मातादीन भी तो किसी-न-किसी वहाने यहाँ आता और कनखियों से वच्चे को देखता।

धनिया—मैं कहती, लजाते क्यों हो, गोद में ले लो, प्यार करो, कैसा काठ का कलेजा है तुम्हारा। विल्कुल तुमको पड़ा है। तव वह एक-दो रुपये सिलिया के लिये फेंक कर चला जाता।

होरी—लेकिन उस दिन तो वह खुल पड़ा। लाश को दोनों हथेलियों पर रख लिया और अकेला नदी के किनारे तक ले गया (**सांस लेकर**) यही मरद का धरम है। जिसकी वाँह पकड़ी उसे क्या छोड़ना।

धनिया—ज्यादा मत वखान करो, जी जलता है। वह मरद है। मैं ऐसे मरद को नामरद कहती हूँ। जव वाँह पकड़ी थी तव क्या दूध पीता था? कि सिलिया वाह्मनी हो गयी थी?

होरी—वह पुरानी वात है। अव वह वाँह नहीं छोड़ेगा। अच्छा मैं चलूं, जरा किसी को टटोलूं। पण्डित नोखेराम ने वेदखली का दावा कर रखा है। जमीन हाथ से निकल गई तो वाकी दिन मजूरी करने में कटेंगे।

[जाता है। धनिया एक क्षण देखती है फिर अन्दर जाती है। तभी

सिलिया आती है। टोकरी उतार कर द्वार पर रखती है और बैठकर इधर-उधर देखती है फिर चुपचाप रो पड़ती है। सहसा चौंकती है। मातादीन आकर सामने खड़ा हो गया है।]

मातादीन—कब तक रोये जायगी सिलिया। रोने से वह फिर तो न आ जायगा!

सिलिया—(**चौंकती है**) कौन! (**देख कर**) तुम! तुम आज इधर कैसे आ गये।

मातादीन—इधर से जा रहा था। तुझे बैठे देखा, चला आया।

सिलिया—तुम तो उसे खेला भी न पाये।

मातादीन—नहीं सिलिया, एक दिन खेलाया था।

सिलिया—सच?

मातादीन—सच।

सिलिया—मैं कहाँ थी?

मातादीन—तू बाजार गयी थी।

सिलिया—तुम्हारी गोद में रोया नहीं?

मातादीन—नहीं सिलिया हँसता था।

सिलिया—सच?

मातादीन—सच।

सिलिया—बस, एक ही दिन खेलाया?

मातादीन—हाँ, एक ही दिन; मगर देखने रोज आता था। उसे खटोले पर खेलते देखता था और दिल थाम कर चला जाता था।

सिलिया—तुम्हीं को पड़ा था।

मातादीन—मुझे पछतावा होता है कि नाहक उस दिन उसे गोद में लिया। यह मेरे पापों का दण्ड है।

सिलिया—अच्छा, अब चले जाओ। कहीं पण्डित देख न लें।

मातादीन—मैं अब किसी से नहीं डरता।

सिलिया—घर से निकाल देंगे तो कहाँ जाओगे ?

मातादीन—मैंने अपना घर बना लिया है ।

सिलिया—सच ?

मातादीन—हाँ, सच ।

सिलिया—कहाँ, मैंने तो नहीं देखा ।

मातादीन—यही तो है ।

सिलिया—(**वेदना से**) यह तो सिलिया चमारिन का घर है !

मातादीन—(**उसका द्वार खोल कर**) यह मेरी देवी का मन्दिर है।

सिलिया—(**चमक कर**) मन्दिर है तो एक लोटा पानी उँडेल कर चले जाओगे !

मातादीन—नहीं सिलिया, जब तक प्राण है तेरी सरन में रहूँगा । तेरी ही पूजा करूँगा ।

सिलिया—झूठ कहते हो ।

मातादीन—नहीं, तेरे चरन छूकर कहता हूँ ।

[सिलिया एकदम मातादीन के मुंह की ओर देखती है । एकाएक बोल नहीं पाती । फिर फुसफुसाती है]

सिलिया—गाँव वाले क्या कहेंगे ?

मातादीन—जो भले आदमी हैं वह कहेंगे यही इनका धरम था । जो बुरे हैं उनकी मैं परवा नहीं करता ।

सिलिया—और तुम्हारा खाना कौन पकायेगा ?

मातादीन—मेरी रानी सिलिया ।

सिलिया—तो बाह्मन कैसे रहोगे ?

मातादीन—मैं बाह्मन नहीं चमार ही रहना चाहता हूँ । जो अपना धरम पाले वही बाह्मन है । जो धरम से मुँह मोड़े वही चमार है ।

सिलिया—सच !

[सिलिया हर्ष के मारे मातादीन के गले में बाँह डाल देती है और

उसे अन्दर ले जाती है। एक क्षण बाद होरी और पंडित दातादीन वहाँ आते हैं। होरी द्वार पर चारपाई डालता है। बैठ जाते हैं। दातादीन बोल रहे हैं]

होरी—बैठो महाराज !

दातादीन—लेकिन जैजात तो बचानी ही पड़ेगी। निवाह कैसे होगा ? बाप-दादों की इतनी-सी निशानी बच रही है। वह निकल गयी तो कहाँ रहोगे ?

होरी—भगवान की मरजी है। मेरा क्या बस।

दातादीन—एक उपाय है। जो तुम करो।

होरी—(**एकाएक पाँव पकड़ कर**) बड़ा धरम होगा महाराज। तुम्हारे सिवा मेरा कौन है। मैं तो निराश हो गया था।

दातादीन—निराश होने की कोई बात नहीं। बस इतना ही समझ लो कि सुख में आदमी का धरम कुछ और होता है दुख में कुछ और। सुख में आदमी दान देता है मगर दुख में भीख माँगता है। आपत्काल में श्रीरामचन्द्र ने सेवरी के जूठे फल खाये थे, बालि का छिप कर बध किया था। (**होरी सिर हिला कर सहमति प्रगट करता है**) जब संकट में बड़े बड़ों की मर्यादा टूट जाती है तो हमारी तुम्हारी कौन बात है। रामसेवक महतो को तो जानते हो न।

होरी—(**निराश स्वर**) हाँ, जानता क्यों नहीं ?

दातादीन—मेरा जजमान है। बड़ा अच्छा जमाना है उसका। खेती अलग, लेन-देन अलग। ऐसे रोब-दाब का आदमी नहीं देखा। कई महीने हुए उसकी औरत मर गयी है। सन्तान कोई नहीं। अगर रुपिया का ब्याह उससे करना चाहो तो मैं उसे राजी कर लूँ।

होरी—(**काँप कर**) महाराज !!

दातादीन—हाँ, यह बड़ा अच्छा औसर है ! लड़की का ब्याह भी

हो जायगा और तुम्हारे खेत भी बच जायेंगे। सारे खरच-वरच से बचे जाते हो।

होरी—लेकिन....लेकिन....(**सिर झुका लेता है**)

दातादीन—कहो न क्या कहते हो ?

होरी—सोच कर कहूँगा।

दातादीन—इसमें सोचने की क्या बात है ?

होरी—धनिया से भी तो पूछ लूं।

दातादीन—तुम राजी हो कि नहीं ?

होरी—जरा सोच लेने दो, महाराज। आज तक कुल में कभी ऐसा नहीं हुआ। उसकी मरजाद भी तो रखना है।

दातादीन—(**उठते हैं**) पाँच-छः दिन के अन्दर मुझे जवाब दे देना। ऐसा न हो, तुम सोचते ही रहो और बेदखली आ जाय। (**जाते हैं तभी अन्दर से धनिया आती है**)

धनिया—पण्डित क्यों आये थे ?

होरी—कुछ नहीं, रुपिया की सगाई की बात थी।

धनिया—किससे ?

होरी—रामसेवक को जानती है ? उन्हीं से।

धनिया—मैंने उन्हें कब देखा, हाँ, नाम बहुत दिन से सुनती हूँ। वह तो बूढ़ा होगा !

होरी—बूढ़े नहीं हैं, हाँ अधेड़ हैं।

धनिया—तुमने पण्डित को फटकारा नहीं। मुझसे कहते तो ऐसा जवाब देती कि याद करते।

होरी—फटकारा नहीं लेकिन इन्कार कर दिया। कहते थे, ब्याह भी बिना खरच-बरच के हो जायगा और खेत भी बच जायेंगे।

धनिया—साफ-साफ क्यों नहीं बोलते कि लड़की बेचने को कहते थे। कैसे इस बूढ़े का हियाव पड़ा। अब पास न फटकने देना।

(जाती है । होरी वहीं बैठा सोचता है फिर फुसफुसा उठता है)

होरी—(स्वागत) बूढ़े बैठे रहते हैं, जवान चले जाते हैं । रूपा के भाग में सुख लिखा है तो कहीं भी दुख नहीं पा सकती और लड़की बेचने की तो कोई बात ही नहीं । जो कुछ लूँगा हाथ में रुपया आते ही चुका दूँगा....नहीं तो कुश-कन्या के सिवा और मैं क्या कर सकता हूँ....

[मंच पर अन्धकार छाने लगता है । धनिया फिर आती है]

धनिया—क्या सोच रहे हो ?

होरी—सोच रहा हूँ कि यह कुल-मरजादा के पालने का समय नहीं, अपनी जान बचाने का अवसर है । ऐसी ही बड़ी लाजवाली है तो ला पाँच सौ ।

धनिया—पाँच सौ या छः सौ । रुपये लाना तुम्हारा काम है । मैं तो इतना जानती हूँ कि वर-कन्या जोड़ के हों तभी व्याह का आनन्द है ।

होरी—व्याह आनन्द का नाम नहीं पगली, यह तो तपस्या है ।

धनिया—चलो तपस्या है ।

होरी—हाँ, मैं कहता जो हूँ । भगवान आदमी को जिस दशा में डाल दें, उसी में सुखी रहना तपस्या नहीं तो और क्या है ।

धनिया—मैं कुछ नहीं जानती । जब तक घर में सास-ससुर देवरानियाँ-जेठानियाँ न हों, तो ससुराल का सुख ही क्या ? कुछ दिन तो लड़का बहुरिया बनने का सुख पावे ।

होरी—वह सुख नहीं पगली, दंड है ।

धनिया—(तिनककर) तुम्हारी बातें भी निराली होती हैं । अकेली वह घर में कैसे रहेगी । न कोई आगे न कोई पीछे ।

होरी—तू तो जब इस घर में आयी तो एक नहीं, दो-दो देवर थे, सास थी, ससुर था । तूने कौन-सा सुख उठा लिया बता ।

धनिया—क्या सभी घरों में ऐसे ही प्राणी होते हैं ?

होरी—और नहीं तो क्या आकाश की देवियाँ आ जाती हैं। अकेली तो बहू, उस पर हकूमत करने वाला सारा घर। बेचारी किस-किस को खुश करे। जिसका हुक्म न माने, वही वैरी। सबे से भला अकेला।

[**सहसा शोभा का प्रवेश**]

शोभा—दादा ! दादा ! रामसेवक महतो आये हैं।

होरी—कौन ! रामसेवक महतो।

धनिया—हमारे गाँव में....

शोभा—हमारे गाँव में, हमारे घर में भाभी। कलाँ रास घोड़े पर सवार, साथ एक नाई और एक खिदमतगार जैसे कोई बड़ा जमींदार हो।

होरी—(**उठता है**) अरे धनिया खाट पर बिछावन तो बिछा। मैं सहुआइन की दुकान से गेहूँ का आटा और घी लाता हूँ। (**बाहर जाने को मुड़ता है**)

शोभा—भाभी ! कहते हैं उम्र चालीस से ऊपर है। होगी, पर चेहरे पर तेज है। देह गठी हुई है। दादा उनके सामने बिलकुल बूढ़े लगते हैं।

होरी—(**लौट कर**) शोभा तू जरा मेरे साथ चल। या नहीं, तू यहीं रह। वह शायद दोपहरी भर यहीं रहेंगे। धनिया तू देख क्या रही है। पूरियों का बन्दोबस्त कर।

[**एक हलचल मच जाती है। होरी इधर-उधर उछल कूद करके बाहर जाता है। शोभा भी साथ है। धनिया एक-दो क्षण देखती है फिर अन्दर जाती है। परदा गिर जाता है।**]

पाँचवाँ दृश्य

[**वही होरी का घर। सब बाहर खड़े हैं। गोबर जा रहा है। धनिया और होरी खुश भी हैं, रोते भी हैं। झुनिया बच्चे को लिये देहरी पर खड़ी है।**]

होरी—रूपा विदा हुई। तू भी जा बेटा। नौकर आदमी ठहरा।

धनिया—बहू को मैं अभी जल्दी नहीं भेजूंगी गोबर, उसका मन कुछ दिन यहाँ रहने को करता है।

गोबर—अच्छा अम्माँ।

धनिया—हाँ, तू नोहरी से मिल आया न?

गोबर—अम्माँ। उन्होंने मुझे पान खिलाए और एक रुपया बिदाई दी और कहा कभी लखनऊ आयगी तो जरूर मिलेगी।

धनिया—अपने रुपयों की चर्चा तो नहीं की?

गोबर—नहीं अम्माँ। एक बार भी मुह पर नहीं लायी।

होरी—यह सब तेरे कारण है, गोबर। तुझे मालिक भी कैसा अच्छा मिल गया है। साक्षात देवता है। रूपा के ब्याह में कितनी चहल-पहल हुई सब उसी के कारण लेकिन....लेकिन

गोबर—क्या हुआ, दादा। क्या बात है?

होरी—(**आँसू भर आते हैं**) क्या कहूँ बेटा। मैंने मुँह में कालिख लगा ली। मैंने रामसेवक महतो से रुपये लिये। (**रो पड़ता है**) बेटा, मैंने इस जमीन के मोह से पाप की गठरी सिर पर लादी। न जाने भगवान मुझे इसका क्या दण्ड देंगे।

गोबर—(**श्रद्धा भाव से**) इसमें अपराध की तो कोई बात नहीं दादा। हाँ, रामसेवक के रुपये अदा कर देना चाहिए। आखिर तुम क्या करते। मैं किसी लायक नहीं, तुम्हारी खेती में उपज नहीं। करज मिल नहीं सकता। एक महीने के लिए भी घर में भोजन नहीं। ऐसी दशा में तुम जैजाद न बचाते तो रहते कहाँ।

होरी—हाँ, बेटा, इस जैजाद के कारण ही मैंने अपनी मरजाद और इज्जत की परवा नहीं की।

गोबर—(तेज) दादा, जिसे पेट की रोटी मयस्सर नहीं, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग है। औरों की तरह तुमने भी दूसरों का गला दबाया होता, जमा मारो होती तो तुम भी भले आदमी होते। तुमने कभी नीति को नहीं छोड़ा यह उसी का दण्ड है।

[सब अचरज से उसे देखते हैं; उनकी आंखों में आंसू और चेहरे पर गर्व है। वह बोलता रहता है]

तुम्हारी जगह मैं होता तो या तो जेहल में होता या फाँसी पा गया होता। मुझ से यह कभी बरदास न होता कि मैं कमा-कमा कर सबका घर भरूँ और आप अपने बाल-बच्चों के साथ मुँह में जाली लगाये बैठा रहूँ।

[गाँव के और लोग भी आ जाते हैं। दातादीन, मातादीन, झिंगुरी, पटेश्वरी, नोखेराम, भोला, शोभा, नोहरी, दुलारी सभी हैं]

भोला—ठीक कहते हो भइया, ठीक कहते हो।

मातादीन—न जाने यह धाँधली कब तक चलती रहेगी।

पटेश्वरी—अच्छा गोबर, जा रहे हो हमारी याद रखना।

झिंगुरी—हाँ भइया, आते रहना।

दातादीन—जैसा गोबर सँभला, भगवान करे सबके बेटे सँभलें। तुम्हारी बड़ी याद आयगी गोबर....

होरी—गोबर चल बेटा....

[गोबर मुड़ कर माँ के पैर छूता है। धनिया उसे छाती से लगा कर रो पड़ती है। फिर वह सब को राम-राम करता है सामान उठाये एक लड़का आगे बढ़ता है। सब साथ-साथ चलते हैं।]

गोबर—(मुड़कर) अच्छा आप लोग अब लौट जायँ।

[सब लोग 'राम-राम' करके लौटते हैं। स्त्रियाँ धनिया के साथ जाती

हैं। होरी कुछ दूर और साथ जाता है। गोबर रुकता है]

गोबर—दादा। (पैर पकड़ लेता है। होरी लपक कर उसे छाती से लगाता है। फिर हाथ से आशीर्वाद देकर कुरते से आँखें पोंछता हुआ लौट पड़ता है। बीच में रुक कर उसे देखता है। फिर लौट आता है। अब वह उत्साह और प्रकाश से भरा है। धनिया के पास आता है। बोलने लगता है)

होरी—धनिया। गोबर कितना बदल गया। इस बार तो उसके शील-स्नेह ने सारे गाँव को मुग्ध कर दिया।

धनिया—सब उसके मीठे व्यवहार को याद करते हैं।

होरी—धनिया। गोबर सुखी। सोना सुखी। रूपा भी सुखी है। मुझे अब क्या चाहिए। बस कर्ज उतर जाय और....

धनिया—और एक गाय आ जाय।

होरी—(हँस कर) तू भी यही चाहती है!

[शोभा का प्रवेश]

शोभा—दादा। सुना एक ठीकेदार ने सड़क के लिए गाँव के ऊसर में कंकड़ की खुदाई शुरू की है।

होरी—सच।

शोभा—हाँ, दादा।

होरी—तब तो ठीक है। क्या देते हैं?

शोभा—आठ आने रोज।

होरी—फिर क्या है। यह काम दो महीने टिक जाय तो गाय भर को रुपये मिल जायँगे। चल शोभा मैं अभी देखता हूँ।

धनिया—अरे इतनी जल्दी क्या है।

होरी—जल्दी? गाय लेनी है। राम सेवक के रुपये अदा करने हैं।

[जाता है। धनिया एक क्षण उसे देखता है, फिर अन्दर जाती है। मंच पर अन्धकार छा जाता है। फिर प्रकाश होता है। गांव के लोग आते

जाते हैं। होरी काम पर जाता है। धनिया झुनिया घर के काम में लगती हैं। धनिया मंगल को खिलाती है। फिर अन्धकार बढ़ता है। होरी थका, काम से लौटता है। अन्दर जाता है। फिर ढिबरी जला कर सुतली कातने बैठ जाता है। धनिया भी आती है और कातने लगती है। कुछ देर चुपचाप कातते हैं फिर बातें करते हैं।]

धनिया—तुम्हें नींद आती हो तो सो रहो। भोरे फिर काम करना है।

होरी—सो जाऊँगा। अभी तो दस बजे होंगे। तू जा सो रह।

धनिया—मैं तो दोपहर को छन भर पौढ़ रहती हूँ।

होरी—मैं भी चवेना करके पेड़ के नीचे सो लेता हूँ।

धनिया—बड़ी लू लगती होगी।

होरी—लू क्या लगेगी? अच्छी छाँह है।

धनिया—मैं डरती हूँ कहीं तुम बीमार न पड़ जाओ।

होरी—चल, बीमार वह पड़ते हैं जिन्हें बीमार पड़ने की फुरसत होती है। यहाँ तो धुन है अब कि गोबर आये तो राम सेवक के आधे रुपये जमा रहें। कुछ वह भी लायेगा ही। बस इस साल इस रिन से गला छूट जाय तो दूसरी जिन्दगी हो।

धनिया—छूट जायगा लेकिन गोबर की अब की बड़ी याद आती है। कितना सुशील हो गया है।

होरी—सब सुनाता था। ठोकरें कम नहीं खायी। अच्छा मालिक मिल गया है, कुछ दिन सेवा कर लेगा तो आदमी बन जायगा।

धनिया—मंगल वहाँ से आया तो कितना तैयार था। यहाँ आकर दुबला हो गया है।

होरी—वहाँ दूध, मक्खन क्या नहीं पाता था। यहाँ रोटी मिल जाय वही बहुत है। ठीकेदार के रुपये मिले और गाय लाया।

धनिया—गाय तो कभी की आ गयी होती लेकिन तुम कहना

मानो तब न। अपनी खेती तो सँभाले न संभलती थी हीरा का भार भी अपने सिर ले लिया।

होरी—क्या करता, अपना धरम भी तो कुछ है। हीरा ने नालायकी की तो उसके बाल-बच्चों को संभालने वाला तो कोई चाहिए था। कौन था मेरे सिवा, बता। मैं न मदद करता तो आज उसकी क्या गत होती, सोच। इतना सब करने पर तो मँगरू ने उस पर नालिश कर ही दी।

धनिया—रुपये गाड़ कर रखेगी तो क्या नालिश न होगी।

होरी—क्या बकती है? खेती से पेट चल जाय यही बहुत है। गाड़ कर कोई क्या रखेगा।

धनिया—हीरा तो जैसे संसार ही से चला गया।

होरी—मेरा मन तो कहता है कि वह आयेगा कभी-न-कभी जरूर। अच्छा अब तू जा सो। मुझे नींद आ रही है।

धनिया—हाँ सो रहो। मुझे तो कभी-कभी बड़ा डर लगता है।

होरी—काहे का डर धनिया?

धनिया—क्या हालत होगी तुम्हारी। कितना मेहनत करते हो....

होरी—(हंस कर) मेहनत करने से आदमी मजबूत होता है....

धनिया—ओ हो बड़े मजबूत हो। खड़ा तो हुआ नहीं जाता। हे भगवान!

होरी—बस भगवान पर भरोसा रख पगली। सब ठीक करेंगे, जा बस माघ आ जाय....

[दोनों उठते हैं। धनिया अन्दर जाती है। होरी वहीं खाट पर लोटता है। अन्धकार छा जाता है। फिर धीरे-धीरे रात ढलती है। प्रभात होने को है। एक व्यक्ति मंच पर आता है। बाल बढ़े, मुंह सूखा, शरीर सूखा, कपड़े तार-तार। तभी होरी आता है। वह व्यक्ति लपक कर उसके कदमों पर गिर पड़ता है। होरी घबरा कर उसे उठता है।

होरी—कौन ? कौन है ? (**उठ कर गौर से देखता है**) कौन ? हीरा ?....हीरा (**लपक कर छाती से लगा लेता है**) तुम तो विल्कुल घुल गये हीरा, कब आये ? आज तुम्हारी बार-बार याद आ रही थी । बीमार हो क्या ?

[**हीरा रोता रहता है । बोलता नहीं । होरी उसका हाथ पकड़ कर गद्गद् कंठ से कहता है**]

क्यों रोते हो भैया, आदमी से भूल-चूक होती ही है । कहाँ रहे इतने दिन ?

हीरा—(**कातर स्वर**) कहाँ बताऊँ दादा । बस यही समझ लो कि तुम्हारे दर्शन वदे थे, वच गया । हत्या सिर पर सवार थी । ऐसा लगता था कि वह गऊ मेरे सामने खड़ी है, हरदम, सोते-जागते कभी आँखों से ओझल न होती । मैं पागल हो गया और पाँच साल पागलखाने में रहा ।

होरी—पागलखाने में रहे ?

हीरा—हाँ, आज वहाँ से निकले छः महीने हुए । माँगता खाता फिरता रहा । यहाँ आने की हिम्मत न पड़ती थी । संसार को कौन मुँह दिखाऊँगा । आखिर जी न माना । कलेजा मजबूत करके चला आया । तुमने मेरे वाल-वच्चों को....

होरी—(**बात काट कर**) तुम नाहक भागे । अरे दारोगा को दस-पाँच देकर मामला रफा-दफा कर दिया जाता और होता क्या ?

हीरा—तुमसे जीते जी उरिन न हूँगा, दादा ।

होरी—मैं कोई गैर थोड़े हूँ भैया ।

हीरा—तुम भी तो वहुत दुबले हो गये हो, दादा । क्या हाल हो गया तुम्हारा....

होरी—(**हँस कर**) तो क्या यह मेरे मोटे होने के दिन थे । मोटे वह होते हैं, जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का । इस जमाने

में मोटा होना बेईमानी है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। सोभा से भेंट हुई ?....

हीरा—उससे तो रात ही भेंट हो गयी थी। तुमने तो अपनों को भी पाला, जो तुमसे बैर रखते थे उनको भी पाला और अपनी मरजाद बनाये बैठे हो।

होरी—अच्छा-अच्छा अन्दर चल। भाभी के चरन छू। रात बड़ी याद कर रही थी। जबान की कड़वी है नहीं तो....

हीरा—जानता हूँ दादा....

[**दोनों अन्दर जाते हैं। परदा गिर जाता है**]

छठाँ दृश्य

[**मंच पर गाँव की ऊसर भूमि का दृश्य। मजदूर मिट्टी की टोकरी भरे एक ओर से आते हैं दूसरी ओर जाते हैं। होरी भी है। होरी अस्वस्थ है। धनिया आती है**]

होरी—तू फिर आ गयी धनिया ? क्या बात है ?

धनिया—बात क्या होती। सबेरे तुम्हारी देह भारी थी, अब कैसा जी है। न हो तो आज....

होरी—तू तो कभी-कभी बच्ची बन जाती है धनिया। जरा देह भारी हो गयी तो काम छोड़ दो। हम मजूर हैं, मजूर....

धनिया—मजूर के भी जी होता है। उसे भी दुख होता हैं।

होरी—होता होगा। तू घर जा। आराम करूँगा तो गाय कैसे आवेगी। जा... जा....मजूर के भाग में आराम नहीं होता।

[**कह कर एक ओर चला जाता है। धनिया दुखी मन से काम करते देखती है फिर चली जाती है। फिर दोपहर की घंटी बजती है। मजदूर काम छोड़कर भागते हैं। होरी लड़खड़ाता हुआ आता है और**

एक ओर लेट जाता है। फिर उठ कर पानी पीता है। फिर कै होती है। एक मजदूर उसकी ओर आता है]

मजदूर—कैसा जी है होरी भैया ?

होरी—कुछ नहीं, अच्छा हूँ।

मजदूर—खाली पेट पानी पी लिया शायद। इस लू में काम करते हो फिर कुछ खाते नहीं, पानी नुकसान कर जायगा।

[मजूर चला जाता है। दूर कुछ मजूर चना-चबैना करते हैं। इधर होरी को फिर कै होती है, वह बेचैन होता है]

होरी—नुकसान। अब जी के करना भी क्या है। बस गाय....तुम जाओ भइया....

होरी—माँ....गोबर....धनिया....धनिया....गाय आ गयी, मंगल को दूध पिला दे....माँ ...माँ....मैं तेरी गोद में सोऊँगा....माँ, देख पटेसरी ने मेरी गुल्ली छीन ली, माँ....

[कुछ क्षण चुप हो जाता है। फिर बड़बड़ाता है। मजूर काम पर जाते हैं। एक मजूर होरी के पास जाता है]

मजदूर—दोपहर ढल गयी होरी। चलो झौवा उठाओ....होरी.... (**पास जाता है, देखता है**) कैसा जी है ? अरे इसकी तो देह जल रही है। हाँथ-पाँव ठण्डे हो रहे हैं। लू लग गयी है। (**एकदम बाहर जाता है**) अरे कोई है। होरी के घर जाना। लू लग गयी है।

[होरी पहले की तरह बड़बड़ाता है]

होरी—गोबर, गोबर, रुपये हो गये। गाय आ गयी, मंगल को दूध पिला दो....धनिया तूने लाल चुंदरी पहनी है। दुलहन बनी है। धनिया.... गाय क्या कामधेनु है; देवी....

[तभी सहसा धनिया दौड़ी आती है। होरी को छूती है और पागल-सी देखती है। काँपती है]

धनिया—कैसा जी है तुम्हारा ? मैं तो पहले ही कह रही थी पर

तुमने सुना भी हो....

होरी—तुम आ गये गोवर, मैंने मंगल के लिये गाय ले ली। वह खड़ी है, देखो। कैसी मस्तानी है, कैसे झूम रही है। आज कैसा शुभ दिन है। मेरे द्वार पर कामधेनु बँधी है।

धनिया—(रोते हुए) मेरी ओर देखो, मैं हूँ, क्या मुझे नहीं पहचानते। देखो जी....

[होरी की चेतना लौटती है। धनिया को दीन आंखों से देखता है]

होरी—(**क्षीण स्वर**) कौन ?

धनिया—मैं हूँ धनिया।

होरी—धनिया। (**क्षीण स्वर**) मेरा कहा-सुना माफ करना। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गयी। अब तो यहाँ के रुपये क्रिया-करम में जायँगे। (**धनिया रोती है**) रो मत धनिया। अब कब तक जिलायेगी ? सब दुर्दसा तो हो गई। अब जाने दे।

धनिया—कैसे जाने दूँ। मैं भी तो चलूंगी। गाँठ बाँध कर लाये थे। अकेले कैसे जाओगे !

[वह आंखें बन्द करता है। तभी हीरा व गांव के दूसरे लोग आते हैं। उसे खाट पर लिटाते हैं। सारा गांव आ जाता है]

दातादीन—होरी महतो, होरी महतो....अरे इनकी तो जबान बन्द हो गयो।

झिंगुरी—आँखों से कैसे आँसू बह रहे हैं ?

मातादीन—दादा....दादा....काकी। आम का पना बनाया ?

धनिया—(**रोकर**) वह रहा पना। पैसे होते हो डाक्टर को बुलाती।

मातादीन—लाओ मुझे दो। (**पिलाता है**) काकी, दादा तो.... (**नहीं पिला पाता**)

झुनिया—(आकर) गेहूँ की भूसी यह रही अम्माँ। देह में मलो तो।

धनिया—ला....

[धनिया मलती है]

शोभा—(आकर) दादा....दादा....

पटेश्वरी—(देखकर) क्या रखा है धनिया, अब। महतो चले।

हीरा—(रोते-रोते) भाभी, दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले।

दातादीन—हाँ, गोदान करा दो। अन्त आ गया। महतो जा रहे हैं।

अनोखेलाल—यही समय है धनिया, गोदान करा दो। महतो अब नहीं बचेंगे!

[धनिया अब तक देह मल रही थी। तड़प कर उटती है। होरी को देखती है, फिर टेंट से बीस आने पैसे निकालती है। पति के ठंडे हाथ पर रखती है और दातादीन से कहती है]

धनिया—महाराज, घर में न गाय है न बछिया है न पैसा। आज जो सुतली बेची थी उसके यही बीस आने पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

[कहती-कहती वह पछाड़ खाकर गिर पड़ती है। सब लोग सिर झुका लेते हैं और सुबक उठते हैं। यहीं परदा जाता है]

* 39852
21·6·72

14-7-76

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No. 39852

Call No. ____________

Author : Premchand

Title : Hori

Borrower's name (Block letters)	Signature & date
Sh ~~Shyam~~ Shyam Lal	Shyam Lal
Mr. Manohar Lal	Manohar Lal 11/7/76
Mr. Kundan Lal	Kalshakya

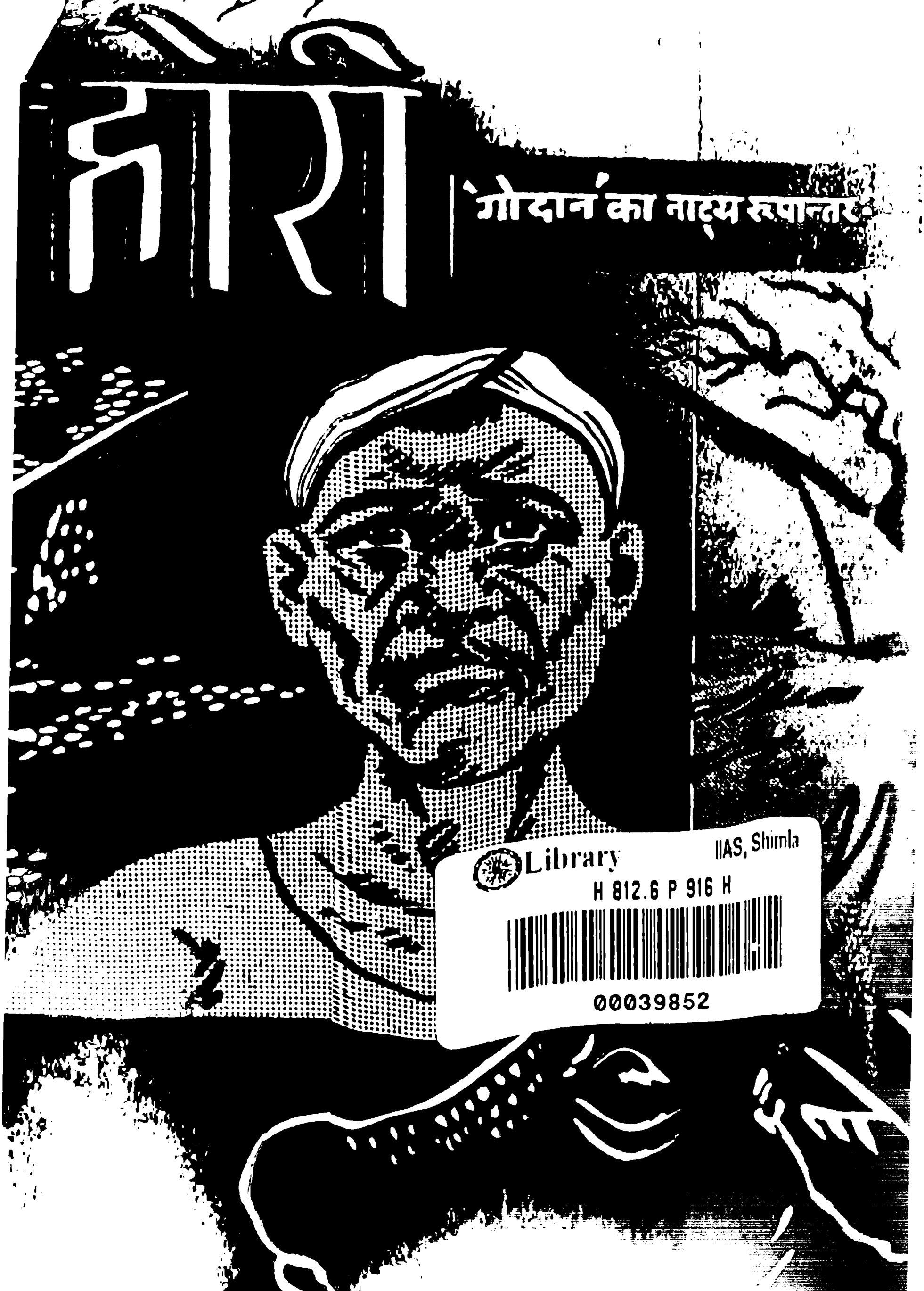

Library IIAS, Shimla
H 812.6 P 916 H
00039852